''सत्यं परं धीमहि''



# सनातन सपर्या सरणिः

## (मण्डल/मंडपाधिष्ठातृ देवता पूजन-हवन विधि)




संकलक/सम्पादक

आचार्य पं० भगवती प्रसाद शुक्ल

# सनातन सपर्या सरणिः

**संकलक / सम्पादक / प्रकाशक**
ब्रह्मकुलभूषण, सनातन धर्म गौरव, ब्राह्मण गौरव
धर्मकर्मविज्ञानाचार्य, भागवत भूषण सम्मान से अलंकृत
**आचार्य पं॰ भगवती प्रसाद शुक्ल**
मो० : 094162–67224

निवास व कार्यालय :
**माँ भगवती ज्योतिष एवं अनुष्ठान केन्द्र**
श्री शिव विहार कालोनी,
गुग्गा माड़ी के सामने, रादौर (यमुनानगर)
हरियाणा । मो० : 89308–00224

ई–मेल : bp.shukla1970@gmail.com वेब साईट : acharyapanditbpshukla.com
यूट्यूब चैनल : RADHA RAMAN TV

---

## स्मृतिशेष सद् महापुरुषों के चरणों में सादर समर्पित

- ❀ प्रातः स्मर्णीय सद्गुरू श्री बाबा कांशी गिरी जी महाराज (सुन्दरवनी, जम्मू–काश्मीर)
- ❀ प्रातः स्मर्णीय कर्मयोगी सद्गुरू श्री बाबा राजाराम जी महाराज (झलोखर, हमीरपुर)
- ❀ प्रातः स्मर्णीय अवधूत सद्गुरू श्री स्वामी वीतरागानंद जी महाराज (अजात आश्रम, हरियाणा)
- ❀ प्रातः स्मर्णीय तपोनिष्ठ श्री श्री 1008 श्री स्वामी गजानन्द तीर्थ जी महाराज (कानपुर)
- ❀ प्रातः स्मर्णीय त्यागमूर्ति श्री बाबा अजयदास उदासीन जी महाराज (रादौर, यमुनानगर)
- ❀ युगाचार्य डॉ. प्रभाकर मिश्रा जी महाराज (कीर्तिनगर, दिल्ली)
- ❀ आचार्य पं. पूर्णानन्द वेदपाठी जी महाराज (देहरा, पानीपत)
- ❀ आचार्य वैद्य पं. किशोरी लाल शर्मा जी महाराज ( रादौरी, यमुनानगर)
- ❀ आचार्य पं. गोवर्धन दास कौशिक जी महाराज (गुमथला राव, यमुनानगर)



तृतीय संस्करण (संशोधित/परिवर्धित)– 1000 प्रतियाँ (सम्वत् 2080)
श्री बासन्तीय नवरात्रि सन् 2024

**सहयोग सेवा : 201/-**

---

रूप सज्जा व मुद्रण : **हवाई प्रिंटर्ज, रादौर**
फोन : 94667–39909, ई–मेल : hawaiprinters.rdr@gmail.com

दण्डीमठ दूरभाष नं॰ 0512-2218742
शंकराचार्य मठ दूरभाष नं॰ 0512-2662466
मोबाइल नं॰ 98386-98997



e/;kEuk; vuUr Jh foHkf"kr cãkori
ihBk/kh'oj txnx: 'kdjkpk;Z Jh Jh १००८

# Lokeh euh'kkJe th egkjkt



राधावाश्रम दण्डी मठ सरोजनी नगर 922/1–ए, कबाड़ी मार्केट, कानपुर
Jh 'kdjkpk; eB] cM gueku th dk efUnj] tgh ¼foukck uxj½ dkuij ¼mÙkj in'k½

i=kd % 17/2024 fnukd% 14-02-2024

## शुभाशीर्वचांसि

मम प्रिय शिष्यः आचार्य प्रवरेण श्री भगवती प्रसाद शुक्ल महोदयेन मानव जीवनं सफली कर्तुं जनजीवनं आनन्दमयं सुख शांतिमयं च विधातुं वैदिक कर्मकाण्ड समन्वित 'सनातन सपर्या सरणिः' नामिकां रचनां निर्माय यः मांगलिकः सत्प्रयासः कृतः तदर्थं कोटिशः सहस्त्रशः वा शुभाशीर्वचांसि वितरन् परमानन्दः प्रमोदो वा मुहुर्मुहुः अनुभूयते मया विषयेऽस्मिन् नास्ति विचिकित्सावसर प्रसरः। **'सनातन सपर्या सरणिः'** (तृतीय संस्करण) संकलकः श्री शुक्लः एवं भूतं लेखन कला कौशलम् अनवरतं वर्धयतु इति मदीया हार्दिकी शुभकामना ।

अस्तु, जीवनं मंगलमयं स्यात्, चिरायुः शतायुश्च भूयात्।
इति कामयमानः अनारतं मंगलं भद्रं वा कामये ।

कल्याणं कामये नित्यं, हार्दिकी कामना शुभा ।
जीवने सुखशांतिः स्यात्, पन्थानः सन्तु वै शिवाः ।।

नारायणस्मृतिः।

**जगद्गुरू शंकराचार्य स्वामी मुनीशाश्रम जी महाराज**
श्री शंकराचार्य मठ, कानपुर (उत्तर प्रदेश)

# प्रस्तावना



मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि आचार्य पं. भगवती प्रसाद शुक्ल जी द्वारा "सनातन सपर्या सरणि" के तृतीय संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है।

श्री शुक्ल विद्यार्थी जीवन से ही आस्थावान, जिज्ञासु, परिश्रमी व आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति समर्पित रहे हैं और वर्तमान समय में मन, वचन व कर्म से समाज सेवा करते हुए कई धार्मिक व साहित्यिक मंचों का सफल संचालन कर रहे हैं। अपने उच्च विचारों के कारण विद्वन्मण्डली में उन्हें गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है।

वैदिक कर्मकाण्डों से सम्बन्धित पुस्तकों की एक लम्बी श्रृंखला होने पर भी विद्वत्समाज को एक ऐसी पूजा पद्धति की आवश्यकता थी जिसमें सरलतम रुप से सम्पूर्ण यागादिक कर्म की विधि व पूजाक्रम का समावेश हो जिसके माध्यम से किसी भी देवी या देवता को मानने वाला भक्त अपनी सफल आराधना कर सके। "सनातन सपर्या सरणिः" इस को उद्देश्य पूरा करने में सफल हो रही है। भगवत्चर्चा, कथा, ज्ञान व यागादिक कार्यों के प्रचार–प्रसार व तत्सम्बन्धित पुस्तकों का प्रकाशन कर आचार्य प्रवर श्री शुक्ल जी मानव समाज में नई आध्यात्मिक चेतना जगाने का प्रशंसनीय प्रयास कर रहे हैं इसके लिए उन्हें अनेकशः साधुवाद व शुभकामना।

मेरे प्रिय शिष्य पं० भगवती प्रसाद शुक्ल का "सनातन सपर्या सरणिः" का यह नया संस्करण समाज में नई धार्मिक ऊर्जा का प्रसार करेगा। इसी शुभाशंसा के साथ उनके चिरायु व शतायु की कामना करता हूँ।

शुभाकांक्षी
**डॉ नवीन चन्द्र शास्त्री,** साहित्याचार्य,
एम०ए०(हिन्दी), संस्कृत (पी.एच.डी.)
पूर्व आचार्य संस्कृत महाविद्यालय, झलोखर (हमीरपुर) उ० प्र०
वर्तमान निवास : हल्द्वानी, उत्तराखंड ।

# विषयानुक्रमणिका



## साभार

श्री सनातन सपर्या सरणिः के पुनर्मुद्रण कार्य में सभी गुरुजनों, सहयोगियों, प्रेमियों का मैं हृदय से आभारी हूँ। भविष्य में ऐसे पुण्य कार्य के लिए सहयोग की आशा करते हुए भगवान श्री राधारमण जी से सभी के लिए मंगल कामना करता हूँ एवं विद्वत्जनों से प्रार्थना है कि दृष्टि दोष वश मुद्रण कार्य में अशुद्धि के लिए क्षमा एवं भविष्य में अगले संस्करण के लिए सलाह भी दें।

**आचार्य पं. भगवती प्रसाद शुक्ल**
रामकथा एवं भागवत प्रवक्ता

---

# ।। अथ मण्डल देव पूजा पद्धति।।

शुभमुहूर्ते शुभदिने शुभलग्ने शुभग्रहानुकूलसमये च यजमानः शुभासने प्रांग्मुख उपविश्य स्वदक्षिणतः पत्नीं च उपवेश्य पूजनं अर्चनं कुर्यात्।

ॐ गं गणपतये नमः

## मंगल मंत्र

ॐ भद्द्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्द्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैः रंगैस्तुष्ट्टुवा ग्वं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।

ॐ हिरण्य गर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम्।।

ॐ पितरं संत शरणं, जयंतीं मातरं तथा। सर्व मंगलदं नित्यं, श्री गणेशं नमाम्यहम्।।

ॐ कृष्णाय वासुदेवाय, हरये परमात्मने। प्रणत क्लेश नाशाय, गोविन्दाय नमो नमः।।

ॐ मंगलं भगवान विष्णुः, मंगलं गरुणध्वजः। मंगलं पुण्डरीकाक्ष, मंगलाय तनोहरिः।।

## पूजाकर्मपात्र स्थापनम्

### भूमि स्पर्शः

ॐ भूरसि भूमिरस्य दितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री।
पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ग्वं ह पृथिवीं मा हि ग्वं सीः।।

### अक्षत प्रक्षेपः

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वो दानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु
प्रसिति मायुषे धां देवो वः सविता हिरण्य पाणिः प्रतिगृभ्णात्व छिद्रेण
पाणिना चक्षुसे त्वा महीनां पयोऽसि।।

### जलपात्र स्थापनम्

ॐ आजिग्घ्र कलशं मह्या त्वा विशन् त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः
सहस्त्रं धुक्क्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद् द्रयिः।।

## गंगाजल प्रक्षेपः

ॐ वरुणस्योतम् भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्त्थो वरुणस्य ॠत
सदन्यसि वरुणस्य ॠत सदन्मसि वरुणस्य ॠत सदन्मासीद।।

## चंदन प्रक्षेपः

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां वृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्षमादमुच्यत।।

## प्रार्थनाम्

ॐ गंगे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति।नर्मदे सिन्धु काबेरि, जलेऽस्मिन्
सन्निधिं कुरु।।अस्मिन् कलशे सर्वान् तीर्थान् आवाहयामि नमस्करोमि।।

## पवित्री करणम्

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्ववस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स
बाह्य आभ्यन्तरः शुचिः।। ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः पुनातु–3 ।।

## आचमनम्

ॐ केशवाय नमः पुनातु। माधवाय नमः पुनातु। नारायणाय नमः
पुनातु। हस्तौ प्रक्षाल्य– गोविन्दाय नमो नमः पुनातु।।

## आसन शुद्धि करणम्

ॐ पृथिवी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

## प्राणायाम

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ।।

## सामग्री प्रोक्षणम्

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जात वेदः पुनीहि मा।।

## पवित्री धारणम्

ॐ पवित्रेस्त्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य
रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।।

## ग्रन्थि बंधनम्

ॐ मंगलं भगवान विष्णुः, मंगलं गरुणध्वजः। मंगलं पुण्डरीकाक्ष, मंगलाय तनोहरिः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः अंचल ग्रन्थे प्रतिष्ठो भव ।

## शिखा बंधनम्

ॐ मानस्तोके तनयेमान आयुषिमानो गोषुमानो अश्वेषुरीरिषः। मानोवीरान् रुद्र भामिनो वधीर्ह विष्मन्तः सद्मित्त्वाहवामहे।।
ॐ ब्रम्हवाक्य सहस्त्रेण, शिववाक्य शतेन च। विष्णोर्नाम सहस्त्रेण, शिखाग्रन्थिं करोम्यहम्।।

## तिलक करणम्

ॐ आदित्या वसवो रुद्राः, विश्वेदेवाः मरुद्गणाः। तिलकं ते प्रयच्छन्तु, धर्म कामार्थ सिद्धये।।

## करन्यासः

ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ नमो तर्जनीभ्यां नमः। ॐ भगवते मध्यमाभ्यां नमः।
ॐ वासुदेवाय अनामिकाभ्यां नमः। ॐ नमो भगवते कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।।

## अंगन्यासः

ॐ हृदयाय नमः। ॐ नमो शिरसे स्वाहा। ॐ भगवते शिखायै वषट्।
ॐ वासुदेवाय कवचाय हुम्। ॐ नमो भगवते नेत्रत्रयाय बौषट्।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय अस्त्राय फट्।।

## दिग्रक्षणम्

ॐ रक्षसां भागोऽसि निरस्त ग्वं रक्ष इदमह ग्वं रक्षोऽभि तिष्ठामि इदमह ग्वं रक्षोऽवबाध इदमह ग्वं रक्षोऽधमं तमो नयामि। घृतेन द्यावा पृथिवी प्रोर्णु वाथां वायो वेस्तोकानामग्नि राजस्य वेतु स्वाहा स्वाहाकृते ऊर्ध्वनभसं मारुतं गच्छतम्।।
ॐ यदत्र संस्थितं भूतं, स्थानमाश्रित्य सर्वदा। स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं, यत्रस्थं तत्र गच्छतु।।
ॐ भूतानि राक्षसा वाऽपि, येऽत्र तिष्ठन्ति केचन। ते सर्वेऽप्यप गच्छन्तु, ....यागं करोम्यहम्।।
ॐ अपः सर्पन्तु ते भूता, ये भूता भूमि संस्थिताः। ये भूता विघ्नकर्तारः, ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
ॐ अपक्रामन्तु भूतानि, पिशाचाः सर्वतो दिशम्। सर्वेषामविरोधेन, पूजाकर्म समारभे।।

ॐ पूर्वे रक्षतु गोविन्द, अग्नेयां गरुणध्वजः। याम्ये रक्षतु बाराहो, नारसिंहस्तु नैॠते।।
पश्चिमे वारुणी रक्षेत्, वायव्यां मधुसूदनः। उत्तरे श्रीधरो रक्षेत्, ईशाने च गदाधरः।।
ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेत्, अधस्तात् त्रिविक्रमः।एवं दश दिशो रक्षेत्, वासुदेव जनार्दनः।।

# श्री वटुक भैरव पूजनम्

## ध्यानम्

ॐ करकलित कपालः कुंडली दण्डपाणिः, तरुण तिमिर नील ब्याल यज्ञोपवीतिः।
क्रतु समय सपर्या विघ्न विच्छेद हेतुः जयति बटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम्।।
तीक्ष्ण दंष्ट महाकाय, कल्पान्त दहनोपमम्। भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातु मर्हसि।।
ध्यानं समर्पयामि।। श्री बटुक भैरवाय नमः।।

## पूजनम्

पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, सर्वांगे स्नानीयं जलं समर्पयामि, पंचामृत स्नानं, शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि, यज्ञोपवीतं, वस्त्रं, उपवस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं, सुगन्धि द्रव्यं समर्पयामि, चंदनं, कुंकुमं, हरिद्रां, सिंदूरं समर्पयामि, अक्षतान्, पुष्पाणि, दुर्वाकुरान्, बिल्वपत्राणि समर्पयामि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं निवेदयामि, मध्ये पानीयं, आचमनीयं जलं– प्राणाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उत्तरापोशनं, करोद्वर्तनार्थे चंदनं समर्पयामि, ॠतुफलं, सताम्बूल पूगीफलं, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि, नमस्करोमि।

## प्रार्थनाम्

ॐ रक्ताम्बरं ज्वलन पिंग जटाकलापं, ज्वालावली कुटिल चन्द्रधरं त्रिनेत्रं।
बालार्क धूम फल कांचन तुल्य वर्णं, देवी सुतं वटुकनाथमहं नमामि।।
ॐ नमो भगवते वटुकभैरवाय देवीपुत्राय सर्व दुष्टजन मुख स्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा।।

# स्वस्ति वाचनम्

हरिः ॐ आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो दब्धासो अपरीतासऽउद्भिदः। देवानो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे।। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवाना ग्वं रातिरभिनो निवर्तताम्। देवाना ग्वं सक्ख्यमुपसेदिमाव्वयन्देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे।। तान्पूर्वयानि विदाहूमहे वयं भगमित्र मदितिन् दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुण ग्वं सोममश्विना सरस्वतीनः सुभगामयस्करत्।। तन्नो वातो मयो भुवा तु भेष जन्तन्माता पृथिवी तत्पिताद्यौः।। तद् द्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना श्रृणु तन्धिष्ण्या युवम्।। तमीशानं जगतस् तस्त्थुषस् पतिन् धियन् जिन्व मवसेहू महेव्वयम्। पूषानो यथा वेद साम सद्वृधे रक्षितापायुरदब्द्धः स्वस्तये।। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्द् दधातु।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंज्यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निर्जिह्वा मनवः सूर चक्षसो विश्वेनोदेवा अवसागमन्निह।। भद्द्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्द्रं पश्येमाक्षभिर्य जत्राः। स्थिरै रंगैस्तुष्ट्टुवा ग्वं सस्तनू भिर्व्य शेमहि देवहितं यदायुः।। शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मद्ध्या रीरिषता युर्गन्तोः।। अदितिर्द्यौ रदितिरन्तरिक्ष मदितिर्माता सपिता सपुत्रः। विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिर्जात मदितिर्जनित्वम्।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ग्वं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रम्हशान्तिः सर्व ग्वं शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामा शान्तिरेधि।। यतोयतः समीहसे ततोनो अभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्यो भयन्नः पशुभ्यः।। विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्द्रं तन्न आसुव।। सुशान्तिर्भवतु।।

(2)

ॐ स्वस्तिनः इन्द्रो वृद्धश्श्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः स्वस्तिनस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु। पयः पृथिव्याम् पयः ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः पयस्वती प्रदिशः सन्तुमह्यम्। विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो व्विष्णोः स्यूरसि विष्णोद् धुव्वोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्त्वा। अग्निर्देवता वातोदेवता सूर्यो देवता चन्द्रमा देवता वसवो देवता रुद्रा देवता दित्या देवता मरुतो देवता विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरुणो देवता। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ग्वं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ग्वं शान्तिः शान्तिरेव शान्ति

सामाशान्तिरेधि। विश्वानिदेव सवितर्दुरितानिपरासुव यद्भद्रन् तन्न आसुव। इमारुद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः यथा शमस दिपदे चतुष्पदे विश्वम् पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्।एतन्ते देवसवितर्यज्ञम् प्राहुर्वृहस्पतये ब्रह्मणे तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिन् तेन मामव।मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञ ग्वं समिमन्दधातु, विश्वेदेवास इहमादयन्तामों 3 प्रतिष्ठ। एष वै प्रतिष्ठानाम यज्ञो यज्ञे तेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितम् भवति।।सुशान्तिर्भवतु।।

ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः।ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः।
ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः।ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः।
ॐ वास्तुमंडलदेवताभ्यो नमः।ॐ क्षेत्रदेवताभ्यो नमः।ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः।
ॐ कुलदेवताभ्यो नमः।ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः।ॐ मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः।
ॐ गुरूदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः।ॐ सर्वेभ्यो देवताभ्यो नमः।
ॐ सर्वेभ्यो पितृभ्यो नमः।ॐ सर्वेभ्यो ब्राम्हणेभ्यो नमः।
ॐ एतत्कर्म प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री ......नमः।।

**ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।**
**धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो, भालचंद्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि, यः पठेत्छृणुयादपि।।**
**विद्यारम्भे विवाहे च, प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चैव, विघ्नस्तस्य न जायते।।**
**शुक्लाम्बरधरं देवं, शशिवर्ण चतुर्भुजम्। प्रसन्न वदनं ध्यायेत्, सर्व विघ्नोपशान्तये।।**
**अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थ, पूजितो यः सुरासुरैः। सर्व विघ्नहरस्तस्मै, गणाधिपतये नमः।।**
**सर्व मंगल मांगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि, नारायणि नमोस्तुते।।**
**सर्वदा सर्व कार्येषु, नास्ति तेषां मंगलम्। येषां हृदिस्थो भगवान, मंगलाय तनो हरिः।।**
**तदेव लग्नं सुदिनं तदेव, ताराबलं चंद्रबलं तदेव। विद्याबलं दैवबलं तदेव, लक्ष्मीपते तेंघ्रि युगं स्मरामि।।**
**लाभस्तेषां जयस्तेषां, कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दी वरश्यामो, हृदयस्थो जनार्दनः।।**
**यत्र योगेश्वरः कृष्णो, यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।**
**अनन्याश्चिन्तयन्तो मां, ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां,योगक्षेमं वहाम्यहम्।।**
**स्मृते सकल कल्याणं, भाजनं यत्र जायते। पुरुषं तमजं नित्यं, व्रजामि शरणं हरिम्।।**
**सर्वेष्वारम्भ कार्येषु, त्र्यस्त्रि भुवनेश्वराः। देवादिशन्तु नः सिद्धिं, ब्रम्हेशान जनार्दनः।।**
**विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं, दण्डपाणिं च भैरवम्। वंदे काशीं गुहां गंगां, भवानी मणिकर्णिकाम्।।**
**वक्रतुण्ड महाकाय, कोटि सूर्य समप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव, सर्व कार्येषु सर्वदा।।**
**ॐ श्री मन्महागणाधिपतये नमः।।**

# संकल्पः (जलाक्षत द्रव्यं चादाय)

हरिः ॐ तत्सत् ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्री मद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रम्हणोन्हि द्वितीय परार्धे विष्णुपदे श्री श्वेतवाराह कल्पे वैवश्वत मन्वन्तरे अष्टाबिंशतितमे युगे कलियुगे कलि प्रथमचरणे कुमारिका क्षेत्रे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रम्हावर्तैक देशे श्री गंगायमुनयोः......दिग्विभागे कुरूक्षेत्राद्....दिग्विभागेपुण्य क्षेत्रे......प्रान्ते......मंडले......जनपदे......नगरे......स्थाने देव ब्राम्हणानां संन्निधौ श्रीमन्नृपति वीर विक्रमादित्य समयतो श्री विष्णो बौद्धावतारे अस्मिन् प्रभवादि षष्टि सम्वत्सराणां मध्ये.....सम्वत्सरे.....श्री सूर्य.....अयने..... ऋतौ......मासानां मासोत्तमे मासे......मासे.......पक्षे......तिथौ.......वासरे.......नक्षत्रे.......योगे......करणे एवं पंचांग शुद्धे.....राशि स्थिते सूर्ये.....राशि स्थिते चंद्रे......राशि स्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा राशि स्थान स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह गुणगण विशेषण विशिष्टानां जन्मान्तर पुण्य फलोदय स्वरूपेण प्राप्ते पुण्य अवसरे....गोत्रोत्पन्नः....नामोऽहं सपत्नीकोऽहं सपुत्रोऽहं सपरिवारोऽहं सबांधवोऽहं मम आत्मनोऽशेष पाप क्षयार्थ स्वकीय जन्मलग्नतो वा दुस्स्थानगत ग्रहजन्य सकलारिष्ट निवृत्यर्थ उत्पन्न उत्पत्स्यमान अखिलारिष्ट निवृत्यये सकलशास्त्र श्रुति स्मृति पुराणोक्त शुभ फल प्राप्त्यर्थ उत्तम आयुः आरोग्य ऐश्वर्य दीर्घायुः बिपुल धनधान्य स्थिरलक्ष्मी पुत्रपौत्रादि अनवच्छिन्न सत्संगति लाभार्थ अस्थिरलक्ष्मीं चिरकालपर्यन्तं संरक्षणार्थ सर्वशत्रुपराजय बहुकीर्त्यादि अनेकानेक अभ्युदय फल प्राप्त्यर्थ अद्य अभिवृद्धि पूर्वकं मम इह जन्मनि जन्मांतरे वा कृत सकल कायिक वाचिक मानसिक सांसर्गिक सकल तापोपशमनार्थं राजभय चौरभय सर्पभय अग्निभय रोगभय यानपातनादिभय अभिचारभय दुस्संगजन्यभय आकस्मिकभय तथा नानागतभय निवारणार्थं समस्त पाप क्षयार्थं नवग्रहजन्यपीड़ा शान्त्यर्थं चतुर्विध पातक दुरितक्षयार्थ धर्म अर्थ काम मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थ प्राप्त्यर्थं दैहिक दैविक भौतिक त्रिविध तापोपशमनार्थं उपस्थितानां सर्वेषां जनानां परम कल्याण कामः ब्राम्हण द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं पितृतो मातृतश्च दश पूर्वान् दश अपरान् पुरुषानां आत्मानं चोद्धर्तुं परत्रान्त कल्प

विष्णुलोक वासोत्तरं...यज्ञ अनुष्ठान या अस्यां मूर्तौ लिंगे वा देवकला सान्निध्यार्थ यथा विभव देशकालाद्यनुसारतो..........मूर्ते या लिंगस्य प्राणप्रतिष्ठा करणार्थं तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्धयर्थं श्री गणेशाम्बिकयोः एवं षड्विनायक आवाहनं पूजनं वरुण आवाहनं पूजनं स्वस्ति पुण्याह वाचनम् षोडसमातृका, वसोद्धारा सप्तघृत मातृका आवाहनं पूजनं नान्दीमुख श्राद्धं आचार्यादि ब्राम्हण वरणं एवं यज्ञ मंडप अधिष्ठातृ देवता, चतुश्षष्टियोगिनी, क्षेत्रपाल, वास्तुदेवता सहित नवग्रह मंडल देवता, सर्वतोभद्र या चतुर्लिग्गतोभद्र, प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री...........आवाहनं पूजनं अहं करिष्ये।।

**ॐ यज्जाग्ग्रतो दूरमुदैति दैवन्तदु सुप्तस्य तथैवैति।**
**दूरंगमन् ज्जयोतिषां ज्योतिरेकन् तन्नमे मनः शिव संकल्प्यमस्तु।।**

## शंख-घण्टा पूजनम्

ॐ अपां राशेः पुत्रं कुमुदसम गौरं शशि निभम्, सुराणां शत्रूणां मनसि सततं स्थापित भयम्।
स्थितं हस्ते विष्णोः विपुलतम नादं सुखकरं, सदा वन्दे शंखं जगति विजयार्थं शुभ निधिम्।।
शंखं चन्द्रार्क दैवत्यं, मध्ये वरुण दैवतम्।पृष्ठे प्रजापतिं विद्याद् अग्रे गंगा सरस्वती।।
त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि, वासुदेवस्य चाज्ञया।शंखे तिष्ठन्ति बिप्रेन्द्र, तस्मात् शंखं प्रपूजयेत्।।
ॐ आदौ चन्द्रदेवतायै नमः, ॐ कुक्षौ वरुण देवतायै नमः, ॐ पृष्ठे प्रजापतये नमः,
ॐ अग्रे गंगा सरस्वतीभ्यां नमः, शंखे सर्व तीर्थेभ्यो नमः। गन्धादिभिः सम्पूज्य प्रार्थयेत्।
ॐ पांचजन्याय विद्महे, जल बिम्बाय धीमहि, तन्नो शंखः प्रचोदयात्।। ॐ आगमार्थन्तु देवानां, गमनार्थन्तु राक्षसाम्।कुरु घंटे वरं नादं, देवतस्थान सन्निधौ।।ॐ शंखस्थ देवाय नमः। ॐ घण्टास्थ गरुणाय नमः। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।।

## पृथिवी पूजनम्

ॐ स्योना पृथिवीनो भवानृक्षरा निवेशनी।यच्छानः शर्म शप्प्रथा।।

ॐ महीद्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञमिमिक्षताम्।पिपृतान्नो भरीमभिः।।

ॐ आधार शक्त्यै नमः।सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।।

# अखण्ड दीपक पूजनम्

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा, सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा, अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा, सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा, ज्योतिः सूर्यः सूर्योज्योतिः स्वाहा।।

ॐ भो दीप देव रूपस्त्वं, कर्मसाक्षी अविघ्नकृत्। यावत् कर्म समाप्तिः स्यात्, तावत् त्वम् सुस्थिरो भव।।ॐ कर्मसाक्षी भगवान श्री दीपस्थ देवाय नमः।

सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।।

# सूर्याघ्र्यः

ॐ एहि सूर्य सहस्त्रांशो, तेजो राशे जगत्पते। अनुकम्पय मां भक्त्या, गृहाणार्घ दिवाकर।।

नमस्ते विश्वरूपाय, नमस्ते ब्रम्ह रूपिणे। सहस्त्र रश्मये नित्यं, नमस्ते सर्व तेजसे।।

नमस्ते सर्व लोकेषु, सुप्तांस्तान् प्रतिबुध्यसे। सुकृतं दुष्कृतं चैव, सर्व पश्यसि सर्वदा।।

कर्मसाक्षी भगवान भास्कराय नमः। अर्घ्य समर्पयामि।।

## प्रार्थनाम्

ॐ आदित्यस्य नमस्कारं, ये कुर्वन्ति दिने–दिने। जन्मांतर सहस्त्रेषु, दारिद्रयं नोपजायते।।

सत्यदेव नमस्तेऽस्तु, प्रसीद मम भास्कर।दिवाकर नमस्तेऽस्तु, प्रभाकर नमोऽस्तु ते।।

प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।।भगवान श्री सूर्य नारायणाय नमः।।

# श्री गणेशाम्बिका पूजनम्

## श्री गणपति ध्यानम्

ॐ श्वेतांगं श्वेतवस्त्रं सितकुसुम गणैः पूजितं श्वेत गन्धैः,
क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुरतरु विमले रत्न सिंहासनस्थम्।
दोर्भिः पाशां कुशेष्टा भयधृति विशदं चन्द्रमौलिं त्रिनेत्रं,
ध्यायेद् शान्त्यर्थमीशं गणपतिममलं श्री समेतं प्रसन्नम्।।

ॐ दधानं भृंगालीमनिश ममले गंडयुगले, ददानं सर्वार्थान् निज चरण सेवा सुकृतिने।
दयाधारं सारं निखिलनिगमानामनुदिनम्, गजास्यं स्मेरास्यं तमिहकलये चित्तनिलये।।

ॐ एकदंतं शूर्पकर्णं, गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।पाशाकुंशधरं देवं, ध्यायेत् सिद्धि विनायकम्।।

ॐ आवाहयामि पूजार्थं, रक्षार्थं च ममक्रतो। इह आगत्य गृहाण त्वम्, पूजां यागं च रक्ष मे।।

ॐ गणानां त्वा गणपति ग्वं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ग्वं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ग्वं हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।।

## श्री गौरी ध्यानम्

ॐ मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जलकला, ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिक लता। स्फुरत्कांचीशाटी पृथुकटितटे हाटकमयी, भजामस्त्वां गौरीं नगपति किशोरीमविरतम्।।

ॐ हेमाद्रि तनयां देवीं, वरदां शंकरप्रियाम्। लम्बोदरस्य जननीं, गौरीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। ध्यानं, आवाहनं समर्पयामि।

## प्राण प्रतिष्ठाम्

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ग्वं समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो 3 प्रतिष्ठ।।

ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु, अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै, मामहेति च कश्चन।।

ॐ श्री गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।।

## आसनम्

ॐ पुरुष एवेद ग्वं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनाति रोहति।।

ॐ गृहं त्वदीयं सकलं त्वदीयं, अहं त्वदीयस्तव चासनं वै।
स्वीकृत्य देवा अनुगृहाण दासं, त्वदर्थमेवाद्य सुसज्जितं यत्।।
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। आसनं आसनार्थे दूर्वाकुरान् समर्पयामि।
पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयम् जलम् समर्पयामि। श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।

## पंचामृत स्नानम्

ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पंचधासो देशे भवत्सरित्।।
पयो दधि घृतं चैव, मधु शर्करया युतं। पंचामृतं मयानीतं, स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। मिलित पंचामृत स्नानम् समर्पयामि।

## शुद्धोदक स्नानम्

ॐ शुद्धवालः सर्व शुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।

ॐ मंदाकिन्यास्तु यद् वारि, सर्व पाप हरं शुभम्।तदिदं कल्पितं देवाः,स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।।

## यज्ञोपवीतम्

ॐ ब्रम्ह जज्ञानम् प्रथमम् पुरस्तात् दिसीमतः सुरुचो वेन आवः। सबुध्न्या उपमा अस्यविष्टाः सतश्च योनिम सतश्चविवः।।

ॐ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं, त्रिगुणं देवतामयम्।उपवीतं मया दत्तं, गृहाण परमेश्वरः।।
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।यज्ञोपवीतम् समर्पयामि।।

## वस्त्रम्-उपवस्त्रम्

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः। तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

ॐ शीत वातोष्ण सन्त्राणं, लज्जाया रक्षणं परम्।देहालंकरणं वस्त्रं अतः शांतिं प्रयच्छ मे।।

ॐ श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।वस्त्रं–उपवस्त्रार्थे रक्तसूत्रं समर्पयामि।।

## आचमनीयम् जलम्

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।शंयोरभिस्त्र वन्तुनः।।
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।यज्ञोपवीतांते, वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

## सुगन्धित द्रव्यम्

ॐ अहिरिवभोगैः पर्येति बाहुंज्याया हेतिम्परिबाधमानः। हस्तग्घ्नो विश्वा वयुना निविदान् पुमान्पुमा ग्वं सम्परिपातु विश्वतः।। श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। सुगन्धित द्रव्यं समर्पयामि।

## चंदनम्-कुंकुमम्-हरिद्राम्-सिन्दूरम्

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनस्त्वाम् इन्द्रस्त्वाम् बृहस्पतिः।त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान यक्ष्माद मुच्यत।।

ॐ श्री खण्डं चंदनं दिव्यं, गंधाढ्यं सुमनोहरम्।विलेपनं सुरश्रेष्ठ, चंदनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षाम्, नित्यपुष्टां करीषिणीम्।ईश्वरीं सर्व भूतानां, तामिहो पह्वये श्रियम्।।

ॐ हरिद्रां निर्मितं देव, सौभाग्यं सुखसम्पदाम्।अतस्त्वां पूजयिष्यामि, गृहाण परमेश्वर।।

ॐ सिंदूरं शोभनं दिव्यं, सौभाग्यं प्रियवर्धनम्।सुखदं मोक्षदं चैव, सिंदूरं प्रतिगृह्यताम्।।
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।चंदनं–कुंकुमं–हरिद्रां–सिन्दूरं समर्पयामि।।

## अक्षतान्

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत।अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्न विन्द्र ते हरी।।

ॐ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ, कुंकुमाक्ता सुशोभिताः।मया निवेदिता भक्त्या, गृहाण परमेश्वरः।।
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।अक्षतान् समर्पयामि।।

## पुष्पम्–पुष्पमालाम्

ॐ ओषधीः प्रतिमो दद्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।अश्वा इव सजित्वरीः वीरूधः पारयिष्णवः।।
ॐ माल्यादीनि सुगन्धीनि, मालत्यादीनि वै प्रभो।मया हृतानि पुष्पाणि, पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।पुष्पं–पुष्पमालां समर्पयामि।।

## श्री षड् विनायक पूजनम् (अक्षत द्वारा)

ॐ मोदाय नमः।ॐ प्रमोदाय नमः।ॐ सुमुखाय नमः।ॐ दुर्मुखाय नमः।
ॐ अविघ्नाय नमः।ॐ विघ्नहर्त्रे नमः।

## अंग पूजनम्

ॐ ह्लीं गणेश्वराय नमः, पादौ पूजयामि। ॐ ह्लीं विघ्नराजाय नमः, जानुनीं पूजयामि।
ॐ ह्लीं आखुवाहनाय नमः, उरुं पूजयामि। ॐ ह्लीं हेरम्बाय नमः, कटिं पूजयामि।
ॐ ह्लीं कामारिसूनवे नमः, नाभिं पूजयामि। ॐ ह्लीं लम्बोदराय नमः, उदरं पूजयामि।
ॐ ह्लीं गौरी सुताय नमः, स्तनौ पूजयामि। ॐ ह्लीं गणनायकाय नमः, हृदयं पूजयामि।
ॐ ह्लीं स्थूलकंठाय नमः, कंठं पूजयामि। ॐ ह्लीं स्कंदाग्रजाय नमः, स्कंधौ पूजयामि।
ॐ ह्लीं पाशहस्ताय नमः, हस्तौ पूजयामि। ॐ ह्लीं गजवक्त्राय नमः, वक्त्रं पूजयामि।
ॐ ह्लीं विघ्नहर्त्रे नमः, ललाटं पूजयामि। ॐ ह्लीं सर्वेश्वराय नमः, शिरः पूजयामि।
ॐ ह्लीं गणाधिपाय नमः, सर्वांगं पूजयामि।

## आवरण पूजनम्

ॐ ह्लीं सुमुखाय नमः। ॐ ह्लीं एकदंताय नमः। ॐ ह्लीं कपिलाय नमः। ॐ ह्लीं गजकर्णाय नमः। ॐ ह्लीं लम्बोदराय नमः। ॐ ह्लीं विकटाय नमः। ॐ ह्लीं विघ्ननाशकाय नमः।

ॐ ह्रीं विनायकाय नमः। ॐ ह्रीं धूम्रकेतवे नमः। ॐ ह्रीं गणाध्यक्षाय नमः। ॐ ह्रीं भालचंद्राय नमः। ॐ ह्रीं गजाननाय नमः। ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि, शरणागत वत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं, समस्तावरणार्चनम्।। ॐ अनेन षड् विनायक सहित गणपत्यंगावरण देवता पूजनेन सिद्धि बुद्धि सहित महागणपति प्रीयंताम्।।

## दूर्वांकुरान्

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषष्परि।एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।
ॐ दूर्वांकुरान् सुहरितान्, अमृतान् मंगल प्रदान्।आनीतांस्तव पूजार्थ, गृहाण गणनायक।।
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।दूर्वांकुरान् समर्पयामि।।

## बिल्वपत्राणि

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चा हनन्याय च।। श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।बिल्वपत्राणि समर्पयामि।।

## धूपम्

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं योऽस्म्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं वयं धूर्व्वामः।
देवानामसि वह्नितम ग्वं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।।
ॐ वनस्पति रसोद्भूतो, गंधाढ्यो गंध उत्तमः। आघ्रेयः सर्व देवानां, धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। धूपं आघ्रापयामि।

## दीपम्

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा, सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा, अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा, सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा, ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।
ॐ साज्यं च वर्ति संयुक्तं, वह्निना योजितं मया।दीपं गृहाण देवेश, त्रैलोक्य तिमिरापहम्।।
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।दीपम् प्रदर्शयामि।।हस्तौ प्रच्क्षाल्य।।

## नैवेद्यम्

ॐ अन्नपते अन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।प्रप्र दातारं तारिष ऊर्जम् नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।
ॐ शर्करा खण्ड खाद्यानि, दधि क्षीर घृतानि च। आहारं भक्ष्य भोज्यं च, नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। नैवेद्यम् निवेदयामि।।

## आचमनीयम्

ॐ प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा।
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।आचमनीयम्, उत्तरापोशनम् समर्पयामि।

## करोद्वर्तनार्थे चन्दनम्

ॐ अ ग्वं शुना ते अ ग्वं शुः पृच्यतां परुषा परुः। गंधस्ते सोम मवतु मदाय रसो अच्युतः।।
ॐ चंदनं मलयोद्भूतं, कस्तूर्यादि समन्वितम्। करोद्वर्तनकं देव, गृहाण परमेश्वर।।
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। करोद्वर्तनार्थे चन्दनम् समर्पयामि।।

## ऋतुफलम्

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व ग्वं हसः।।
ॐ इदं फलं मया देव, स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। ऋतुफलम् समर्पयामि।।

## सताम्बूल-पूगीफलम्

ॐ पातन्नो अश्विना दिवा पाहि नक्त ग्वं सरस्वती। दैव्या होतारा भिषजा पातमिन्द्र ग्वं सचासुते।।
ॐ पूगीफलं महदिव्यं, नागवल्ली दलैर्युतम्। एलादि चूर्ण संयुक्तं, ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। सताम्बूल-पूगीफलम् समर्पयामि।।

## द्रव्य दक्षिणाम्

ॐ हिरण्य गर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम्।।
ॐ हिरण्यगर्भ गर्भस्थं, हेमबीजं विभावसोः। अनंत पुण्य फलदं अतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि।।

## कर्पूर नीराजनम्

ॐ इद ग्वं हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर ग्वं सर्व गण ग्वं स्वस्तये। आत्क्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त।।
ॐ कदली गर्भ सम्भूतं, कर्पूरं च प्रदीपितं। आरार्तिकमहं कुर्वे, पश्य मे वरदो भव।।
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। कर्पूर नीराजनं समर्पयामि।।

## विशेष अर्घ्यः

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष, रक्ष त्रैलोक्य रक्षक। भक्तानां अभयं कर्ता, त्राता भव भवार्णवात्।।
द्वैमातुर कृपा सिन्धो, षाण्मातुराग्रज प्रभो। वरदस्त्वं वरं देहि, वांछितं वांछितार्थद।।
अनेन सफलार्घ्येण, फलदोस्तु सदा मम।।
श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। विशेषार्घ्यम् समर्पयामि।।

# प्रार्थनाम्

ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुति यज्ञ विभूषिताय, गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।
भक्तार्ति नाशनपराय गणेश्वराय, सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय, भक्त प्रसन्न वरदाय नमो नमस्ते।।
नमस्ते ब्रम्हरूपाय, विष्णुरूपाय ते नमः।नमस्ते रुद्ररूपाय, करिरूपाय ते नमः।।
विश्वरूप स्वरूपाय, नमस्ते ब्रम्हचारिणे।भक्तप्रियाय देवाय, नमस्तुभ्यं विनायक।।
लम्बोदर नमस्तुभ्यं, सततं मोदकप्रिय।निर्विघ्नं कुरु मे देव, सर्व कार्येषु सर्वदा।।
ॐ देवि प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद, प्रसीद मातर्जगतोखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं, त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।
रूपं देहि जयं देहि, सौभाग्यं देहि देवि मे।पुत्रान् देहि धनं देहि, सर्वान् कामाश्च देहि मे।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः।प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।।
**अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेतां न मम।** इति भूमौ जलं क्षिपेत्।।
श्री विघ्नराज प्रसादात् कर्तव्य........यज्ञ कर्म निर्विघ्न समाप्तिः चास्तु।।
**आचारित गणेशाम्बिका पूजन विधौ यन्न्यूनातिरिक्तं तत्परिपूर्णमस्तु।।**

# कलश (जल) यात्रा

संकल्प– ॐ अद्य पूर्वोच्चारित देशकालौ स्मृत्वा जन कल्याणार्थे यजमानः...... गोत्रोत्पन्नः........नामोऽहम् सपत्नीकोऽहम् आयुरारोग्य ऐश्वर्यादि वृद्धि द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थम्.....महायज्ञे अथवा........देवता प्रतिष्ठा कर्मांगत्वेन या.....मंत्र अनुष्ठानेजल यात्रा कलशानाम् जल मातृणाम् वरुणस्य स्थापन प्रतिष्ठा तीर्थ पूजनाद्यर्चनम् अहम् करिष्ये।

**श्री गणेश प्रार्थनोपरान्ते अग्रिम पूजनम्**

भूमि अष्टदल कमल बनाकर 8 कलश अष्टदलों में एवं 1 कलश मध्य में स्थापित करें। आठों कलशों के उत्तर में लाल वस्त्र के ऊपर एक अष्टदल और बनायें।

## ।। कलशोपरि जल मातृका आवाहनम्।।

**पूर्व कलशे-** ॐ महार्णवे समुद्भूताम्, कल्लोलान्दोल वर्द्धिनीम्।
मोहयन्तीम् जगत्सर्वम्, ऊर्मिम् आवाहयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः ऊर्मिम् आवाहयामि स्थापयामि।

**आग्नेय कलशे-** ॐ पद्मासन समासीनाम्, पद्म हस्ताम् हरिप्रियाम्।
अम्भोधि तनयाम् देवि, लक्ष्मीम् आवाहयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्मीम् आवाहयामि स्थापयामि।

**दक्षिण कलशे-** ॐ प्रलयान्ते महाघोरे, एकोदधि कृताम् महीम्।
अम्बु मूर्ति धराम् देवीम्, जलम् आवाहयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः जलम् आवाहयामि स्थापयामि।

**नैर्ऋत्य कलशे-** ॐ चतुरशीति संख्याका, जन्तवो योनि संभवाः।
मया धाराः कृताः तस्मात्, पानाम् आवाहयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः पानाम् आवाहयामि स्थापयामि।

**पश्चिम कलशे-** ॐ वरुणस्य प्रियाम् देवीम्, पावनीम् भुवनत्रये।
स्र्वाभरण शोभाढ्याम्, वारुणीम् आवाहयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः वारुणीम् आवाहयामि स्थापयामि।

**वायव्य कलशे-** ॐ जल जन्तून् विना नैव, यानि तीर्थानि सर्वतः।
आवाहयामि ताम् देवीम्, विशुद्धाम् जल वासिनीम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः वासिनीम् आवाहयामि स्थापयामि।

**उत्तर कलशे-** ॐ रसातलम् च पातालम्, यया व्याप्तम् चराचरम्।
जगदाधार भूताम् च, आपगाम आवाहयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः आपगामम् आवाहयामि स्थापयामि।

**ईशान कलशे-** ॐ शुद्धोदधि समुद्भूताम्, शुद्ध वर्ण जल प्रियाम्।
शुद्धयर्थम् जल कुंभानाम्, शुद्धम् आवाहयाम्यहम्।।
ॐ भूर्भुवः स्वः शुद्धम् आवाहयामि स्थापयामि।

**मध्य कलशे-** ॐ आगच्छ जल देवेश, जल नाथ अपाम् पते।
तव पूजाम् करिष्यामि, कुम्भेस्मिन् सन्निधौ भव।।
ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणम् आवाहयामि स्थापयामि।

## ।। द्वितीय अष्टदले पत्रेषु जीव मातृका स्थापनम्।।

**मध्ये-** ॐ रसातल समुत्पन्ने, मत्स्य देवि महार्णवे।
मातंगि च प्रिये कृष्णे, जीव मातर्नमोस्तु ते।।
ॐ भूर्भुवः स्वः मत्सीम् आवाहयामि स्थापयामि।

**पूर्व पत्रे-** ॐ ह्लदे कूर्म समुत्पन्नाम्, गम्भीराम् चैव कर्मणि।
पाताल जल संस्थाने, जीव मातर्नमोस्तु ते।।
ॐ भूर्भुवः स्वः कूर्मीम् आवाहयामि स्थापयामि।

**आग्नेय पत्रे-** ॐ श्वेताभ्रे वै समुत्पन्नाम्, जन्तुके जीव चारिणीम्।
उत्पत्तिः सर्व भूतानाम्, जीव मातर्नमोस्तु ते।।
ॐ भूर्भुवः स्वः जलौकीम् आवाहयामि स्थापयामि।

**दक्षिण पत्रे-** ॐ कालाभ्र शिखाकारा, विद्युत्, तेजाश्च दर्दुरीम्।
अर्द्धमाकाश संस्थाने, जीव मातर्नमोस्तु ते।।
ॐ भूर्भुवः स्वः दर्दुरीम् आवाहयामि स्थापयामि।

**नैर्ऋत्य पत्रे-** ॐ गोधिके गो समुत्पन्ने, शस्त्र गदाम् विभूषिते।
सर्वाधार धरे देवि, जीव मातर्नमोस्तु ते।।
ॐ भूर्भुवः स्वः जलगोधिकाम् आवाहयामि स्थापयामि।

**पश्चिम पत्रे-** ॐ नमस्ते देव देवेशि, मकरे मद मर्दिनि।
आश्रये सर्व भूतानाम्, जीव मातर्नमोस्तु ते।।
ॐ भूर्भुवः स्वः मकरीम् आवाहयामि स्थापयामि।

**वायव्य पत्रे-** ॐ अन्धकार समुत्पन्ने, तन्तुकैः निर्मिते शिवे।
दीप्ति रूपे त्रिभुवने, जीव मातर्नमोस्तु ते।।
ॐ भूर्भुवः स्वः तन्तुकीम् आवाहयामि स्थापयामि।

**उत्तर पत्रे-** ॐ सर्वाधार धरे देवि, कर्करि जीव मातृके।
आश्रये सर्व भूतानाम्, जीव मातर्नमोस्तु ते।।
ॐ भूर्भुवः स्वः कर्करीम् आवाहयामि स्थापयामि।
**ईशान पत्रे-** ॐ नमस्ते देव देवेशि, सर्पिणि मद मर्दिनि।
सर्वाधार धरे देवि, जीव मातर्नमोस्तु ते।।
ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पिणीम् आवाहयामि स्थापयामि।

## ।। मध्य कलशस्य दिक्षु-विदिक्षु पूर्वादि क्रमेण।।

ॐ उमाम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ लक्ष्मीम् आवाहयामि स्थापयामि।
ॐ महामायाम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ पानाम् देवीम् आवाहयामि स्थापयामि।
ॐ वारुणीम् आवाहयामि स्थापयामि। ॐ निर्मलाम् आवाहयामि स्थापयामि।
ॐ गोधाम् आवाहयामि स्थापयामि।
ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ग्वं समिमं दधातु।
विश्वेदेवास इह मादयन्तामो 3 प्रतिष्ठ।।
स्थापित देवताः गणेश प्रमुखः सर्वाः सकलशाः जल मातराः स्थल मातरश्च सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु। सर्वोपचारार्थे सर्व सामग्रीम् समर्पयामि नमस्करोमि।

## ।। तीर्थ जले विशेष पूजनम्।।

**मंत्रन्यासः स्व शरीरे-** ॐ वं वरुणाय जलाधिपतये अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ रुं वरुणाय जलाधिपतये तर्जनीभ्यां नमः। ॐ णां वरुणाय जलाधिपतये मध्यमाभ्यां नमः। ॐ यं वरुणाय जलाधिपतये अनामिकाभ्यां नमः। ॐ नं वरुणाय जलाधिपतये कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ मं वरुणाय जलाधिपतये करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।।
**आवाहनम्-** ॐ आवाहयामि देवेशम्, वरुणम् जल नायकम्।
यादः पृष्ठ समारूढम्, पाश हस्तम् महाबलम्।।
**यथा लब्धोपचारैः सम्पूज्य, नारिकेल सहितम् विशेष अर्घ्यम्-**
ॐ श्वेताभ्र शिखराकार, सर्वभूत हिते रतः। गृहाणार्घ्यमिम् देव, जलनाथ नमोस्तु ते।।
**प्रार्थनाम्-** ॐ नदी सागरमाश्रित्य, कालशेषु समाश्रितः।
प्रसादम् कुरु मे देव, मदीये याग मण्डपे।।

अभ्यार्थितो मया भक्त्या, परिवार समन्वितः।सान्निध्यम् कुरु देवेश, मदीये याग मण्डपे।।
गृहाण ब्रम्हणा सेव्य, प्रसादम् कुरु मे अपः।सम्पूज्य बहुधा भक्त्या, मन्त्रमेतम्, उदीरयेत्।।
**ॐ वरुण रूपी वैश्वानराय नमः। गन्धादिभिः सम्पूज्य, श्रुवेण जले आज्य होमः।**
ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ अग्नये स्वाहा। ॐ सोमाय स्वाहा। ॐ सवित्रे स्वाहा।
ॐ सरस्वत्यै स्वाहा। ॐ पूष्णे स्वाहा। ॐ वृहस्पतये स्वाहा। ॐ इन्द्राय स्वाहा।
ॐ घोषाय स्वाहा। ॐ श्लोकाय स्वाहा। ॐ अंशाय स्वाहा। ॐ अद्भ्यः स्वाहा।
ॐ वाभ्यः स्वाहा। ॐ उदकाय स्वाहा। ॐ तिष्ठंतीभ्यः स्वाहा। ॐ स्त्रवंतीभ्यः स्वाहा।
ॐ स्यन्दमानाय स्वाहा। ॐ कूप्याय स्वाहा। ॐ सूद्याय स्वाहा। ॐ धार्याभ्यः स्वाहा।
ॐ अर्णवाय स्वाहा। ॐ समुद्राय स्वाहा। ॐ सरिद्भ्यः स्वाहा।।

## जले बलि प्रदानम् (उड़द, चावल, दही) द्वारा–

ॐ बलिम् गृह्णन्तु ते देवा, ये केचिद् जलमाश्रिताः।
बुभुक्षितान्न हीनाश्च, कृपणा जल वासिनाः।।
दस्यवः सिंह शार्दूला, अन्ये जल समाश्रिताः।भूत प्रेत पिशाचाश्च, ये केचिद् वरुणालयाः।।
तृप्तास्ते मे श्रियम् दद्युः, विघ्नान् नक्षन्तु सर्वदा।
बलिम् गृह्णन्त्विमे देवा, आदित्या वसवस्तथा।।
मरुतः अथ अश्विनौ रुद्राः, सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः।
असुरा यातु धानाश्च, पिशाचा मातरो नगाः।।
दिग्पाला लोकपालाश्च, ये च विघ्न विनायकाः।
शाकिन्यो यक्ष बेताला, योगिन्याः पूतना शिवाः।।
जृम्भकाः सिद्ध गन्धर्वा, माला विद्याधरा नागाः।
जगताम् शान्ति कर्तारो, ब्रम्हाद्याश्च महर्षयाः।।
मा विघ्नम् मा च मे पापम्, मा सन्तु परिपन्थिनः।
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च, भूताः प्रेताः सुखावहाः।।

## हस्तौ प्रक्षाल्य– नमस्कारः।

ॐ प्रतीचीश नमस्तुभ्यम्, सर्व वैरि निषूदन।
पवित्रम् कुरु मे देव, सर्व कार्येषु सर्वदा।।

## दशदिग्पालेषु बलि प्रदानम्–

**पूर्वे**- ॐ इन्द्राय नमः, इन्द्रानुचरेभ्यो नमः। इमम् बलिम् समर्पयामि।

**आग्नये**- ॐ अग्नये नमः, अग्नि अनुचरेभ्यो नमः। इमम् बलिम् समर्पयामि।

**दक्षिणे**- ॐ यमाय नमः, यमानुचरेभ्यो नमः। इमम् बलिम् समर्पयामि।

**नैर्ऋत्ये**- ॐ निर्ऋतये नमः, निर्ऋत्यनुचरेभ्यो नमः। इमम् बलिम् समर्पयामि।

**पश्चिमे**- ॐ वरुणाय नमः, वरुणानुचरेभ्यो नमः। इमम् बलिम् समर्पयामि।

**वायव्ये**- ॐ वायवे नमः, वायोनुचरेभ्यो नमः। इमम् बलिम् समर्पयामि।

**उत्तरे**- ॐ कुबेराय नमः, कुबेरानुचरेभ्यो नमः। इमम् बलिम् समर्पयामि।

**ईशाने**- ॐ ईशानाय नमः, ईशानानुचरेभ्यो नमः। इमम् बलिम् समर्पयामि।

**ईशान-पूर्व मध्ये**- ॐ ब्रम्हणे नमः, ब्रम्हणोनुचरेभ्यो नमः। इमम् बलिम् समर्पयामि।

**नैर्ऋत्य-पश्चिम मध्ये**- ॐ अनन्ताय नमः, अनन्तानुचरेभ्यो नमः।
इमम् बलिम् समर्पयामि।।

## ।। प्रार्थनाम्।।

ॐ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या, तपो यज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनम् सम्पूर्णतामेति, सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।

आगच्छन्तु महाभागाः, समुद्र सरितो ह्लदाः। प्रभासम् पुष्करम् चैव, विशाला विरजा गया।।
कुरुक्षेत्रम् प्रयागम् च, भद्रकर्णम् पृथूदकम्। गंगा च यमुना चैव, ब्रम्हपुत्रा सरस्वती।।
गोदावरी पयोष्णी च नदी चर्मण्वती तथा। शतद्रुः पुष्करश्चैव, शोणश्चैव महानदः।।
तुंगभद्रा च सिन्धुश्च, पारावारस्तथैव च। क्षिप्रा वेत्रवती चैव, पुण्यो जम्बूनदस्तथा।।
पिपाशा कौशिकी चैव, नदा दुःस्वप्न नाशिनी। स्वर्ण रेखा मही चैव, भव्यम् रुद्र महालयम्।।
विष्णुपदम् महातीर्थम्, गंगासागर संगमः। अर्घ तीर्थम् महापुण्यम्, कुशावर्तम् तथैव च।।
भृगु कुत्सम् कर्दमालम्, शक्ति भेदोरि संगमः। एवमादीनि तीर्थानि, यानि सन्ति धरातले।।
आयान्तु तानि सर्वाणि, कलशेषु समन्ततः। आवाहयामि तीर्थानि पूजार्थम् याग मण्डपे।।

**ब्राम्हण भद्रसूक्त का पाठ करें और यजमान तीर्थ से कलशों में जल भरें तथा सुहागिन स्त्रियाँ कलश सिर पर रखकर यज्ञ मण्डप में पहुँचें।।**

## कलश स्थापनम्

कलश के ऊपर नारियल का मुख यजमान की तरफ होना चाहिए।

**अधो मुखम् शत्रु विवर्धनाय, ऊर्धवस्य वस्त्रम् बहु रोग बृद्धये। प्राची मुखम् वित्त विनाशनाय, तस्मात् शुभम् सम्मुखम् नारिकेलेषु।।**

## भूमि स्पर्शः

ॐ भूरसि भूमिरस्य दितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ ग्वं ह पृथिवीं मा हि ग्वं सीः।।

## सप्तधान्यं विकिरेत्

ॐ धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वो दानाय त्वा व्यानाय त्वा। दीर्घामनु प्रसिति मायुषे धां देवो वः सविता हिरण्य पाणिः प्रतिगृभ्णात्व छिद्रेण पाणिना चक्षुसे त्वा महीनां पयोऽसि।।

## कलश स्थापनम्

ॐ आजिग्घ्र कलशं मह्या त्वा विशन् त्विन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्क्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद् द्रयिः।।

## जल पूरणम्

ॐ वरुणस्योतम् भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्त्थो वरुणस्य ऋृत सदन्यसि वरुणस्य ऋृत सदन्मसि वरुणस्य ऋृत सदन्मासीद।।

## चंदन प्रक्षेपः

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां वृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्षमादमुच्यत।।

## सर्वोषधि प्रक्षेपः

ॐ या औषधीः पूर्वा जाता देवेब्भ्यस्त्रि युगं पुरा। मनैनु बभ्रूणा मह गवं शतं धामानि सप्त च।।

## दूर्वा प्रक्षेपः

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषष्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।

## पंचपल्लव प्रक्षेपः

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णो वो वसतिष्कृता। गोभाज इत्किला सथयत् सनवथ पूरुषम्।।

## कुशा प्रक्षेपः

ॐ पवित्रेस्त्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।।

## सप्तमृत्तिका प्रक्षेपः

ॐ स्योना पृथिवीनो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म शप्प्रथा।।

## पूगीफल प्रक्षेपः

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व ग्वं हसः।।

## पंचरत्न प्रक्षेपः

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्य क्रमीत्। दधद् रत्नानि दाशुषे।।

## दक्षिणा प्रक्षेपः

ॐ हिरण्य गर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम्।।

## कलशे मौली बंधनम्

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म वरूथ मास दत्स्वः। वासो अग्ने विश्वरूप ग्वं संव्ययस्व विभावसो।।

## पूर्णपात्रं न्यसेत्

ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्न्नेव विक्क्रीणावहा इषमूर्ज ग्वं शतक्रतो।।

## नारिकेलफलं संस्थाप्य

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणा मुम्म इषाण सर्व लोकम्म इषाण।।

## ध्यानम्

ॐ वरुणः पाशभृत्सौम्यः, प्रतीच्यां मकराश्रयः। पाशहस्तात्मको देवो, जलराश्यधिपो महान्।।

ॐ अपांपतये वरुणाय नमः। ध्यानं समर्पयामि।।

## आवाहनम्

ॐ तत्वा यामि ब्रम्हणा वन्दमानस्त दाशास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ग्वं स मा न आयुः प्रमोषीः।।

**अस्मिन् कलशे वरुणं सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि।**

ॐ अपांपतये वरुणाय नमः। ॐ ऋग्वेदाय नमः। ॐ यजुर्वेदाय नमः। ॐ सामवेदाय नमः। ॐ अथर्ववेदाय नमः। ॐ कलशाय नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ समुद्राय नमः। ॐ गंगायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ कलशकुंभाय नमः।

ॐ सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु मम शान्त्यर्थ दुरितक्षय कारकाः।।

**अनामिकया कलशं स्पृष्ट्वा अभिमंत्रयेत्।**

कलशस्य मुखे विष्णुः, कंठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तस्य स्थितो ब्रम्हा, मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सप्त, सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः, सामवेदो ह्यथर्वणः।।
अंगैश्च सहिताः सर्वे, कलशाम्बुसमाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री, शांतिः पुष्टिकरी तथा।।
आयान्तु मम शान्त्यर्थम्, दुरितक्षय कारकाः।।

## प्राण प्रतिष्ठाम्

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ग्वं समिमं दधातु।
विश्वेदेवास इह मादयन्तामो 3 प्रतिष्ठ।।

**श्री वरुणाद्यावाहित देवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।।**

## पूजनम्

पाद्यं, अर्घ्य, आचमनीयं, सर्वागे स्नानीयं जलं समर्पयामि, पंचामृत स्नानं, शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि, समर्पयामि, यज्ञोपवीतं, वस्त्रं, उपवस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं, सुगन्धि द्रव्यं समर्पयामि, चंदनं, कुंकुमं, हरिद्रां, सिंदूरं समर्पयामि, अक्षतान, पुष्पाणि, दुर्वाकुरान्, बिल्वपत्राणि समर्पयामि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं निवेदयामि, मध्ये पानीयं, आचमनीयं जलं–प्राणाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा,अपानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा, उत्तरापोशनं, करोद्वर्तनार्थे चंदनं समर्पयामि, ऋतुफलं, सताम्बूल पूगीफलं, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि, नमस्करोमि।

## प्रार्थनाम्

ॐ देव दानव संवादे, मथ्यमाने महोदधौ। उत्पन्नोऽसि तदा कुंभ, विधृतो विष्णुना स्वयम्।।
त्वत्तोये सर्व तीर्थानि, देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः। त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि, त्वयि प्राणा प्रतिष्ठिताः।।
शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि, विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः। आदित्या वसवो रुद्रा, विश्वेदेवाः सपैतृकाः।।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि, यतः काम फल प्रदाः। त्वत्प्रसादादिमां यज्ञं, कर्तुमीहे जलोद्भव।।
सानिध्यं कुरु मे देव, प्रसन्नो भव सर्वदा।।

ॐ नमो नमस्ते स्फटिक प्रभाय, सुश्वेतहाराय सुमंगलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय, जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।
श्री अपांपतये वरुणाय नमः, प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।
**ॐ अनया पूजया कलशे वरुणाद्यावाहित देवताः प्रीयन्ताम्।।**

## ॐकार पूजनम्

ॐ आब्रम्हन् ब्राम्हणो ब्रम्हवर्चसी जायताम् आराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽति व्याधी महारथो जायताम्।दोग्ध्री धेनुर्वोढा अनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतान् निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।। ॐ ओंकारं बिन्दु संयुक्तं, नित्यं ध्यायन्ति योगिनः। कामदं मोक्षदं चैव, ओंकाराय नमो नमः।। **ॐ ओंकाराय नमो नमः।**
**सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।।**

## पुण्याह वाचनम्

यजमानः स्वदक्षिणतो युग्मान् ब्राम्हणान् उदंगमुखानुपवेश्य वज्रासने उपविश्य कमल मुकुल सदृशं अंजलिं बद्ध्वा पाणिना कलशं धारयित्वा ब्राम्हणान् आशिषः त्रिवारं प्रार्थयेत्।

**यजमानः** ॐ दीर्घा नागा नद्यो गिरस्त्रीणि विष्णुपदानि च। तेनाऽयुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।। **विप्राः-** अस्तु दीर्घमायुः।
ॐ त्रीणि पदा विचक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्।।
**यजमानः-** तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहम् दीर्घमायुरस्तु।
**विप्राः-** पुण्यं पुण्याहम् दीर्घमायुरस्तु। त्रिवारम्।
कलश स्थाने कलशं स्थापयित्वा पुनर्गृहीत्वा मंत्रेण तथैव इति त्रिवारं कुर्यात्।
**यजमानः-** आम्रपल्लवेन ब्राम्हणानां हस्ते जलं दद्यात्– शिवा आपः सन्तु।
**विप्राः-** ॐ सन्तु शिवा आपः।
**यजमानः-** ॐ सौमनस्यम् अस्तु। इति पुष्पं दद्यात्। **विप्राः-** ॐ अस्तु सौमनस्यम्।
**यजमानः-** ॐ अक्षतं च अरिष्टम् चाऽस्तु। इति अक्षतान्।
**विप्राः-** ॐ अस्तु अक्षतम् अरिष्टम् च।

**यजमानः**- ॐ गन्धाः पान्तु। इति गन्धम्। **विप्राः**- ॐ सौमंगल्यम् चास्तु।
**यजमानः**- ॐ अक्षताः पान्तु। इति अक्षतान्। **विप्राः**- ॐ आयुष्यमस्तु।
**यजमानः**- ॐ पुष्पाणि पान्तु। इति पुष्पाणि। **विप्राः**- ॐ सौश्रियमस्तु।
**यजमानः**- ॐ सफल ताम्बूलानि पान्तु। इति ताम्बूलम्। **विप्राः**- ॐ ऐश्वर्यमस्तु।
**यजमानः**- ॐ दक्षिणाः पान्तु। इति दक्षिणाम्। **विप्राः**- ॐ बहु धनम् चाऽस्तु।
**यजमानः**- ॐ स्वर्चितमस्तु। इति जलम्। **विप्राः**- ॐ स्वर्चितमस्तु।
**यजमानः**- ॐ दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिः तुष्टिः श्रीः यशो विद्या विनयो वित्तम् बहुपुत्रम् बहुधनम् च आयुष्यम् चाऽस्तु। **विप्राः**- ॐ तथाऽस्तु।
**यजमानः**- (अक्षतान् गृहित्वा) ॐ यं कृत्वा सर्ववेद यज्ञ क्रियाकरण कर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहम् ओंकारादि कृत्वा ऋग्–यजुः–साम–अथर्व आशीर्वचनम् बहु ऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये। **विप्राः**- ॐ वाच्यताम्।

ॐ करोतु स्वस्ति ते ब्रम्हा, स्वस्ति चाऽपि द्विजातयः।
सरीसृपाश्च ये श्रेष्ठास्तेभ्यस्ते स्वस्ति सर्वदा।।
ययातिर्नहुषश्चैव, धुन्धुमारो भगीरथः।
तुभ्यं राजर्षयः सर्वे, स्वस्ति कुर्वन्तु नित्यशः।।
स्वस्ति तेऽस्तु द्विपादेभ्यः, चतुष्पादेभ्य एव च।
स्वस्त्यस्त्वा पादकेभ्यश्च, सर्वेभ्यः स्वस्ति ते सदा।।
स्वाहा स्वधा शची चैव, स्वस्ति कुर्वन्ति ते सदा।
करोतु स्वस्ति वेदादि, नित्यं तव महामखे।।
लक्ष्मीः अरुन्धती चैव, कुरुतां स्वस्ति तेऽनघ।
असितो देवलश्चैव, विश्वामित्रः तथांगिराः।।
वशिष्ठः कश्यपश्चैव, स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा।।
धाता विधाता लोकेशो, दिशश्च सदिगीश्वराः।।
स्वस्ति तेऽद्य प्रयच्छन्तु, कार्तिकेयश्च षण्मुखः।
विवश्वान् भगवान स्वस्ति, करोतु तव सर्वदा।।

दिग्गजाश्चैव चत्वारः, क्षितिश्च गगनं ग्रहाः।

अधस्ताद् धरणीं चाऽसौ, नागो धारयते हि यः।।

शेषश्च पन्नगश्रेष्ठः, स्वस्ति तुभ्यं प्रयच्छतु।।

ॐ द्रविणोदा द्रविण सस्तुरस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्रयंसत्।
द्रविणोदा वीरवतीमिषं नो द्रविणोदार सते दीर्घमायुः।। **(ऋक्)**

ॐ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्रचतिष्ठत।नेष्ट्रा दृतु भिरिष्यत।। **(यजुः)**

ॐ देवो 3 वो 3 द्रविणोदाः।पूर्णा विवष्ट्वासिचम्।उद्वा 1 सिंचा 2।ध्वमुपवा पृणध्वम्। आदिद्वोदे 2। वओहते।इडा 2 3 भा 3 4 3। ओ 2 3 4 5 इ।डा।। **(साम)**

ॐ धातारातिः सवितेदं जुषन्ताम् प्रजापतिर्निधिपतिर्नो अग्निः त्वष्टा विष्णुः प्रजया संरराणो यजमानाय द्रविणं दधातु।। **(अथर्व)**

**यजमानः-** ॐ व्रत–जप–नियम–तपः–स्वाध्याय–क्रतु–शम–दम–दया–दान विशिष्टानां सर्वेषां भवतां ब्राम्हणानां मनः समाधीयताम्।इति अक्षतान्। **विप्राः-** ॐ समाहित मनसः स्म।

**यजमानः-** ॐ प्रसीदन्तु भवन्तः। **विप्राः-** प्रसन्नाः स्म।।

अत्र यजमानः पात्रद्वये स्थापयित्वा– **प्रथम पात्रे अक्षतान् प्रक्षिपेत्।**

**विप्राः-** ॐ शान्तिरस्तु।ॐ पुष्टिरस्तु।ॐ तुष्टिरस्तु।ॐ वृद्धिरस्तु।
ॐ अविघ्नमस्तु।ॐ आयुष्यमस्तु।ॐ आरोग्यमस्तु।ॐ शिवमस्तु।
ॐ शिवं कर्मास्तु।ॐ कर्म समृद्धिरस्तु।ॐ धर्म समृद्धिरस्तु।ॐ वेद समृद्धिरस्तु।
ॐ शास्त्र समृद्धिरस्तु। धन–धान्य समृद्धिरस्तु। पुत्र–पौत्र समृद्धिरस्तु।
ॐ इष्ट सम्पदस्तु।।

**द्वितीय पात्रे अक्षतान् प्रक्षिपेत्।**

ॐ अरिष्ट निरसनमस्तु। यत्पापं रोगं अशुभं अकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।

**प्रथम पात्रे दूर्वया जलम् प्रक्षिपेत्।**

ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तरम् अहरहः अभिवृद्धिरस्तु।ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्।
ॐ तिथि–करण–मुहूर्त–नक्षत्र–ग्रह–लग्नसम्पदस्तु।
ॐ तिथि–करण–मुहूर्त–नक्षत्र–ग्रह–लग्नाधिदेवताः प्रीयन्ताम्।

ॐ तिथि–करणे–समुहूर्ते–सनक्षत्रे–सग्रहे–सलग्ने–साधिदैवते प्रीयेताम्।
ॐ दुर्गा–पांचाल्यौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्।
ॐ इन्द्रपुरोगाः मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ वशिष्ठ पुरोगाः ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्।
ॐ माहेश्वरी पुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धती पुरोगा एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्।
ॐ विष्णु पुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रम्ह पुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्।
ॐ ब्रम्ह च ब्राम्हणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ श्री सरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धा–मेधा प्रीयेताम्।
ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्।
ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। भगवन्तौ विघ्न–विनायकौ प्रीयेताम्।
ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वाः इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्।

**द्वितीय पात्रे अक्षतान् प्रक्षिपेत्।**

ॐ हताश्च ब्रम्हद्विषः। ॐ हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्तारः।
ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु घोराणि। ॐ शाम्यन्तु पापानि।
ॐ शाम्यन्तु ईतयः। ॐ शाम्यन्तु उपद्रवाः।

**प्रथम पात्रे दूर्वया जलम् प्रक्षिपेत्।**

ॐ शुभानि वर्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा औषधयः सन्तु। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु। ॐ शिवा आतिथयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवेस्याताम्।

**ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम्।।**

ॐ शुक्र–अंगारक–बुध–वृहस्पति–शनैश्चर–राहु–केतु–सोम सहित आदित्य पुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान पर्जन्यः प्रीयताम्।
ॐ भगवान स्वामी महासेनः प्रीयताम्। ॐ पुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु।
ॐ याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।
**यजमानः-** ॐ एतत्कल्याण युक्तम् पुण्यं पुण्याहम् वाचयिष्ये। **अंजलिं बद्ध्वा।**
**विप्राः-** वाच्यताम्।

ॐ ब्राम्हं पुण्य महर्यच्च, सृष्टि उत्पादन कारकम्।

वेद वृक्षोद्भवम् नित्यम्, तत्पुण्याहम् ब्रुवन्तु नः।।

**यजमानः-** ॐ भो ब्राम्हणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे कियमाणस्य अमुक कर्मणः पुण्याहम् भवन्तो ब्रुवन्तु। **(त्रिवारम्) विप्राः-** ॐ पुण्याहम्–पुण्याहम्–पुण्याहम्।

**ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीह मा।।**

**यजमानः-** ॐ पृथिव्यां उद्धृतायां तु, यत्कल्याणं पुरा कृतम्। ऋषिभिः सिद्ध गन्धर्वै, तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः।।

ॐ भो ब्राम्हणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे कियमाणस्य अमुक कर्मणः कल्याणम् भवन्तो ब्रुवन्तु। **(त्रिवारम्)**

**विप्राः-** कल्याणम्–कल्याणम्–कल्याणम्।

ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रम्हराजन्याभ्या ग्वं शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च।प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यातामुप मादो नमतु।

**यजमानः-** ॐ सागरस्य तु या, ऋद्धिः महालक्ष्म्यादिभिः कृता। सम्पूर्णा सुप्रभावा च, तामृद्धिं प्रब्रुवन्तु नः।।

ॐ भो ब्राम्हणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे कियमाणस्य अमुक कर्मणः ऋद्धिम् भवन्तो ब्रुवन्तु। **(त्रिवारम्) विप्राः-** ॐ कर्म ऋध्यताम्–कर्म ऋध्यताम्–कर्म ऋध्यताम्।

ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्य गन्म ज्योतिरमृता अभूम। दिवं पृथिव्या अध्यारुहा माविदाम देवान्त्स्व ज्योतिः।

**यजमानः-** ॐ स्वस्तिस्तु या विनाशाख्या, पुण्य कल्याण वृद्धिदा।विनायक प्रिया नित्यं, तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः।।

ॐ भो ब्राम्हणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे कियमाणस्य अमुक कर्मणः स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु। **(त्रिवारम्)**

**विप्राः-** ॐ आयुष्मते स्वस्ति–आयुष्मते स्वस्ति–आयुष्मते स्वस्ति।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

**यजमानः-** ॐ समुद्र मथनाज्जाता, जगदानन्दकारिका।

हरि प्रिया च मांगल्या, तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः।।

ॐ भो ब्राम्हणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे क्रियमाणस्य अमुक कर्मणः श्रीरस्तु भवन्तो ब्रुवन्तु। **(त्रिवारम्) विप्राः-** ॐ अस्तु श्रीः–अस्तु श्रीः–अस्तु श्रीः।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।इष्णन्निषाणा मुम्म इषाण सर्व लोकम्म इषाण।।

**यजमानः-** ॐ मृकण्ड सूनोरायुर्यद्, ध्रुव लोमशयोस्तथा।

आयुषा तेन संयुक्ता, जीवेम शरदः शतम्।।

ॐ भो ब्राम्हणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे क्रियमाणस्य अमुक कर्मणः शतं जीवन्तु भवन्तो ब्रुवन्तु। **(त्रिवारम्)**

**विप्राः-** ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः–शतं जीवन्तु भवन्तः–शतं जीवन्तु भवन्तः।

ॐ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्।पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषता युर्गन्तोः।।

**यजमानः-** ॐ शिव गौरी विवाहे या, या श्री रामे नृपात्मजे।

धनदस्य गृहे या श्रीः, अस्माकं सास्तु सद्मनि।।

ॐ भो ब्राम्हणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे क्रियमाणस्य अमुक कर्मणः श्रीरस्तु भवन्तो ब्रुवन्तु। **(त्रिवारम्) विप्राः-** ॐ अस्तु श्रीः–अस्तु श्रीः–अस्तु श्रीः।

ॐ मनसः काममाकूतिम् वाचः सत्यमशीय।

पशूना ग्वं रूप मन्यस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा।।

**यजमानः-** ॐ प्रजापतिः लोकपालो, धाता ब्रम्हा च देवराट्।

भगवान शाश्वतो नित्यं, नो वै रक्षन्तु सर्वदा।।

आयुष्मते स्वस्तिमते, यजमानाय दाशुषे।श्रिये दत्ताशिषः सन्तु, ऋत्विग्भिः वेद पारगैः।।

ॐ भो ब्राम्हणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे क्रियमाणस्य अमुक कर्मणः आयुष्मते भवन्तो ब्रुवन्तु। **(त्रिवारम्)**

**विप्राः-** ॐ आयुष्मते स्वस्ति–आयुष्मते स्वस्ति–आयुष्मते स्वस्ति।।

ॐ प्रति पन्थाम पद्महि स्वस्ति गामनेहसम्।येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु।।

**यजमानः साक्षतजलं गृहीत्वा-**

ॐ कृत एतद् अस्मिन् दानखण्डोक्त पुण्याह वाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट ब्राम्हणानां बचनात् श्री महागणपति प्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोस्तु ।।

**विप्राः-** ॐ अस्तु परिपूर्णः– अस्तु परिपूर्णः– अस्तु परिपूर्णः ।।

**यजमानः साक्षतजलं दक्षिणाम् गृहीत्वा-**

ॐ अद्य कृतस्य स्वस्ति पुण्याह वाचन कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थम् तत् सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थम् च स्वस्ति पुण्याह वाचकेभ्यो ब्राम्हणेभ्यो यथा शक्ति मनसोदिष्टाम् इमां दक्षिणां विभज्य दातुम् अहम् उत्सृजे ।।

**एकस्मिन् पात्रे वरुणोदकं गृहीत्वा अविधुराः चत्वारो ब्राम्हणाः दूर्वया अथवा आम्रपल्लवैः कुटुम्ब सहितं यजमानम् अभिषिन्चेयुः ।।**

**अभिषेक मंत्रः-**

ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान् ऊर्जे दधातनमहेरणाय चक्षसे ।यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः ।उशतीरिव मातरः ।तस्मादरंगमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथाचन ।।

ॐ वरुणस्योतम् भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्त्थो वरुणस्य ॠत सदन्यसि वरुणस्य ॠत सदन्मसि वरुणस्य ॠत सदन्मासीद ।।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः ।पुनन्तु विश्वा भूतानि जात वेदः पुनीहि मा ।।

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।यद्भद्द्रं तन्न आसुव ।

ॐ अन्नपते अन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः ।प्रप्र दातारं तारिष ऊर्जम् नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे ।।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ग्वं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रम्हशान्तिः सर्व ग्वं शान्तिः शान्तिरेव–शान्तिः सामा शान्तिरेधि ।।

ॐ यतोयतः समीहसे ततोनो अभयं कुरु ।शन्नः कुरु प्रजाभ्यो भयन्नः पशुभ्यः ।।

**प्रथम पात्र पातित जलेन सपरिवार गृहाश्च अभिषिंचयेत् ।**

**द्वितीय पात्र जलं एकान्ते पातयेत् ।।**

# श्री षोडश मातृका पूजनम्

**ध्यानम् –** ॐ गौरी पद्मा शची मेधा, सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा, मातरो लोकमातरः।।
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः, आत्मनः कुलदेवताः।
गणेशेनाधिका ह्येता, वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः। ध्यानम् समर्पयामि।

## आवाहनम्

ॐ गौर्यै नमः। गौरीम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ पद्मायै नमः। पद्मम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ शच्यै नमः। शचीम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ मेधायै नमः। मेधाम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ सावित्र्यै नमः। सावित्रीम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ विजयायै नमः। विजयाम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ जयायै नमः। जयाम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ देवसेनायै नमः। देवसेनाम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ स्वधायै नमः। स्वाधाम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ स्वाहायै नमः। स्वाहाम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ मातृभ्यो नमः। मातृः आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ लोकमातृभ्यो नमः। लोकमातृः आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ धृत्यै नमः। धृतिम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ पुष्ट्यै नमः। पुष्टिम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ तुष्ट्यै नमः। तुष्टिम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ आत्मकुलदेवतायै नमः। आत्मकुलदेवताम् आवाहयामि, स्थापयामि।

## कलश स्थापनम्

ॐ तत्वा यामि ब्रम्हणा वन्दमानस्त दाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ग्वं स मा न आयुः प्रमोषीः।। अस्मिन् मातृ कलशे वरुणम् आवाहयामि, स्थापयामि।

## प्राण प्रतिष्ठाम्

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ग्वं समिमं दधातु।
विश्वेदेवास इह मादयन्तामो 3 प्रतिष्ठ।।
श्री गौर्यादि षोडश मातृकाः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।।

## पूजनम्

पाद्यं, अर्घ्य, आचमनीयं, सर्वांगे स्नानीयं जलं समर्पयामि, पंचामृत स्नानं, शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि, यज्ञोपवीतं, वस्त्रं, उपवस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं, सुगन्धि द्रव्यं समर्पयामि, चंदनं, कुंकुमं, हरिद्रां, सिंदूरं समर्पयामि, अक्षतान, पुष्पाणि, बिल्वपत्राणि समर्पयामि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं निवेदयामि, मध्ये पानीयं, आचमनीयं जलं– ॐ प्राणाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा। उत्तरापोशनं, करोद्वर्तनार्थे चंदनं समर्पयामि, ऋतुफलं, सताम्बूल पूगीफलं, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि, नमस्करोमि।

## प्रार्थनाम्

ॐ न अर्चनं पुण्यतमं शुभप्रदं, जानाम्यहम् धन्यतमाः सुमातराः।
सुरप्रियाः षोडशमातृका मम, भूयासु अज्ञान विनाश कारिकाः।।
**ॐ आयुरारोग्यमैश्वर्यम्, ददध्वं मातरो मम।**
**निर्विघ्नं सर्वकार्येषु, कुरुध्वं सगणाधिपाः।।**
'गृहे वृद्धि शतानि भवन्तु' श्री गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः। प्रार्थना पूर्वकं नमोस्करोमि।
अनया पूजया गौर्यादि षोडशमातृकाः प्रीयन्तां न मम। इति भूमौ जलं क्षिपेत्।।
श्री गौर्यादि षोडश मातृणां पूजन कर्मणो यन्न्यूनादिरिक्तं मातृणां प्रसादात्परिपूर्णमस्तु।।

# श्री सप्तघृत मातृका–सप्तस्थल मातृका–वसोर्द्धारा पूजनम्

## ध्यानम्

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारं। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः
पवित्रेण शतधारेण सुप्वा।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्री वसोर्द्धारा–सप्तघृत मातृकाभ्यां नमः। ध्यानं समर्पयामि।।

## घृत धाराम्

ॐ नमोऽतु वसु मातृभ्यो, घृतमातृभ्य एव च। कर्मण्यस्मिन् सिद्ध्यर्थ, धारां दास्यामि मातराः।।
**'ॐ कामधुक्षः'** श्री श्रियादि सप्तघृतमातृकाभ्यो नमः। घृतधारां समर्पयामि।।

## गुडेन एकीकरणम्

ॐ श्री पूर्वम् सप्तमातृश्च, घृतमातृस्तथैव च। गुडेन मेलयिष्यामि, ताः सर्वार्थ प्रसाधिकाः।।

**आवाहनम् –** ॐ श्रियै नमः। श्रियम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ लक्ष्म्यै नमः। लक्ष्मीम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ धृत्यै नमः। धृतिम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ मेधायै नमः। मेधाम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ स्वाहायै नमः। स्वाहाम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ प्रज्ञायै नमः। प्रज्ञाम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ सरस्वत्यै नमः। सरस्वतीम् आवाहयामि, स्थापयामि।

## सप्तस्थल मातृका

ॐ ब्राह्मयै नमः, ब्राह्मीम् आवाहयामि। ॐ माहेश्वर्यै नमः, माहेश्वरीम् आवाहयामि।

ॐ कौमार्यै नमः, कौमारीम् आवाहयामि। ॐ वैष्णव्यै नमः, वैष्णवीम् आवाहयामि।

ॐ वारायै नमः, वाराहीम् आवाहयामि। ॐ इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीम् आवाहयामि।

ॐ चामुण्डायै नमः, चामुण्डाम् आवाहयामि।

## प्राण प्रतिष्ठाम्

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ग्वं समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो 3 प्रतिष्ठ।।

श्री श्रियादि सप्तघृत मातृका–वसोर्धारादेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु।।

## पूजनम्

पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, सर्वांगे स्नानीयं जलं समर्पयामि, पंचामृत स्नानं, शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि, यज्ञोपवीतं, वस्त्रं, उपवस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं, सुगन्धि द्रव्यं समर्पयामि, चंदनं, कुंकुमं, हरिद्रां, सिंदूरं समर्पयामि, अक्षतान, पुष्पाणि, बिल्वपत्राणि समर्पयामि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं निवेदयामि, मध्ये पानीयं, आचमनीयं जलं– ॐ प्राणाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा,अपानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा। उत्तरापोशनं, करोद्वर्तनार्थे चंदनं समर्पयामि, ऋतुफलं, सताम्बूल पूगीफलं, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि, नमस्करोमि।

## प्रार्थनाम्

ॐ श्रव्यादि देव्यः सदा पूज्या, सप्त वै घृतमातरः।
कल्याणानि प्रयच्छन्तु, सकुटुम्बस्य मे सदा।।
ॐ यदंगत्वेन भो देव्यः, पूजिता विधिमार्गतः।कुर्वन्तु कार्यमखिलं, निर्विघ्नेन क्रतूद्‌भवम्।।
श्री सप्तघृत मातृका एवं वसोर्धारा देवताभ्यो नमः, प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।
अनया पूजया वसोर्धारा–सप्तघृतमातृकाः प्रीयन्तां न मम।इति भूमौ जलं क्षिपेत्।।
श्री वसोर्धारा–सप्तघृत मातृणां पूजन कर्मणो यन्न्यूनादिरिक्तं मातृणां प्रसादात्परिपूर्णमस्तु।।

## श्री नान्दीमुख श्राद्धम्

### संकल्पः (नान्दीमुख श्राद्ध पूर्वाभिमुख सव्य होकर करें)

ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य कर्तव्य.......कर्मांगत्वेन सांकल्पिकेन विधिना ब्राम्हण युग्म भोजन पर्याप्तान्न निष्क्रयीभूत यथा शक्ति हिरण्येन नान्दीमुख श्राद्धम् अहम् करिष्ये।

## प्रार्थनाम्

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च, महायोगिभ्य एव च।नमः स्वाहायै स्वधायै, नित्यमेव नमो नमः।।
श्राद्धकाले गयां ध्यात्वा, ध्यात्वा देवं गदाधरम्। मनसा च पितृन् ध्यात्वा, नान्दीश्राद्धं समारभे।। **(त्रिवारम्)**

**दक्षिणोत्तर क्रमेण पलाशपत्रेषु द्वादस कुशकाण्डानि संस्थाप्य।**

**पादप्रक्षालनार्थे दूर्वा-यव जलान्यादाय-**

ॐ अद्य मात्रादि त्रय श्राद्ध संबन्धिनो नान्दीमुखाः सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः
ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः।
ॐ अद्य पित्रादि त्रय श्राद्ध संबन्धिनो नान्दीमुखाः सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः
ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः।
ॐ अद्य सपत्नीक मातामहादि त्रय श्राद्ध संबन्धिनो नान्दीमुखाः सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः
ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः श्रियै ।
ॐ अद्य......गोत्रे नान्दीमुखि गायत्री स्वरूपिणी मातृ......देवि ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः श्रियै।
ॐ अद्य......गोत्रे नान्दीमुखि सावित्री स्वरूपिणी पितामही......देवि ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः श्रियै।

ॐ अद्य......गोत्रे नान्दीमुखि सरस्वती स्वरूपिणी प्रपितामही......देवि ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः श्रियै।

ॐ अद्य......गोत्रे नान्दीमुख वसु स्वरूप पितृ......शर्मणः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः श्रियै।

ॐ अद्य......गोत्रे नान्दीमुख रुद्र स्वरूप पितामह......शर्मणः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः श्रियै।

ॐ अद्य......गोत्रे नान्दीमुख आदित्य स्वरूप प्रपितामह......शर्मणः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः श्रियै।

ॐ अद्य......गोत्रे नान्दीमुख वसु स्वरूप सपत्नीक मातामह......शर्मणः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः श्रियै।

ॐ अद्य......गोत्रे नान्दीमुख रुद्र स्वरूप सपत्नीक प्रमातामह......शर्मणः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः श्रियै।

ॐ अद्य.....गोत्रे नान्दीमुख आदित्य स्वरूप सपत्नीक वृद्धप्रमातामह.....शर्मणः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पाद प्रक्षालनं वृद्धिः श्रियै।

## आसन दानम्

ॐ सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः। नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम्।ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नवाव।।

ॐ......गोत्राणां मातृ–पितामही–प्रपितामहीनां नान्दीमुखीनां ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः। नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम्।ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नवाव।।

ॐ......गोत्राणां पितृ–पितामह–प्रपितामहानां नान्दीमुखानां ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः।नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम्।ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नवाव।।

ॐ.......गोत्राणां मातामह–प्रमातामह– वृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां नान्दीमुखानां

ॐ भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः।नान्दीश्राद्धे क्षणौ क्रियेताम्।

ॐ तथा प्राप्नुतां भवन्तौ प्राप्नवाव।।

## गंधादि दानम्

ॐ अत्रापः पान्तु, इदं यज्ञोपवीतं, इमे वाससी, एष वो गंधः, इमे अक्षताः, इमानि पुष्पाणि, अयं धूपः, अयं दीपः, इदं नैवेद्यं, इदं फलं, इदं ताम्बूलम्।।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ .......गोत्रेभ्यो मातृ–पितामही–प्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ .......गोत्रेभ्यः पितृ–पितामह–प्रपितामहेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ .......गोत्रेभ्यो मातामह–प्रमातामह– वृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः नान्दीमुखेभ्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गंधाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

## भोजन निष्क्रय द्रव्य दानम्

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राम्हण भोजन पर्याप्तं दास्यमानम् अन्नं वा निष्क्रयभूतं द्रव्यम् अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ .......गोत्रा मातृ–पितामही–प्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राम्हण भोजन पर्याप्तं दास्यमानम् अन्नं वा निष्क्रयभूतं द्रव्यम् अमृत रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ .......गोत्राः पितृ–पितामह–प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राम्हण भोजन पर्याप्तं दास्यमानम् अन्नं वा निष्क्रयभूतं द्रव्यम् अमृत रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ .......गोत्राः मातामह–प्रमातामह–वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राम्हण भोजन पर्याप्तं दास्यमानम् अन्नं वा निष्क्रयभूतं द्रव्यम् अमृत रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

## यव–सक्षीर–जल दानम्

ॐ सत्यवसु संज्ञकाः नान्दीमुखाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्।

ॐ मातृ–पितामही–प्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम्।

ॐ पितृ–पितामह–प्रपितामहाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।

ॐ मातामह–प्रमातामह–वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।

**ॐ अघोराः पितरः सन्तु'** इति मंत्रेण पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात्।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्द् दधातु।।

## आशीर्ग्रहणम्

यजमानः– ॐ गोत्रन्नो वर्धताम्। बिप्राः– ॐ वर्धताम् वो गोत्रम्।

यजमानः– ॐ दातारो नोऽभि वर्धन्ताम्। बिप्राः– ॐ वर्धन्ताम् वो दातारः।

यजमानः– ॐ वेदाश्च नोऽभि वर्धन्ताम्। बिप्राः– ॐ वर्धन्ताम् वो वेदाः।

यजमानः– ॐ सन्ततिर्नोऽभि वर्धन्ताम्। बिप्राः– ॐ वर्धन्ताम् वा सन्ततिः।

यजमानः– ॐ श्रद्धा च नो मा व्यपगमद्। बिप्राः– ॐ मा व्यपगमद्वः श्रद्धा।

यजमानः– ॐ बहु देयम् च नोऽस्तु। बिप्राः– ॐ अस्तु वो बहु देयम्।

यजमानः– ॐ अन्नं च नो बहु भवेत्। बिप्राः– ॐ बहु भवेद्वोऽन्नम्।

यजमानः– ॐ अतिथींश्च लभामहै। बिप्राः– ॐ लभन्ताम् वा अतिथयः।

यजमानः– ॐ याचितारश्च नः सन्तु। बिप्राः– ॐ सन्तु वो याचितारः।

यजमानः– ॐ एता आशिषः सत्याः सन्तु। बिप्राः– ॐ सन्त्वेताः सत्या आशिषः।

## दक्षिणा दानम्

ॐ सत्यवसु संज्ञकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थम् द्राक्ष अमलक यव मूल निष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुम् अहम् उत्सृजे।

ॐ .......गोत्रेभ्यो मातृ–पितामही–प्रपितामहीभ्यो नान्दीमुखीभ्यः भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थम् द्राक्ष अमलक यव मूल निष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुम् अहम् उत्सृजे।

ॐ .......गोत्रेभ्यः पितृ–पितामह–प्रपितामहेभ्यो नान्दीमुखेभ्यः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थम् द्राक्ष अमलक यव मूल निष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुम् अहम् उत्सृजे।

ॐ .......गोत्रेभ्यो मातामह–प्रमातामह– वृद्धप्रमातामहेभ्यः सपत्नीकेभ्यः नान्दीमुखेभ्यः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थम् द्राक्ष अमलक यव मूल निष्क्रयीभूतां दक्षिणां दातुम् अहम् उत्सृजे।

## प्रार्थनाम्

**ॐ माता पितामही चैव, तथैव प्रपितामही।**

**पिता पितामहश्चैव, तथैव प्रपितामहः।।**

**मातामहस्तत्पिता च, प्रमातामहकादयः। एते भवन्तु मे प्रीताः, प्रयच्छन्तु सुमंगलम्।।**

**यजमानः-** ॐ नान्दीश्राद्धम् सम्पन्नम्। **बिप्राः-** सुसम्पन्नम्।।

## विसर्जनम्

ॐ वाजे वाजे वत वाजिनो नो धनेषु बिप्रा अमृता ऋतज्ञाः। अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः।।

ॐ आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्या देमे द्यावा पृथिवी विश्वरूपे। आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमोऽअमृतत्वेन गम्यात्।।

**हस्ते जलमादाय-** ॐ मया आचारिते अस्मिन् सांकल्पिकनान्दीश्राद्धे
न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट ब्राम्हणानां बचनात्
श्री गणेश एवं पितृ प्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽस्तु।।

**बिप्राः-** अस्तु परिपूर्णः।। ॐ विष्णवे नमः– ॐ विष्णवे नमः– ॐ विष्णवे नमः।।

# आचार्यादि वरणम्

## संकल्पः

ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य कर्तव्ये......गोत्रेभ्यो..... शर्मणाः आचार्यादि ब्राम्हणेभ्यो........ यागाख्ये कर्मणि दास्यमानैः एभिर्वरण द्रव्यैः आचार्यत्वेन ब्रम्हत्वेन ऋत्विक्त्वेन त्वाम् अहम् वृणे।

## प्रार्थनाम्

ॐ आचार्यस्तु यथा स्वर्गे, शक्रादीनां बृहस्पतिः। तथा त्वं मम यज्ञेस्मिन्, आचार्यो भव सुव्रतः।।

ॐ यथा चतुर्मुखो ब्रम्हा, सर्वलोक पितामहः। तथा त्वं मम यज्ञेस्मिन्, ब्रम्हा भव द्विजोत्तमः।।

ॐ भगवन् सर्व धर्मज्ञ, सर्व धर्म परायणः। वितते मम यज्ञेस्मिन्, ऋत्विक् त्वं मे मखे भव।।

ॐ अस्य यागस्य निष्पत्तौ, भवन्तः अभ्यर्चिता मया। सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं, कर्मेदं विधि पूर्वकम्।।

### आचार्यादि दक्षिण हस्ते रक्तसूत्र रूप कंकण बन्धनम्-तिलकम्

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

ॐ नमो ब्राम्हण्य देवाय, गो ब्राम्हण्य हिताय च।जगद्धिताय कृष्णाय, गोविन्दाय नमो नमः।।

## यजमान हस्ते कंकण बन्धनम्

ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्य ग्वं शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आबध्नामि शत शारदाय आयुष्मान् जरदष्टिः यथासम्।

ॐ येन बद्धो बली राजा, दानवेन्द्रो महाबलः।तेन त्वां प्रति बध्नामि, रक्षे मा चल मा चल।।

# श्री चतुःषष्टि योगिनी पूजनम्

## ध्यानम्

ॐ योगे योगे तवस्तरं वाजे वाजे हवामहे।सखाय इन्द्रमूतये।।

ॐ दिव्य कुंडल संकाशा, दिव्य ज्वाला त्रिलोचना।मूर्तिमती ह्यमूर्ता च, उग्रा चैवोग्ररूपिणी।।

**अनेक भाव संयुक्ता, संसारार्णव तारिणी। यज्ञे कुर्वन्तु निर्विघ्नं, श्रेयो यच्छन्तु मातरः।।**

## आवाहनम्

**ॐ आवाहयाम्यहम् देवीं, योगिनीं परमेश्वरीम्। योगाभ्यासेन संतुष्टा, परं ध्यान समन्विता।।**

ॐ भूर्भुवः स्वः महाकाल्यै नमः।महाकालीम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मीम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः महासरस्वत्यै नमः। महासरस्वतीम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ गजाननायै नमः। गजाननीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ सिंहमुख्यै नमः। सिंहमुखीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ गृधास्यायै नमः। गृधास्यीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ काकतुण्डिकायै नमः। काकतुण्डिकीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ उष्ट्ग्रीवायै नमः। उष्टग्रीवाम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ हयग्रीवायै नमः। हयग्रीवाम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ वाराह्यै नमः। वाराहीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ शरभाननायै नमः। शरभाननीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ उलूकिकायै नमः। उलूकिकीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ शिवारवायै नमः। शिवारवीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ मयूर्यै नमः। मयूरीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ विकटाननायै नमः। विकटाननीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ अष्टवक्रायै नमः। अष्टवक्रीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ कोटराक्ष्यै नमः। कोटराक्षीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ कुब्जायै नमः। कुब्जाम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ विकटलोचनायै नमः। विकटलोचनीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ शुष्कोदर्यै नमः। शुष्कोदरीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ ललजिव्हायै नमः। ललजिव्हाम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ स्वदंष्टायै नमः। स्वदंष्टाम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ वानराननायै नमः। वानराननीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ रुक्षाक्ष्यै नमः। रुक्षाक्षीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ केकराक्ष्यै नमः। केकराक्षीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ बृहत्तुण्डायै नमः। बृहत्तुण्डीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ सुराप्रियायै नमः। सुराप्रियाम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ कपालहस्तायै नमः। कपालहस्ताम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ रक्ताक्ष्यै नमः। रक्ताक्षीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ शुक्यै नमः। शुकीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ श्येन्यै नमः। श्येनीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ कपोतिकायै नमः। कपोतिकीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ पाशहस्तायै नमः। पाशहस्ताम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ दण्डहस्तायै नमः। दण्डहस्ताम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ प्रचण्डायै नमः। प्रचण्डीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ चण्डविक्रमायै नमः। चण्डविक्रमाम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ शिशुघ्न्यै नमः। शिशुघ्नीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ पापहन्त्र्यै नमः। पापहन्त्रीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ काल्यै नमः। कालीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ रुधिरपायिन्यै नमः। रुधिरपायिनीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ वसाधयायै नमः। वसाधयीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ गर्भभक्षायै नमः। गर्भभक्षीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ शवहस्तायै नमः। शवहस्ताम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ आन्त्रमालिन्यै नमः। आन्त्रमालिनीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ स्थूलकेश्यै नमः। स्थूलकेशनीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ बृहत्कुक्ष्यै नमः। बृहत्कुक्षीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ सर्पास्यायै नमः। सर्पास्यनीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ प्रेतवाहनायै नमः। प्रेतवाहनीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ दन्दशूककरायै नमः। दन्दशूककरीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ क्रौन्च्यै नमः। क्रौन्चीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ मृगशीर्षायै नमः। मृगशीर्षाम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ बृषाननायै नमः। बृषाननीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ व्यात्तास्यायै नमः। व्यात्तासनीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ धूमनिःश्वासायै नमः। धूमनिःश्वासनीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे नमः। व्योमैकचरणोर्ध्वदृशीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ तापिन्यै नमः। तापनीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ शोषणीदृष्ट्यै नमः। शोषणीदृष्टीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ कोटर्यै नमः। कोटरीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ स्थूलनाशिकायै नमः। स्थूलनाशिकाम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ विद्युत्प्रभायै नमः। विद्युत्प्रभाम् आवाहयामि, स्थापयामि।।
ॐ बलाकास्यायै नमः। बलाकास्यीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ मार्जायै नमः। मार्जरीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ कटपूतनायै नमः। कटपूतनाम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ अट्टाट्टहासायै नमः। अट्टाट्टहासनीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ कामाक्ष्यै नमः। कामाक्षीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ मृगाक्ष्यै नमः। मृगाक्षीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

ॐ मृगलोचनायै नमः। मृगलोचनीम् आवाहयामि, स्थापयामि।।

**ॐ श्री महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती सहित गजाननादि चतुःषष्टि योगिनीभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।**

## कलश स्थापनम्

ॐ तत्वा यामि ब्रम्हणा वन्दमानस्त दाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ग्वं स मा न आयुः प्रमोषीः।।

अस्मिन् चतुःषष्टि योगिनी कलशे वरुणम् आवाहयामि, स्थापयामि।

## प्राण प्रतिष्ठाम्

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ग्वं समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो 3 प्रतिष्ठ।।

श्री चतुःषष्टि योगिन्याः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।।

## पूजनम्

पाद्यं, अर्घ्य, आचमनीयं, सर्वांगे स्नानीयं जलं समर्पयामि, पंचामृत स्नानं, शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि, यज्ञोपवीतं, वस्त्रं, उपवस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं, सुगन्धि द्रव्यं समर्पयामि, चंदनं, कुंकुमं, हरिद्रां, सिंदूरं समर्पयामि, अक्षतान, पुष्पाणि, बिल्वपत्राणि समर्पयामि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं निवेदयामि, मध्ये पानीयं, आचमनीयं जलं– प्राणाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा। उत्तरापोशनं, करोद्वर्तनार्थे चंदनं समर्पयामि, ऋतुफलं, सताम्बूल पूगीफलं, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि, नमस्करोमि।

## प्रार्थनाम्

ॐ योगिन्याः शक्ति सम्पन्नः, नाना रूपाः सुमंगलाः।महाशक्ति धरादेव्यः, मखरक्षां कुरुष्व मे।।

चतु:षष्टि समाख्याता, योगिन्यो हि वरप्रदा:।त्रैलोक्य पूजिता नित्यं, देव मानुष योगिभि:।।
श्री चतु:षष्टि योगिनिभ्यो नम:, प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।
अनया पूजया श्री महाकाली–महालक्ष्मी–महासरस्वती सहित गजाननादि चतु:षष्टि योगिन्या: प्रीयन्तां न मम। इति भूमौ जलं क्षिपेत्।।

**श्री महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती सहित गजाननादि चतु:षष्टि योगिन्या: पूजन कर्मणो यन्न्यूनादिरिक्तं योगिनी प्रसादात्परिपूर्णमस्तु।।**

## श्री नवग्रह पूजनम्

### ध्यानम्

ॐ ग्रहा ऊर्जाहुतयो व्यन्तो विप्राय मतिम्। तेषां विशिप्रियाणां वोऽहमिषमूर्ज ग्वं समग्रभमुपयाम गृहीतोऽसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्।।
ॐ ब्रम्हा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानु: शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्र: शनि राहु केतव:, सर्वे ग्रहा: शान्तिकरा भवन्तु।।
ॐ भूर्भुव: स्व: सांगेभ्य: सपरिवारेभ्य: सायुधेभ्य: सशक्तिकेभ्य: अधिदेवता प्रत्यधि देवता विनायकादि पंचलोकपाल वास्तोष्पति क्षेत्राधिपति इन्द्रादि दशदिक्पाल सहितेभ्यो नवग्रहेभ्यो नम:।ध्यानम् समर्पयामि।

### नवग्रह आवाहनम्

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यन्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।
ॐ भूर्भुव: स्व: कलिंग देशोद्भव काश्यप गोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य! इहागच्छ इह तिष्ठ।
ॐ सूर्याय नम:। सूर्यम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ इमं देवा असपत्न ग्वं सुबध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते जान राज्याय इन्द्रस्य इन्द्रियाय इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमष्यै विश एष वोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राम्हणाना ग्वं राजा।।
ॐ भूर्भुव: स्व: यमुना तीरोद्भव आत्रेय गोत्र शुक्लवर्ण भो सोम! इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ सोमाय नमः। सोमम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ग्वं रेता ग्वं सि जिन्वति।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिकापुरोद्भव भरद्वाज गोत्र रक्तवर्ण भो भौम! इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ भौमाय नमः। भौमम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टा पूर्ते स ग्वं सृजेथामयं च। अस्मिन् सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मगध देशोद्भव आत्रेय गोत्र हरितवर्ण भो बुध! इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ बुधाय नमः। बुधम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दी दयच्छ वस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धु देशोद्भव आंगिरस गोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पति! इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ बृहस्पतये नमः। बृहस्पतिम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ अन्नात् परिस्त्रुतो रसं ब्रम्हणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ग्वं शुक्रमन्धस इन्द्रस्य इन्द्रियमिदं पयो मृतं मधु।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकट देशोद्भव भार्गव गोत्र श्वेतवर्ण भो शुक्र! इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ शुक्राय नमः। शुक्रम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु नः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट् देशोद्भव काश्यप गोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर! इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ शनैश्चराय नमः। शनैश्चरम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ कया नश्चित्र आभुव दूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।।

ॐ भूर्भुवः स्वः राठिन देशोद्भव पैठिनसी गोत्र कृष्णवर्ण भो राहो! इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ राहवे नमः। राहुम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजा यथाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदि समुद्भव जैमिनी गोत्र कृष्णवर्ण भो केतो! इहागच्छ इह तिष्ठ।

ॐ केतवे नमः। केतुम् आवाहयामि, स्थापयामि।

## अधिदेवता आवाहनम् (ग्रह दक्षिण पार्श्वे)

ॐ ईश्वराय नमः। ईश्वरम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ उमायै नमः। उमाम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ स्कन्दाय नमः। स्कन्दम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ विष्णवे नमः। विष्णुम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ ब्रम्हणे नमः। ब्रम्हाणम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ इन्द्राय नमः। इन्द्रम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ यमाय नमः। यमम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ कालाय नमः। कालम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ चित्रगुप्ताय नमः। चित्रगुप्तम् आवाहयामि, स्थापयामि।

## प्रत्यधिदेवता आवाहनम् (ग्रह वाम पार्श्वे)

ॐ अग्नये नमः। अग्निम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ अद्भ्यो नमः। अपः आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ पृथिव्यै नमः। पृथिवीम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ विष्णवे नमः। विष्णुम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ इन्द्राय नमः। इन्द्रम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ इन्द्राण्यै नमः। इन्द्राणीम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ प्रजापतये नमः। प्रजापतिम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ सर्पेभ्यो नमः। सर्पान् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ ब्रम्हणे नमः। ब्रम्हाणम् आवाहयामि, स्थापयामि।

## पंचलोकपाल देवता आवाहनम्

**राहोरुत्तरतः**- ॐ गणपतये नमः। गणपतिम् आवाहयामि, स्थापयामि।

**शनेरुत्तरतः**- ॐ दुर्गायै नमः। दुर्गाम् आवाहयामि, स्थापयामि।

**रवेरुत्तरतः**- ॐ वायवे नमः। वायुम् आवाहयामि, स्थापयामि।

**राहोर्दक्षिणे**- ॐ आकाशाय नमः। आकाशम् आवाहयामि, स्थापयामि।

**केतोर्दक्षिणे**- ॐ अश्विभ्याम् नमः। अश्विनौ आवाहयामि, स्थापयामि।

## ग्रहाणां मध्ये

ॐ वास्तोष्पते नमः।वास्तोष्पतिम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ क्षेत्राधिपतये नमः।क्षेत्राधिपतिम् आवाहयामि, स्थापयामि।

## दशदिक्पाल देवता आवाहनम्

**पूर्वे-** ॐ इन्द्राय नमः।इन्द्रम् आवाहयामि, स्थापयामि।

**आग्नेयाम्-** ॐ अग्नये नमः।अग्निम् आवाहयामि, स्थापयामि।

**दक्षिणे-** ॐ यमाय नमः।यमम् आवाहयामि, स्थापयामि।

**नैर्ऋत्याम्-** ॐ नैर्ऋते नमः।नैर्ऋत्याम् आवाहयामि, स्थापयामि।

**पश्चिमे-** ॐ वरुणाय नमः।वरुणम् आवाहयामि, स्थापयामि।

**वायव्याम्-** ॐ वायवे नमः।वायुम् आवाहयामि, स्थापयामि।

**उत्तरे-** ॐ सोमाय नमः।सोमम् आवाहयामि, स्थापयामि।

**ईशान्याम्-** ॐ ईश्वराय नमः।ईश्वरम् आवाहयामि, स्थापयामि।

**पूर्व-ईशानयोर्मध्ये-** ॐ ब्रम्हणे नमः।ब्रम्हाणम् आवाहयामि, स्थापयामि।

**नैर्ऋत्य-पश्चिमयोर्मध्ये-** ॐ अनंताय नमः।अनंतम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः सांगेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः अधिदेवता प्रत्यधि देवता विनायकादि पंचलोकपाल वास्तोष्पति क्षेत्राधिपति इन्द्रादि दशदिक्पाल सहितेभ्यो नवग्रहेभ्यो नमः।आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।

## कलश स्थापनम्

ॐ तत्वा यामि ब्रम्हणा वन्दमानस्त दाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ग्वं स मा न आयुः प्रमोषीः।।अस्मिन् नवग्रह कलशे वरुणम् आवाहयामि, स्थापयामि।

## प्राण प्रतिष्ठाम्

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ग्वं समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो 3 प्रतिष्ठ।।श्री सूर्यादि अनन्तान्त देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु।।

## पूजनम्

पाद्यं, अर्घ्य, आचमनीयं, सर्वांगे स्नानीयं जलं समर्पयामि, पंचामृत स्नानं, शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि, यज्ञोपवीतं, वस्त्रं, उपवस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं, सुगन्धि द्रव्यं

समर्पयामि, चंदनं, कुंकुमं, हरिद्रां, सिंदूरं समर्पयामि, अक्षतान, पुष्पाणि, दुर्वांकुरान्, बिल्वपत्राणि समर्पयामि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं निवेदयामि, मध्ये पानीयं, आचमनीयं जलं– ॐ प्राणाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा। उत्तरापोशनं, करोद्वर्तनार्थे चंदनं समर्पयामि, ऋतुफलं, सताम्बूल पूगीफलं, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि, नमस्करोमि।

**प्रार्थनाम् :** ॐ सूर्यः सौर्यमथेन्दुरुच्च पदवीम्, सन्मंगलम् मंगलः।

सद्बुद्धिम् च बुधो गुरुश्च गुरुताम्, शुक्रः सुखम् शं शनिः।।

राहुर्बाहुबलम् करोतु सततम्, केतुः कुलस्योन्नतिम्।

नित्यम् प्रीतिकरा भवन्तु मम ते, सर्वेऽनुकूला ग्रहाः।।

ॐ यत्कृतं पूजनं देवाः, भक्ति श्रद्धा विवर्जितम्। परिगृह्णन्तु तत्सर्वम्, सूर्याद्या ग्रह नायकाः।।

ॐ आयुश्च वितन्च तथा सुखन्च, धर्मार्थ लाभौ बहु पुत्रतां च।

शत्रुक्षयम् राजसु पुत्रतान्च, तुष्टा ग्रहाः क्षेमकरा भवन्तु।।

ॐ आदित्यादि ग्रहाः सर्वे, नाना वर्णाः पृथग्विधाः।सुप्रसन्नाः प्रयच्छन्तु, सौभाग्यम् मम सर्वदा।।

ॐ इन्द्रादि दशदिक्पालाः, सायुधाश्च सवाहनाः।ब्रम्हाविष्णु शिवैः सार्धम्, रक्षां कुर्वन्तु सर्वतः।।

श्री सूर्यादि अनन्तान्त देवताभ्यो नमः, प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।

ॐ अनया पूजया श्री सूर्यादि अनन्तान्त देवताः प्रीयन्तां न मम। इति भूमौ जलं क्षिपेत्।।

**श्री सूर्यादि अनन्तान्तदेवताः पूजनकर्मणो यन्न्यूनादिरिक्तं नवग्रह प्रसादात्परिपूर्णमस्तु।।**

## श्री वास्तुमंडल देवता पूजनम्

**ध्यानम् –** ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान् स्वावेशो अनमीवाभवो नः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

ॐ नमो भगवते वास्तुपुरुषाय महाबल पराक्रमाय सर्वदेवाधिवास आश्रित शरीराय ब्रम्हपुत्राय सकल ब्रम्हाण्ड धारणे भूभारार्पित मस्तकाय पुरपत्तन प्रसाद गृह वापी सरः कूपादि सन्निवेश सान्निध्यकराय सर्व सिद्धिप्रदाय विश्वम्भराय परमपुरुषाय शक्रवरदाय वास्तोष्पते नमस्ते नमस्ते।। ॐ भूर्भुवः स्वः शिखिनादि वास्तुमंडल देवता सहिताय वास्तुपुरुषाय नमः। ध्यानं समर्पयामि।।

# आवाहनम्

ॐ शिखिने नमः। शिखिनम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ पर्जन्याय नमः। पर्जन्यम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ जयन्ताय नमः। जयन्तम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ कुलिशायुधाय नमः। कुलिशायुधम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ सूर्याय नमः। सूर्यम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ सत्याय नमः। सत्यम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ भृशाय नमः। भृशम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ आकाशाय नमः। आकाशम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ वायवे नमः। वायुम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ पूष्णे नमः। पूष्णम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ वितथाय नमः। वितथम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ गृहक्षताय नमः। गृहक्षतम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ यमाय नमः। यमम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ गन्धर्वाय नमः। गन्धर्वम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ भृंगराजाय नमः। भृंगराजम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ मृगाय नमः। मृगम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ पितृभ्यो नमः। पितृन् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ दौवारिकाय नमः। दौवारिकम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ सुग्रीवाय नमः। सुग्रीवम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ पुष्पदन्ताय नमः। पुष्पदन्तम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ वरुणाय नमः। वरुणम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ असुराय नमः। असुरम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ शोषाय नमः। शोषम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ पापाय नमः। पापम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ रोगाय नमः। रोगम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ अहये नमः। अहिम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ मुख्याय नमः। मुख्यम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ भल्लाटाय नमः। भल्लाटम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ सोमाय नमः। सोमम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ सर्पाय नमः। सर्पम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ अदित्यै नमः। अदितिम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ दित्यै नमः। दितिम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ आपाय नमः। आपम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ सावित्राय नमः। सावित्रम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ जयाय नमः। जयम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ रुद्राय नमः। रुद्रम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ अर्यमणे नमः। अर्यमणम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ सवित्रे नमः। सवितारम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ विवस्वते नमः। विवस्वतम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ विवुधाधिपाय नमः। विवुधाधिपम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ मित्राय नमः। मित्रम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ राजयक्ष्मणे नमः। राजयक्ष्माणम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ पृथिवीधराय नमः। पृथिवीधरम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ आपवत्साय नमः। आपवत्सम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ ब्रम्हणे नमः। ब्रम्हाणम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ चरक्यै नमः। चरकीम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ विदार्यै नमः। विदारीम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ पूतनायै नमः। पूतनाम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ पापराक्षस्यै नमः। पापराक्षसीम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ स्कन्दाय नमः। स्कन्दम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ अर्यमणे नमः। अर्यमणम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ जृम्भकाय नमः। जृम्भकम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ पिलिपिच्छाय नमः। पिलिपिच्छम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ इन्द्राय नमः। इन्द्रम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ अग्नये नमः। अग्निम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ यमाय नमः। यमम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ निर्ॠतये नमः। निर्ॠतिम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ वरुणाय नमः। वरुणम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ वायवे नमः। वायुम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ कुबेराय नमः। कुबेरम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ ईश्वराय नमः। ईश्वरम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ ब्रम्हणे नमः। ब्रम्हाणम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ अनन्ताय नमः। अनन्तम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ वास्तोष्पतये नमः। वास्तोष्पतिम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः शिखिनादि वास्तुमंडल देवता सहिताय वास्तुपुरुषाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।।

## कलश स्थापनम्

ॐ तत्वा यामि ब्रम्हणा वन्दमानस्त दाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ग्वं स मा न आयुः प्रमोषीः।।

अस्मिन् वास्तु कलशे वरुणम् आवाहयामि, स्थापयामि।

## प्राण प्रतिष्ठाम्

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ग्वं समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो 3 प्रतिष्ठ।।

श्री शिखिनादि वास्तुमंडल देवता सहिताय वास्तुपुरुषाः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु।।

## पूजनम्

पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, सर्वांगे स्नानीयं जलं समर्पयामि, पंचामृत स्नानं, शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि, यज्ञोपवीतं, वस्त्रं, उपवस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं, सुगन्धि द्रव्यं समर्पयामि, चंदनं, कुंकुमं, हरिद्रां, सिंदूरं समर्पयामि, अक्षतान, पुष्पाणि, दुर्वाकुरान्, बिल्वपत्राणि समर्पयामि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं निवेदयामि, मध्ये पानीयं, आचमनीयं जलं– प्राणाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा। उत्तरापोशनं, करोद्वर्तनार्थे चंदनं समर्पयामि, ॠतुफलं, सताम्बूल पूगीफलं, कृतायाः पूजायाः साद्‌गुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि, नमस्करोमि।

## प्रार्थनाम्

ॐ वास्तोष्पतिम् विदिकार्यम्, भूशैयाभिरतम् प्रभुम्।नमाम्यहम् देवम्, सर्वकर्म फलप्रदम्।।
ॐ देवेश वास्तुपुरुषम्, सर्वविघ्न विदारणम्।शान्तिम् कुरु सुखम् देहि, यज्ञेस्मिन् मम सर्वदा।।
ॐ नागपृष्ठ समारूढ़ं, शूलहस्तं महाबलम्।पाताल नायकं देवं, वास्तुदेवं नमाम्यहम्।।
श्री वास्तुमण्डल देवताभ्यो नमः, प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।
ॐ अनया पूजया श्री शिखिनादि वास्तुमंडल देवता सहिताय वास्तुपुरुषाः प्रीयन्तां न मम।।
इति भूमौ जलं क्षिपेत्।।

**श्री शिखिनादि वास्तुमंडल देवता सहिताय वास्तुपुरुषाय पूजनकर्मणो यन्न्यूनादिरिक्तं वास्तुपुरुष प्रसादात्परिपूर्णमस्तु।।**

# श्री क्षेत्रपाल मंडल देवता पूजनम्

## ध्यानम्

ॐ नहि स्प्पश मविदन्न् अन्यमस्माद् वैश्वानरात् पुर एतारम् अग्नेः। एमेनम् अवृधन्न् अमृता अमर्त्यम् वैश्वानरम् क्षैत्रजित्थाय देवाः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्री क्षेत्रपाल देवताभ्यो नमः। ध्यानम् समर्पयामि।।

## आवाहनम्

ॐ क्षेत्रपालाय नमः। क्षेत्रपालम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ अजराय नमः। अजरम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ व्यापकाय नमः। व्यापकम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ इन्द्रचौराय नमः। इन्द्रचौरम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ इन्द्रमूर्तये नमः। इन्द्रमूर्तिम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ कूष्माण्डाय नमः। कूष्माण्डम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ वरुणाय नमः। वरुणम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ वटुकाय नमः। वटुकम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ विमुक्ताय नमः। विमुक्तम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ लिप्तकाय नमः। लिप्तकम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ लीलाकाय नमः। लीलाकम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ एकदंष्टाय नमः। एकदंष्टम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ ऐरावताय नमः। ऐरावतम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ ओषधिघ्नाय नमः। ओषधिघ्नम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ बन्धनाय नमः। बन्धनम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ दिव्यकाय नमः। दिव्यकम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ कम्बलाय नमः। कम्बलम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ भीषणाय नमः। भीषणम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ गवयाय नमः। गवयम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ घण्टाय नमः। घण्टाम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ व्यालाय नमः। व्यालम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ अणवे नमः। अणुम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ चन्द्रवारुणाय नमः। चन्द्रवारुणम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ पटाटोपाय नमः। पटाटोपम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ जटिलाय नमः। जटिलम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ क्रतवे नमः। क्रतुम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ घण्टेश्वराय नमः। घण्टेश्वरम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ विटंकाय नमः। विटंकम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ मणिमानाय नमः। मणिमानम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ गणबन्धवे नमः। गणबन्धुम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ डामराय नमः। डामरम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ ढुण्डिकर्णाय नमः। ढुण्डिकरणम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ स्थविराय नमः। स्थविरम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ दन्तुराय नमः। दन्तुरम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ नागकर्णाय नमः। नागकर्णम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ धनदाय नमः। धनदम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ महाबलाय नमः। महाबलम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ फेत्काराय नमः। फेत्कारम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ चीत्काराय नमः। चीत्कारम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ सिंहाय नमः। सिंहम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ मृगाय नमः। मृगम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ यक्षाय नमः। यक्षम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ मेघवाहनाय नमः। मेघवाहनम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ तीक्ष्णोष्ठाय नमः। तीक्ष्णोष्ठम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ अनलाय नमः। अनलम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ शुक्लतुण्डाय नमः। शुक्लतुण्डम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ सुधालापाय नमः। सुधालापम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ बर्बरकाय नमः। बर्बरकम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ सवनाय नमः। सवनम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ पावनाय नमः। पावनम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री क्षेत्रपालेभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।।

## कलश स्थापनम्

ॐ तत्वा यामि ब्रम्हणा वन्दमानस्त दाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ग्वं स मा न आयुः प्रमोषीः।।

**अस्मिन् क्षेत्रपाल कलशे वरुणम् आवाहयामि, स्थापयामि।**

## प्राण प्रतिष्ठाम्

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ग्वं समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो 3 प्रतिष्ठ।। श्री क्षेत्रपाल देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु।।

## पूजनम्

पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, सर्वांगे स्नानीयं जलं समर्पयामि, पंचामृत स्नानं, शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि, यज्ञोपवीतं, वस्त्रं, उपवस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं, सुगन्धि द्रव्यं समर्पयामि, चंदनं, कुंकुमं, हरिद्रां, सिंदूरं समर्पयामि, अक्षतान, पुष्पाणि, दुर्वांकुरान्, बिल्वपत्राणि समर्पयामि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं निवेदयामि, मध्ये पानीयं, आचमनीयं जलं– ॐ प्राणाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा। उत्तरापोशनं, करोद्वर्तनार्थे चंदनं समर्पयामि, ऋतुफलं, सताम्बूल पूगीफलं, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि, नमस्करोमि।

## प्रार्थनाम्

ॐ नमामि क्षेत्रपाल त्वाम्, अजरादि गणैः सह। पूजाम् गृहाण मे देव, निर्विघ्नम् कुरु सर्वदा।।

ॐ यं यं यं यक्षरूपम्, दशदिशि वदनम्, भूमि कम्पायमानम्।
सं सं सं संहारमूर्तिम्, सिरमुकुट जटाशेखरम्, चन्द्रबिम्बम्।।
दं दं दं दीप्तकायम्, विकृतनख मुख चोर्ध्व रेखा कपालम्।
पं पं पं पाप नाशम्, प्रणत पशुपतिम्, क्षेत्रपालम् नमामि।।

श्री क्षेत्रपाल देवताभ्यो नमः, प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।

ॐ अनया पूजया श्री अजरादि मंडल देवता सहित क्षेत्रपालः प्रीयन्तां न मम।। इति भूमौ जलं क्षिपेत्।।

**श्री अजरादि मंडल देवता सहित क्षेत्रपालाय पूजनकर्मणो यन्न्यूनादिरिक्तं क्षेत्रपाल प्रसादात्परिपूर्णमस्तु।।**

# यज्ञ मण्डपाधिष्ठातृ देवता पूजनम्

### १. मध्य हवन कुण्डे ईशान स्तम्भे रक्त वर्णम् ब्रम्हाणम् पूजयेत्।

ॐ हंस पृष्ठ समारूढ़ः, देवतागण सेवितः। आगच्छ भगवन् ब्रम्हन्, प्रथम स्तम्भ संस्थितः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रम्हणे नमः, ब्रम्हाणम् आवाहयामि। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि। ॐ सावित्र्यै नमः, ॐ वास्तुदेवतायै नमः, ॐ ब्राह्मयै नमः,

ॐ गंगायै नमः। **स्तम्भम् आलभेत्,** स्तम्भ शिरसि– ॐ नागमात्रे नमः।

**ततः शाखाबंधनानि पूजयेत्।** अनेन कृतेन होमकुंड ईशानकोण स्थित स्तम्भाधिष्ठातृदेवता प्रीयंताम् न मम।

**२. मध्य हवन कुण्डे आग्नेय स्तम्भे कृष्ण वर्णम् विष्णुम् पूजयेत्।**

ॐ गरुड़ञ्च समारूढ़म्, लक्ष्मी गण समायुतम्। आगच्छ भगवन् विष्णो, द्वितीय स्तम्भ संस्थितः।। ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुम् आवाहयामि। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि। ॐ लक्ष्म्यै नमः, ॐ आदित्यायै नमः, ॐ वैष्णव्यै नमः, ॐ वसुदायै नमः। **स्तम्भम् आलभेत्,** स्तम्भ शिरसि– ॐ नागमात्रे नमः।

**ततः शाखाबंधनानि पूजयेत्।** अनेन कृतेन होमकुंड अग्निकोण स्थित स्तम्भाधिष्ठातृदेवता प्रीयंताम् न मम।

**३. मध्य हवन कुण्डे नैऋत्यस्तम्भे श्वेत वर्णम् शंकरम् पूजयेत्।**

ॐ गंगाधर महादेव, पार्वती प्राण बल्लभः। आगच्छ भगवन्नीश, तृतीय स्तम्भ संस्थितः।। ॐ भूर्भुवः स्वः शिवाय नमः, शिवम् आवाहयामि। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि। ॐ गौर्यै नमः, माहेश्वर्यै नमः, शोभनायै नमः, भद्रायै नमः। **स्तम्भम् आलभेत्,** स्तम्भ शिरसि– ॐ नागमात्रे नमः। **ततः शाखाबंधनानि पूजयेत्।** अनेन कृतेन होमकुंड नैऋत्यकोण स्थित स्तम्भाधिष्ठातृदेवता प्रीयंताम् न मम।

**४. मध्य हवन कुण्डे वायव्यस्तम्भे पीत वर्णम् इन्द्रम् पूजयेत्।**

ॐ देवराज महाबाहो, सर्वाभरण भूषितः। आगच्छ भगवन् इन्द्र, चतुर्थ स्तम्भ संस्थितः।। ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रम् आवाहयामि। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि। ॐ इन्द्राण्यै नमः, ॐ आनन्दायै नमः, ॐ विभूत्यै नमः, ॐ आदित्यायै नमः। **स्तम्भम् आलभेत्,** स्तम्भ शिरसि– ॐ नागमात्रे नमः। **ततः शाखाबंधनानि पूजयेत्।** अनेन कृतेन होमकुंड वायव्यकोण स्थित स्तम्भाधिष्ठातृदेवता प्रीयंतां न मम।

**५. बाह्य ईशान कोणे रक्त वर्ण स्तम्भे सूर्यम् पूजयेत्।**

ॐ सप्तहस्त महाबाहो, सप्त श्वेताश्व वाहनः। आगच्छ भगवन् भानो, पंचम स्तम्भ संस्थितः।। ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याय नमः, सूर्यम् आवाहयामि। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि। ॐ सौर्यै नमः, ॐ भूत्यै नमः, ॐ सावित्र्यै नमः, ॐ मंगलायै नमः।

**स्तम्भम् आलभेत्,** स्तम्भ शिरसि– ॐ नागमात्रे नमः। ततः शाखाबंधनानि पूजयेत्। अनेन कृतेन बाह्य ईशान कोण स्थित स्तम्भाधिष्ठातृदेवता प्रीयंताम् न मम।

**६. बाह्य ईशान पूर्वयोः मध्ये श्वेत वर्ण स्तम्भे गणेशम् पूजयेत्।**

ॐ लम्बोदर महाकाय, गजवक्त्र चतुर्भुजः। आगच्छ गणनाथस्त्वं, षष्ठ स्तम्भ समाश्रितः।। ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाय नमः, गणेशम् आवाहयामि। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि। ॐ सरस्वत्यै नमः, ॐ विघ्नहरायै नमः, ॐ जयायै नमः। **स्तम्भम् आलभेत्,** स्तम्भ शिरसि– ॐ नागमात्रे नमः। **ततः शाखाबंधनानि पूजयेत्।** अनेन कृतेन बाह्य ईशान इन्द्र मध्ये स्तम्भाधिष्ठातृदेवता प्रीयंताम् न मम।

**७. बाह्य अग्नि पूर्वयोः मध्ये कृष्ण वर्ण स्तम्भे यमम् पूजयेत्।**

ॐ चित्रगुप्तादि संयुक्त, दण्ड मुद्गर धारकः। आगच्छ भगवन् धर्मम्, सप्तम स्तम्भ संस्थितः।। ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यमम् आवाहयामि। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि। ॐ संध्यायै नमः, ॐ आश्वत्यै नमः, ॐ कूरायै नमः, ॐ नियन्त्रयै नमः। **स्तम्भम् आलभेत्,** स्तम्भ शिरसि– ॐ नागमात्रे नमः। **ततः शाखाबंधनानि पूजयेत्।** अनेन कृतेन बाह्य पूर्व अग्नि मध्ये स्तम्भाधिष्ठातृदेवता प्रीयंताम् न मम।

**८. बाह्य अग्नि कोणे कृष्ण वर्ण स्तम्भे नागराजम् पूजयेत्।**

ॐ अशीबिष समोपेतम्, नागकन्या विराजितः। आगच्छ नाग राजेन्द्र, अष्टम स्तम्भ संस्थितः।। ॐ भूर्भुवः स्वः नागराजाय नमः, नागराजम् आवाहयामि। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि। ॐ नमो खेटक हस्तेभ्यो त्रिभोगेभ्यो नमः, ॐ नमो भीषण देवेभ्यः खंगधृभ्यो नमः, ॐ मध्य संध्यायै नमः, ॐ धरायै नमः, ॐ पद्मायै नमः। **स्तम्भम् आलभेत्,** स्तम्भ शिरसि– ॐ नागमात्रे नमः। **ततः शाखाबंधनानि पूजयेत्।** अनेन कृतेन बाह्य आग्नेय कोण स्थित स्तम्भाधिष्ठातृदेवता प्रीयंताम् न मम।

**९. बाह्य अग्नि दक्षिणयोः मध्ये श्वेत वर्ण स्तम्भे स्कन्दम् पूजयेत्।**

ॐ आवाहयामि देवेशम्, षण्मुख कृत्तिका सुतम्। रुद्र तेजः समुत्पन्नम्, देव सेना समन्वितम्।। मयूर वाहनम् शक्तिं, पाणिम् वै ब्रम्हचारिणम्। आगच्छ भगवन् स्कंद, नवम स्तम्भ संस्थितः।। ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः, स्कन्दम् आवाहयामि। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि। ॐ नमः स्कन्दाय शैवाय, घण्टा कुक्कुट धारिणे।

पताका शक्ति हस्ताय, षण्मुखाय च ते नमः।। ॐ पश्चिम संध्यायै नमः,
**स्तम्भम् आलभेत्,** स्तम्भ शिरसि– ॐ नागमात्रे नमः। **ततः शाखाबंधनानि पूजयेत्।**
अनेन कृतेन अग्नि दक्षिणयोर्मध्ये स्थित स्तम्भाधिष्ठातृदेवता प्रीयंताम् न मम।

**१०. बाह्य दक्षिण नैर्ऋत्ययोः मध्ये धूम्र वर्ण स्तम्भे वायुम् पूजयेत्।**

ॐ आवाहयामि देवेश, भूतानाम् देह धारिणम्। स्र्वाधारम् महावेगम्, मृग वाहनमीश्वरम्।। ध्वज हस्तम् गन्धवहम्, त्रैलोक्यान्तर चारिणम्। आगच्छ भगवन् वायो, दशम स्तम्भ संस्थितः।। ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः, वयुम् आवाहयामि। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि। ॐ वायव्यै नमः, ॐ गायत्र्यै नमः, ॐ मध्यम सन्ध्यायै नमः। **स्तम्भम् आलभेत्,** स्तम्भ शिरसि– ॐ नागमात्रे नमः। **ततः शाखाबंधनानि पूजयेत्।**
अनेन कृतेन दक्षिण नैर्ऋत्ययोः मध्ये स्तम्भाधिष्ठातृ देवता प्रीयंताम् न मम।

**११. बाह्य नैर्ऋत्ये पीत वर्ण स्तम्भे सोमम् पूजयेत्।**

ॐ आवाहयामि देवेशम्, शशांकम् रजनी पतिम्। क्षझीरोदधि समुद्भूतम्, हरमौलि विभूषणम्।। सुधाकरम् द्विजाधीशम्, त्रैलोक्य प्रीति कारकम्। आगच्छ भगवन् सोम, एकादश स्तम्भ संस्थितः।। ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः, सोमम् आवाहयामि। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि। ॐ सावित्र्यै नमः, ॐ अमृतकलशायै नमः, ॐ पश्चिम सन्ध्यायै नमः। **स्तम्भम् आलभेत्,** स्तम्भ शिरसि– ॐ नागमात्रे नमः। **ततः शाखाबंधनानि पूजयेत्।** अनेन कृतेन नैर्ऋत्य स्तम्भाधिष्ठातृ देवता प्रीयंताम् न मम।

**१२. बाह्य नैर्ऋत्य पश्चिमयोः मध्ये श्वेत वर्ण स्तम्भे वरुणम् पूजयेत्।**

ॐ कुम्भीरथ समारूढ़म्, मणिरत्नम् समन्वितम्। आगच्छ देव वरुणम्, द्वादश स्तम्भ संस्थितः।। ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणम् आवाहयामि। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि। ॐ वारुण्यै नमः, ॐ पाशधारिण्यै नमः, ॐ वृहत्यै नमः। **स्तम्भम् आलभेत्,** स्तम्भ शिरसि– ॐ नागमात्रे नमः। **ततः शाखाबंधनानि पूजयेत्।**
अनेन कृतेन नैर्ऋत्य वरुणयोः मध्ये स्तम्भाधिष्ठातृ देवता प्रीयंताम् न मम।

**१३. बाह्य पश्चिम वायव्य मध्ये श्वेत वर्ण स्तम्भे अष्टवसून् पूजयेत्।**

ॐ अश्वारूढान् दिव्य वस्त्रान्, सर्वालंकार भूषितान्।
वसवोऽष्टावा गच्छन्तु, त्रयोदश समाश्रिताः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अष्ट वसुभ्यो नमः, अष्टवसून् आवाहयामि। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि। ॐ विनतायै नमः, ॐ अणिमायै नमः, ॐ भूत्यै नमः। ॐ गरिमायै नमः। **स्तम्भम् आलभेत्,** स्तम्भ शिरसि– ॐ नागमात्रे नमः। **ततः शाखाबंधनानि पूजयेत्।** अनेन कृतेन वरुण वायु मध्यस्थ स्तम्भाधिष्ठातृ देवता प्रीयंताम् न मम।

**१४. बाह्य वायव्ये पीत वर्ण स्तम्भे धनदम् पूजयेत्।**

ॐ दिव्य मालाम्बरधरम्, गदाहस्तम् महाभुजम्। आगच्छ यक्षराज त्वम्, शक्र स्तम्भे समाश्रितः।। ॐ भूर्भुवः स्वः धनदाय नमः, धनदम् आवाहयामि। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि। ॐ आदित्यायै नमः, ॐ लघिमायै नमः, ॐ सिनीवाल्यै नमः। **स्तम्भम् आलभेत्,** स्तम्भ शिरसि– ॐ नागमात्रे नमः। **ततः शाखाबंधनानि पूजयेत्।** अनेन कृतेन वायव्य स्तम्भाधिष्ठातृ देवता प्रीयंताम् न मम।

**१५. बाह्य उत्तर वायव्ययोः मध्ये पीत वर्ण स्तम्भे वृहस्पतिम् पूजयेत्।**

ॐ आवाहयामि देवेशम्, गुरुम् त्रिदश पूजितम्। हेम गोरोचना वर्णम्, पीत स्कन्धम् सुवक्षसम्।। शंखम् च कलशम् चैव, पाणिभ्याम् हेम विभ्रमम्। वृहस्पते समागच्छ, स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव।। ॐ भूर्भुवः स्वः वृहस्पतये नमः, व्हस्पतिम् आवाहयामि। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि। ॐ पूर्णमास्यै नमः,

ॐ सावित्र्यै नमः। **स्तम्भम् आलभेत्,** स्तम्भ शिरसि– ॐ नागमात्रे नमः। **ततः शाखाबंधनानि पूजयेत्।** अनेन कृतेन वायव्य उत्तर मध्य स्तम्भाधिष्ठातृ देवता प्रीयंताम् न मम।

**१६. बाह्य उत्तर ईशानयोः मध्ये रक्तवर्ण स्तम्भे विश्वकर्माणम् पूजयेत्।**

ॐ आवाहयामि देवेशम्, विश्वकर्माणमीश्वरम्। मूर्तामूर्तकरम् देवम्, सर्व कर्तारमीश्वरम्।। त्रैलोक्य सूत्र कर्तारम्, द्विभुजम् विश्व दर्शितम्। आगच्छ विश्वकर्मत्वं, स्तम्भेऽस्मिन् सन्निधो भव।। ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वकर्मणे नमः, विश्वकर्माणम् आवाहयामि। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।

ॐ सिनीवाल्यै नमः, ॐ सावित्र्यै नमः, ॐ वास्तुदेवतायै नमः।

**स्तम्भम् आलभेत्,** स्तम्भ शिरसि– ॐ नागमात्रे नमः। **ततः शाखाबंधनानि पूजयेत्।** अनेन कृतेन उत्तर ईशानयोः मध्य स्तम्भाधिष्ठातृ देवता प्रीयंताम् न मम।

# सतोरण द्वारपाल पूजनम्

## ।। पूर्वे ऋग्वेद पूजनम्।।

ॐ अग्निमीले पुरोहितम् यज्ञस्य देवमृत्विजम् होतारम् रत्न धातमम् ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः ऋग्वेदाय नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।

## ।। दक्षिणे यजुर्वेद पूजनम्।।

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायवस्त्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्या
यध्व मगन्ध्या इन्द्राय भागम् प्रजावती रनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघ
श ग्वं सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्जजमानस्य पशून्न् पाहि ।।
ॐ भूर्भुवः स्वः यजुर्वेदाय नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।

## ।। पश्चिमे सामवेद पूजनम्।।

ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्य दातये। निहोता सत्सि बर्हिषि ।।
ॐ भूर्भुवःस्वः सामवेदाय नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।

## ।। उत्तरे अथर्ववेद पूजनम्।।

ॐ शं नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। **शं ज्जोरभि स्त्रवन्तु नः।।**
ॐ भूर्भुवः स्वः अथर्ववेदाय नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।

# दिग्पाल पूजनम्

**पूर्वे-** ॐ भूर्भुवः स्वः ऋग्वेद सहित इन्द्राय नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।

**आग्नेयाम्-** ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।

**दक्षिणे-** ॐ भूर्भुवः स्वः यजुर्वेद सहित यमाय नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।

**नैर्ऋत्याम्-** ॐ भूर्भुवः स्वः नैर्ऋते नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।

**पश्चिमे-** ॐ भूर्भुवः स्वः सामवेद सहित वरुणाय नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।

**वायव्याम्-** ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।

**उत्तरे-** ॐ भूर्भुवः स्वः अथर्ववेद सहित सोमाय नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।

**ईशान्याम्-** ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वराय नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।

**पूर्व-ईशानयोर्मध्ये-** ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रम्हणे नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।

**नैर्ऋत्य-पश्चिमयोर्मध्ये-** ॐ भूर्भुवः स्वः अनंताय नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।

## ध्वजा पूजनम्

ॐ एह्येहि भगवन् देव, देववाहन वै खग। श्रीकरः श्रीनिवासश्च जय जैत्रोपशोभित।।
व्योमरूप महारूप, धर्मात्मंस्त्वं च वै गतेः।सांनिध्यं कुरु दण्डेऽस्मिन्, साक्षी च ध्रुवतां व्रज।।
विष्णु पत्राय शान्ताय, बल बुद्धि युताय च।पक्षीन्द्राय अतिवेगाय, गरुणाय नमो नमः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः गरुणध्वजाय नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।

## श्री सर्वतोभद्र मंडल देवता पूजनम्

### ध्यानम्

ॐ ब्रम्ह यज्ञानम् प्रथमम् पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचोव्वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रम्हादि सर्वतोभद्र मंडल देवताभ्यो नमः। ध्यानम् समर्पयामि।।

### आवाहनम्

ॐ ब्रम्हणे नमः। ब्रम्हाणम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ सोमाय नमः। सोमम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ ईशानाय नमः। ईशानम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ इन्द्राय नमः। इन्द्रम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ अग्नये नमः। अग्निम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ यमाय नमः। यमम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ निर्ऋृतये नमः। निर्ऋृतिम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ वरुणाय नमः। वरुणम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ वायवे नमः। वायुम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ अष्ट वसुभ्यो नमः। अष्टवसून् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ एकादश रुद्रेभ्यो नमः। एकादशरुद्रान् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ द्वादश आदित्तेभ्यो नमः। द्वादश आदित्यान् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ अश्विभ्याम् नमः। अश्विनौ आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। विश्वान् देवान् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ पितृभ्यो नमः। पितृन् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ सप्त यक्षेभ्यो नमः। सप्त यक्षान् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ भूतेभ्यो नमः। भूतान् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ सर्पेभ्यो नमः। सर्पान् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ गन्धर्वभ्यो नमः। गन्धर्वान् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ अप्सरोभ्यो नमः। अप्सरान् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ स्कन्दाय नमः। स्कन्दम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ नन्दीश्वराय नमः। नन्दीश्वरम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ शूलाय नमः। शूलम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ महाकालाय नमः। महाकालम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ प्रजापतिभ्यो नमः। प्रजापतिम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ दुर्गायै नमः। दुर्गाम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ विष्णवे नमः। विष्णुम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ स्वधा सहित पितृभ्यो नमः।स्वधासहित पितरान् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ मृत्युरोगेभ्यो नमः। मृत्यु रोगान् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ गणपतये नमः। गणपतिम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ अद्भ्यो नमः। अपः आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ मरुद्भ्यो नमः। मरुतम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ पृथिव्यै नमः। पृथिवीम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ गंगादि सप्तसरिद्भ्यो नमः।गंगादिसप्तसरितान् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ सप्त सागरेभ्यो नमः। सप्तसागरान् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ मेरवे नमः। मेरुम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ गदायै नमः। गदाम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ त्रिशूलाय नमः। त्रिशूलम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ वज्राय नमः। वज्रम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ शक्तये नमः। शक्तिम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ दण्डाय नमः। दण्डम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ खड्गाय नमः। खड्गम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ पाशाय नमः। पाशम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ अंकुशाय नमः। अंकुशम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ गौतमाय नमः। गौतमम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ भरद्वाजाय नमः। भरद्वाजम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ विश्वामित्राय नमः। विश्वामित्रम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ कश्यपाय नमः। कश्यपम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ जमदग्नये नमः। जमदग्निम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ वशिष्ठाय नमः। वशिष्ठम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ अत्रये नमः। अत्रिम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ अरुन्धत्यै नमः। अरुन्धतीम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ ऐन्द्रयै नमः। ऐन्द्रीम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ कौमार्यै नमः। कौमारीम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ ब्राम्ह्यै नमः। ब्राम्हीम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ बाराह्यै नमः। बाराहीम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ चामुण्डायै नमः। चामुण्डाम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ वैष्णव्यै नमः। वैष्णवीम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ माहेश्वर्यै नमः। माहेश्वरीम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ वैनायक्यै नमः। वैनायकीम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रम्हादि सर्वतोभद्र मंडल देवताभ्यो नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।।

## कलश स्थापनम्

ॐ तत्वा यामि ब्रम्हणा वन्दमानस्त दाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ग्वं स मा न आयुः प्रमोषीः।।
अस्मिन् सर्वतोभद्रमंडले प्रधान कलशे वरुणम् आवाहयामि, स्थापयामि।

## प्राण प्रतिष्ठाम्

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ग्वं समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो 3 प्रतिष्ठ।। श्री सर्वतोभद्र मंडल देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।।

## पूजनम्

पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, सर्वांगे स्नानीयं जलं समर्पयामि, पंचामृत स्नानं, शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि, यज्ञोपवीतं, वस्त्रं, उपवस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं, सुगन्धि द्रव्यं समर्पयामि, चंदनं, कुंकुमं, हरिद्रां, सिंदूरं समर्पयामि, अक्षतान, पुष्पाणि, दुर्वाकुरान्, बिल्वपत्राणि समर्पयामि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं निवेदयामि, मध्ये पानीयं, आचमनीयं जलं– ॐ प्राणाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा,अपानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा। उत्तरापोशनं, करोद्वर्तनार्थे चंदनं समर्पयामि, ऋतुफलं, सताम्बूल पूगीफलं, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि, नमस्करोमि।

## प्रार्थनाम्

ॐ ब्रम्हाद्यावाहिता देवाः, सर्वतोभद्र मंडले। पूजां गृह्णीत मद् दत्तां, सर्वदा मे प्रसीदत।।
श्री सर्वतोभद्र देवताभ्यो नमः, प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।
ॐ अनया पूजया श्री ब्रम्हादि सर्वतोभद्र मंडल देवताः प्रीयन्तां न मम।।
इति भूमौ जलं क्षिपेत्।।

**श्री ब्रम्हादिसर्वतोभद्र मंडलदेवता पूजनकर्मणो यन्न्यूनादिरिक्तं सर्वतोभद्र प्रसादात्परिपूर्णमस्तु।।**

# श्री चतुर्लिंगतोभद्र मंडल देवता पूजनम्

## ध्यानम्

ॐ नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च ।। श्री चतुर्लिंगतोभद्र मंडलस्थ देवताभ्यो नमः। ध्यानम् समर्पयामि ।।

## आवाहनम्

ॐ असितांग भैरवाय नमः। असितांग भैरवम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ रुरु भैरवाय नमः। रुरु भैरवम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ चण्ड भैरवाय नमः। चण्ड भैरवम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ क्रोध भैरवाय नमः। क्रोध भैरवम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ उन्मत्त भैरवाय नमः। उन्मत्त भैरवम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ कपाल भैरवाय नमः। कपाल भैरवम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ भीषण भैरवाय नमः। भीषण भैरवम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ संहार भैरवाय नमः। संहार भैरवम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ अनन्ताय नमः। अनन्तम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ वासुकये नमः। वासुकीम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ तक्षकाय नमः। तक्षकम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ कुलिशायुधाय नमः। कुलिशायुधम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ कर्कोटिकाय नमः। कर्कोटिकम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ शंखपालाय नमः। शंखपालम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ कम्बलाय नमः। कम्बलम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ अश्वताय नमः। अश्वतम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ शूलाय नमः। शूलम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ चन्द्रमौलिने नमः। चन्द्रमौलिम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ चन्द्रमसे नमः। चन्द्रमसम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ वृषभध्वजाय नमः। वृषभध्वजम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ त्रिलोचनाय नमः। त्रिलोचनम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ शक्तिधराय नमः। शक्तिधरम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ महेश्वराय नमः। महेश्वरम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ शूलपाणये नमः। शूलपाणिम् आवाहयामि, स्थापयामि।

**ततः सर्वतोभद्रवत् देवता स्थापनम्। तदन्तरम्-**

ॐ सद्योजाताय नमः। सद्योजातम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ वामदेवाय नमः। वामदेवम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ अघोराय नमः। अघोरम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ तत्पुरुषाय नमः। तत्पुरुषम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ ईशानाय नमः। ईशानम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ ऋग्वेदाय नमः। ऋग्वेदम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ यजुर्वेदाय नमः। यजुर्वेदम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ सामवेदाय नमः। सामवेदम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ अथर्ववेदाय नमः। अथर्ववेदम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ भवाय नमः। भवम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ शर्वाय नमः। शर्वम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ पशुपतये नमः। पशुपतिम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ ईशानाय नमः। ईशानम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ उग्राय नमः। उग्रम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ रुद्राय नमः। रुद्रम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ भीमाय नमः। भीमम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ महते नमः। महान्तम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ भवान्यै नमः। भवानीम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ शर्वाण्यै नमः। शर्वाणीम् आवाहयामि, स्थापयामि।पयामि।
ॐ पशुपत्यै नमः। पशुपतीम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ ईशान्यै नमः। ईशानीम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ उग्रायै नमः। उग्राम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ रुद्राण्यै नमः। रुद्राणीम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ भीमायै नमः। भीमाम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ महत्यै नमः। महतीम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ गदायै नमः। गदाम् आवाहयामि, स्थापयामि।

ॐ त्रिशूलाय नमः। त्रिशूलम् आवाहयामि, स्थापयामि।
ॐ भूर्भुवः स्वः चतुर्लिंगतोभद्र मंडलस्थ देवताभ्यो नमः।आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि।।

## कलश स्थापनम्

ॐ तत्वा यामि ब्रम्हणा वन्दमानस्त दाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश ग्वं स मा न आयुः प्रमोषीः।।

अस्मिन् चतुर्लिंगतोभद्रमंडले प्रधान कलशे वरुणम् आवाहयामि, स्थापयामि।

## प्राण प्रतिष्ठाम्

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ग्वं समिमं दधातु।
विश्वेदेवास इह मादयन्तामो 3 प्रतिष्ठ।।

श्री चतुर्लिंगतोभद्र मंडलस्थ देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।।

## पूजनम्

पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, सर्वांगे स्नानीयं जलं समर्पयामि, पंचामृत स्नानं, शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि, यज्ञोपवीतं, वस्त्रं, उपवस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं, सुगन्धि द्रव्यं समर्पयामि, चंदनं, कुंकुमं, हरिद्रां, सिंदूरं समर्पयामि, अक्षतान, पुष्पाणि, दुर्वाकुरान्, बिल्वपत्राणि समर्पयामि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं निवेदयामि, मध्ये पानीयं, आचमनीयं जलं
ॐ प्राणाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा,अपानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा। उत्तरापोशनं, करोद्वर्तनार्थे चंदनं समर्पयामि, ॠतुफलं, सताम्बूल पूगीफलं, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि, नमस्करोमि।

## प्रार्थनाम्

ॐ मंदार माला कुलितालिकायै, कपाल मालांकित शेखराय।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय, नमः शिवायै च नमः शिवाय।।
श्री चतुर्लिंगतोभद्र मंडल देवताभ्यो नमः, प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।
ॐ अनया पूजया श्री चतुर्लिंगतोभद्र मंडल देवताः प्रीयन्तां न मम।।इति भूमौ जलं क्षिपेत्।।
श्री चतुर्लिंगतोभद्र मंडल देवता पूजन कर्मणो यन्न्यूनादिरिक्तं चतुर्लिंगतोभद्र प्रसादात्परिपूर्णमस्तु।।

# ।। श्री गौरीतिलक मंडल आवाहनम् पूजनम्।।

**ध्यानम्**- ॐ अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां,
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्।
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां,
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्।।

ॐ महाविष्णवे नमः, आवाहयामि स्थापयामि। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। ॐ महेश्वराय नमः। ॐ महामायायै नमः। ॐ ऋग्वेदाय नमः। ॐ यजुर्वेदाय नमः। ॐ सामवेदाय नमः। ॐ अथर्ववेदाय नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ जलोद्भवाय नमः। ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ प्रजापतये नमः। ॐ शिवाय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ परमेष्ठिने नमः। ॐ धात्रे नमः। ॐ विधात्रे नमः। ॐ अर्यमणे नमः। ॐ मित्राय नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ अंशुमते नमः। ॐ भगाय नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ विवस्वते नमः। ॐ पूष्णे नमः। ॐ पर्जन्याय नमः। ॐ त्वष्ट्रे नमः। ॐ दक्ष यज्ञाय नमः। ॐ देववसवे नमः। ॐ महासुताय नमः। ॐ सुधर्मणे नमः। ॐ शंखपदे नमः। ॐ महाबाहवे नमः। ॐ वपुष्मते नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ महेरणाय नमः। ॐ विश्वावसवे नमः। ॐ सुपर्वणे नमः। ॐ विष्टराय नमः। ॐ रुद्रदेवताय नमः। ॐ ध्रुवाय नमः। ॐ धराय नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ आपवत्साय नमः। ॐ नलाय नमः। ॐ अनिलाय नमः। ॐ प्रत्यूषाय नमः। ॐ प्रभासाय नमः। ॐ आवर्ताय नमः। ॐ सांवर्ताय नमः। ॐ द्रोणाय नमः। ॐ पुष्कराय नमः। ॐ ह्रींकार्य्यै नमः। ॐ ह्रियै नमः। ॐ कात्यायन्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ महादिव्यायै नमः। ॐ महाशब्दायै नमः। ॐ सिद्धिदायै नमः। ॐ ह्रीं कार्ये नमः। ॐ ऐं नमः। ॐ श्रीं श्रियै नमः। ॐ ह्रीं ह्रियै नमः। ॐ लक्ष्म्यै नमः। ॐ श्रियै नमः। ॐ सुधायै नमः। ॐ मेधायै नमः। ॐ प्रज्ञायै नमः। ॐ मत्यै नमः। ॐ स्वाहायै नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः। ॐ गौर्यै नमः। ॐ पद्मायै नमः। ॐ शच्यै नमः। ॐ सुमेधायै नमः। ॐ सावित्र्यै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ देवसेनायै नमः। ॐ स्वाहायै नमः। ॐ स्वधायै नमः। ॐ मात्रे नमः। ॐ गायत्र्यै नमः। ॐ लोकमात्रे नमः। ॐ धृत्यै नमः। ॐ पुष्टयै नमः। ॐ तुष्टयै नमः। ॐ आत्मदेवतायै नमः। ॐ गणेश्वर्यै नमः। ॐ कुलमात्रे नमः। ॐ शान्त्यै नमः। ॐ जयन्त्यै नमः। ॐ मंगलायै नमः। ॐ काल्यै नमः। ॐ भद्रकाल्यै नमः। ॐ कपालिन्यै नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ क्षमायै नमः। ॐ शिवायै नमः। ॐ धात्र्यै नमः। ॐ स्वाहास्वधाभ्यां नमः। ॐ दीप्यमानायै नमः। ॐ दीप्तायै नमः। ॐ सूक्ष्मायै नमः। ॐ विभूत्यै नमः। ॐ विमलायै नमः। ॐ परायै नमः।

ॐ अमोघायै नमः। ॐ विद्युतायै नमः। ॐ सर्वतोमुख्यै नमः। ॐ आनन्दायै नमः। ॐ नन्दिन्यै नमः। ॐ शक्त्यै नमः। ॐ महासूक्ष्मायै नमः। ॐ करालिन्यै नमः। ॐ भारत्यै नमः। ॐ ज्योतिष्मत्यै नमः। ॐ ब्राह्म्यै नमः। ॐ माहेश्वर्यै नमः। ॐ कौमार्यै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ चण्डिकायै नमः। ॐ बुद्ध्यै नमः। ॐ लज्जायै नमः। ॐ वपुष्मत्यै नमः। ॐ शान्त्यै नमः। ॐ कान्त्यै नमः। ॐ रत्यै नमः। ॐ प्रीत्यै नमः। ॐ कीर्त्यै नमः। ॐ प्रभायै नमः। ॐ काम्यायै नमः। ॐ कान्तायै नमः। ॐ सिद्ध्यै नमः। ॐ दयायै नमः। ॐ शिवदूत्यै नमः। ॐ श्रद्धायै नमः। ॐ क्षमायै नमः।
ॐ क्रियायै नमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ मोहिन्यै नमः। ॐ यशोवत्यै नमः। ॐ कृपावत्यै नमः। ॐ सलिलायै नमः। ॐ सुशीलायै नमः। ॐ ईश्वर्यै नमः। ॐ सिद्धेश्वर्यै नमः। ॐ द्वैपायनाय नमः। ॐ भारद्वाजाय नमः। ॐ गौतमाय नमः। ॐ सुमन्तवे नमः। ॐ देवलाय नमः। ॐ व्यासाय नमः। ॐ वसिष्ठाय नमः। ॐ च्यवनाय नमः। ॐ कण्वाय नमः। ॐ मैत्रेयाय नमः। ॐ कवये नमः। ॐ विश्वामित्राय नमः। ॐ वामदेवाय नमः। ॐ सुमन्ताय नमः। ॐ जैमिनये नमः। ॐ क्रतवे नमः। ॐ पिप्पलादाय नमः। ॐ पराशराय नमः। ॐ गर्गाय नमः। ॐ वैशम्पायनाय नमः। ॐ दक्षायनमः। ॐ मार्कण्डेयाय नमः। ॐ मृकण्डाय नमः। ॐ लोमशाय नमः। ॐ पुलहाय नमः। ॐ पुलस्त्याय नमः। ॐ बृहस्पतये नमः। ॐ जमदग्नये नमः। ॐ जामदग्न्याय नमः। ॐ दाल्भ्याय नमः। ॐ शिलोञ्छनाय नमः। ॐ गालवाय नमः। ॐ याज्ञवल्क्याय नमः। ॐ दुर्वाससे नमः। ॐ सौभरये नमः। ॐ जावालये नमः। ॐ वाल्मीकये नमः। ॐ बह्वृचाय नमः। ॐ इन्द्रप्रमितये नमः। ॐ देवमित्राय नमः। ॐ जाजलये नमः। ॐ शाकल्याय नमः। ॐ मुद्गलाय नमः। ॐ जातुकर्ण्याय नमः। ॐ बलाकाय नमः। ॐ कृपाचार्याय नमः। ॐ सुकर्मणे नमः। ॐ कौसल्याय नमः। ॐ ब्रह्माग्नये नमः। ॐ गार्हपत्याग्नये नमः। ॐ ईश्वराग्नये नमः। ॐ दक्षिणाग्नये नमः। ॐ वैष्णवाग्नये नमः। ॐ आहवनीयाग्नये नमः नमः। ॐ सप्त जिव्हाग्नये नमः। ॐ इध्मजिह्वाग्नये नमः। ॐ प्रवर्ग्याग्नये नमः। ॐ वडवाग्नये नमः। ॐ जाठराग्नये नमः। ॐ लौकिकाग्नये नमः। ॐ सूर्याय नमः। ॐ वेदांगाय नमः। ॐ भानवे नमः। ॐ इन्द्राय नमः। ॐ खगाय नमः। ॐ गभस्तिने नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ अंशुमते नमः। ॐ हिरण्यरेतशे नमः। ॐ दिवाकराय नमः। ॐ मित्राय नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ शम्भवे नमः। ॐ गिरिशाय नमः। ॐ अजैकपदे नमः। ॐ अर्हिर्बुधन्याय नमः। ॐ पिनाकपाणये नमः। ॐ अपराजिताय नमः। ॐ भुवनाधीश्वराय नमः। ॐ कपालिने नमः। ॐ विशाम्पतये नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ वीरभद्राय नमः। ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः। ॐ अवहाय नमः। ॐ प्रवहाय नमः। ॐ उद्वहाय नमः।

ॐ सम्वहाय नमः। ॐ विवहाय नमः। ॐ परिवहाय नमः। ॐ परीवहाय नमः। ॐ धरायै नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ आकाशाय नमः। ॐ हिरण्यनाभाय नमः। ॐ पुष्पंजयाय नमः। ॐ द्रोणाय नमः। ॐ शृंगिणे नमः। ॐ वादरायणाय नमः। ॐ अगस्त्याय नमः। ॐ मनवे नमः। ॐ कश्यपाय नमः। ॐ धौम्याय नमः। ॐ भृगवे नमः। ॐ वीतिहोत्राय नमः। ॐ मधुछन्दसे नमः। ॐ वीरसेनाय नमः। ॐ कृतवृष्णये नमः। ॐ अत्रये नमः। ॐ मेधातिथये नमः। ॐ अरिष्टनेमये नमः। ॐ आङ्गिरसाय नमः। ॐ इन्द्रप्रमदाय नमः। ॐ इध्मवाहवे नमः। ॐ पिप्पलादाय नमः। ॐ नारदाय नमः। ॐ अरिष्टसेनाय नमः। ॐ अरुणाय नमः। ॐ सनकाय नमः। ॐ सनन्दनाय नमः। ॐ सनातनाय नमः। ॐ सनत्कुमाराय नमः। ॐ कपिलाय नमः। ॐ कर्दमाय नमः। ॐ मरीचये नमः। ॐ क्रतवे नमः। ॐ प्रचेतसे नमः। ॐ उत्तमाय नमः। ॐ दधीचये नमः। ॐ श्राद्धदेवताभ्यो नमः। ॐ गणदेवेभ्यो नमः। ॐ विद्याधरेभ्यो नमः। ॐ अप्सरोभ्यो नमः। ॐ यक्षेभ्यो नमः। ॐ रक्षोभ्यो नमः। ॐ गन्धर्वेभ्यो नमः। ॐ पिशाचेभ्यो नमः। ॐ गुह्यकेभ्यो नमः। ॐ सिद्धदेवताभ्यो नमः। ॐ औषधीभ्यो नमः। ॐ भूतग्रामाय नमः। ॐ चतुर्विधभूतग्रामाय नमः।

गौरीतिलकमण्डले ये देवास्तान् सर्वानावाहयामि स्थापयामि। इत्यावाह्य संस्थाप्य उपचारैः सम्पूजयेत्। आवाहयामि, श्री गौरी तिलक मंडल देवताभ्यो नमः।

**पूजनम् –** पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयं, सर्वांगे स्नानीयं जलं समर्पयामि, पंचामृत स्नानं, शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि, यज्ञोपवीतं, वस्त्रं, उपवस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं, सुगन्धि द्रव्यं समर्पयामि, चंदनं, कुंकुमं, हरिद्रां, सिंदूरं समर्पयामि, अक्षतान, पुष्पाणि, दुर्वांकुरान्, बिल्वपत्राणि समर्पयामि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं निवेदयामि, मध्ये पानीयं, आचमनीयं जलं ॐ प्राणाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा,अपानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा। उत्तरापोशनं, करोद्वर्तनार्थे चंदनं समर्पयामि, ऋतुफलं, सताम्बूल पूगीफलं, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि, नमस्करोमि।

**प्रार्थनाम्-** ॐ त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या, विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्, त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः।।
विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः, स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्, का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः।।

प्रार्थना पूर्वकम् नमस्करोमि, श्री गौरी तिलक मंडल देवताभ्यो नमः।

ॐ अनया पूजया श्री गौरीतिलक मंडल देवताः प्रीयन्तां न मम।।इति भूमौ जलं क्षिपेत्।।

श्रीगौरीतिलकमंडल देवता पूजन कर्मणो यन्न्यूनादिरिक्तं गौरीतिलक प्रसादात्परिपूर्णमस्तु।।

## कूष्माण्ड बलिदानम्

**संकल्प** - देशकालाद्युचार्य... मम सकुटुम्बस्य सर्वाऽरिष्ट प्रशान्ति सर्वाभीष्ट कामसिद्धि कल्पोक्तफलावाप्तिद्वारा श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती त्रिगुणात्मिका स्वरूपिणी श्री दुर्गादेवी प्रीत्यर्थं कूष्माण्ड बलिदानमहं करिष्ये।

## कूष्माण्ड पूजनम्

ॐ नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।। इत्यनेन दुर्गादेवी पंचोपचारैः सम्पूज्य, तत्पुरतः स्वयमुदंग मुखो बलिं प्राङ्मुखं च पीठे वस्त्रगुण्ठितं कूष्माण्डं निधाय कूष्माण्डबलये नमः, इत्यनेन गन्ध पुष्पादि पंचोपचारैः सम्पूज्य, अभिमन्त्रयेत्।

ॐ पशुस्त्वं बलिरूपेण, मम भाग्यादवस्थितः। प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम्।।
चण्डिकाप्रीतिदानेन दातुरापद् विनाशनम्। चामुण्डाबलिरूपाय बले तुभ्यं नमोऽस्तु ते।।
यज्ञार्थ बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा। अतस्त्वां घातयास्यद्य यस्माद्यज्ञे मतो वधः।।
ततः शस्त्रं गन्धादिनां सम्पूज्य, अभिमन्त्रयेत्– ऐं ह्रीं श्रीं रसनात्वं चण्डिकायाः सुरलोक प्रसाधकः। इति ह्रां ह्रीं खड्ग, आं हुं फट्, इति पठित्वा हस्ते शस्त्रं गृहीत्वा वीरासन मुद्रया –
ॐ कालि कालि वज्रेश्वरि लोहदण्डाय नमः। इति पठनेन कूष्माण्डं छेदयेत्, छेदनावसरे न विलोकयेत्। ततश्छिन्ने बलौ कुंकुममनुलेपयेत्। कौशिकि रुधिरेणाप्यायताम् इति देव्यै अर्धम् निवेद्य, अवशिष्टार्धस्य तेनैव खड्गेन पुनः पंचभागान् कृत्वा पूतनायै बलिभागं निवेदयामि। चरक्य बलिभागं निवेदयामि। विदार्यै बलिभागं निवेदयामि। पापराक्षस्यै बलिभागं निवेदयामि। क्षेत्रपालं बलिभागं विवेदयामि।

### पुष्पांजलिम्-

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्रय दुःख भय हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता।।

**शक्ति स्वरूपा सुमंगलकारिणी, काज सवाँरती हो सबके माँ।**
**होति कृपा जो तुम्हारी रहे तो, बने सब काज न देर लगे माँ।।**
**सीता ने पूजा तुम्हारी किया तो, प्रसन्न हुई वर राम मिले माँ।।**
**मेरी भी कामना पूर्ण करो, मातु गौरी हमारा भी कष्ट हरो माँ।।**

## ।। श्री रामभद्र मंडल पूजनम् ।।

**ध्यानम्-** ॐ रक्ताम्भोजदलाभिरामनयनम् पीताम्बरालंकृतम्,
श्यामांगम् द्विभुजम् प्रसन्नवदनम् श्रीसीतया शोभितम्।
कारूण्यामृतसागरम् प्रियगणैर्भ्रात्रादिभिर्भावितम्,
वन्दे विष्णुशिवादि सेव्यमनिशम् भक्तेष्टसिद्धिप्रदम्।।

**आवाहनम्-** ॐ माहेश्वरि नमस्तुभ्यमिहागच्छ शिवप्रिये।
पूर्वभागे समातिष्ठ गृह्यतां पूजनं मम।। ॐ माहेश्वर्यै नमः।।
ॐ गणाधिपो नमस्तुभ्यमिहागच्छ गजानन।
पूर्वमागे समातिष्ठ पूजनं गृह्यतामिदम्।। ॐ गणाधिपतये नमः।।
ॐ महाशक्ते नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुभप्रदे।
पूर्वभागे समातिष्ठ पूजनं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ महाशक्तये नमः।।
ॐ महालक्ष्मि नमस्तुभ्यमिहागच्छ जगद्विते।
याम्यभागे समातिष्ठ पूजनं स्वीकुरुष्व मे।। ॐ महालक्ष्म्यै नमः।।
ॐ महादुर्गे नमस्तुभ्यमिहागच्छ सुरार्चिते।
पीठस्य पश्चिमे भागे तिष्ठ स्वीकुरु पूजनम्।। ॐ महादुर्गायै नमः।।
ॐ भो गायत्रि नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुभप्रदे।
तिष्ठ पीठोत्तरे भागे पूजनं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ गायत्र्यै नमः।।
ॐ भो सावित्रि नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुभ प्रदे।
तिष्ठ पीठोत्तरे भागे पूजनं स्वीकुरुश्व मे।। ॐ सावित्र्यै नमः।।
ॐ सरस्वति नमस्तुभ्यमिच्छ शुचिव्रते।
पीठस्योत्तरे भागे तिष्ठ पूजां प्रगृह्यताम्।। ॐ सरस्वत्यै नमः।।
ॐ नमो वः सर्वमातृभ्यः इहागच्छत तिष्ठत।
पीठस्योत्तरे भागे गृह्यतां मम पूजनम्।। ॐ सर्वमातृभ्यो नमः।।
ॐ सिद्धिदेवि नमस्तुभ्यमिहागच्छ सुखप्रदे।
ईशाने त्वं सदा तिष्ठ पूजनं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ सिद्धिदेव्यै नमः।।
ॐ बुद्धे नमोऽस्तुते मातरिहागच्छ सुभाषिणी।
ईशाने हि समाविष्ठ पूजनं स्वीकुरुष्व मे।। ॐ बुद्धिदेव्यै नमः।।
ॐ लोक मातर्नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुभप्रदे।
अग्निकोणे समाविष्ठ पूजनं प्रतिगृहानाम्।। ॐ लोकमात्रे नमः।।

ॐ महादेवि नमस्तुभ्यमिहागच्छ वरानने।
नैर्ऋत्ये तिष्ठ देवेशि पूजनं स्वीकुरुष्व मे।। ॐ महादेव्यै नमः।।
ॐ देवमातर्नमस्तुभ्यमिहागच्छ कृपाम्बुधे।
वायव्ये देवि संतिष्ठ पूजनं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ देवमात्रे नमः।।
ॐ नमो वो वास्तुदेवेभ्यः इहागच्छतु तिष्ठतु।
याम्यनैर्ऋत्योर्मध्ये गृह्यन्तां मम पूजनम्।। ॐ वास्तुदेवेभ्यो नमः।।
ॐ नमो वो लोकपालेभ्यः इहागच्छतु तिष्ठतु।
रक्षोवरुणयोर्मध्ये गृह्यतां पूजनं मम।। ॐ लोकपालेभ्यो नमः।।
ॐ भो मनोत्वमिहागच्छ नमस्तुभ्यं सुखप्रदे।
पश्चिमे ह्युपविश्याथ पूजनं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ श्री मनवे नमः।।
ॐ नमो वः श्रीवसिष्ठाद्या इहागच्छत तिष्ठत।
वायुवरुणयोर्मध्ये गृह्यतां पूजनं मम।। ॐ वसिष्ठादिभ्यो नमः।।
ॐ अधिप्रत्यधिदेवेभ्यः इहागच्छत तिष्ठत।
मारुतोत्तरयोर्मध्ये गृह्यतां पूजनं मम।। ॐ अधिप्रत्यधिदेवेभ्यो नमः।।
ॐ भो ब्रह्मन् त्वमिहागच्छ नमस्तुभ्यं सुराधिप।
उत्तरेशानयोर्मध्ये तिष्ठ गृह्णीष्व मेऽर्चनम्।। ॐ ब्रह्मणे नमः।।
नमोऽस्तु वो नवग्रहा इहागच्छत तिष्ठत।
ईशानपूर्वयोर्मध्ये पूजनं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ श्री नवग्रहेभ्यो नमः।।
ॐ नमो वो दशदिक्पाला इहा गच्छत तिष्ठत।
पूर्वाऽग्निकोणयोर्मध्ये गृह्यतां पूजनं मम।। ॐ दशदिक्पालेभ्यो नमः।।
ॐ गौरीपते नमस्तुभ्यमिहागच्छ महेश्वर।
अग्निदक्षिणयोर्मध्ये तिष्ठ पूजां गृहाण मे।। ॐ गौरीपतये नमः।।
ॐ अयोध्यायै नमस्तुभ्यमिहागच्छ सुखाम्बुधे।
मध्यभागे समा तिष्ठ पूजनं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ अयोध्यायै नमः।।
ॐ श्री सरय्वीश्वराराध्ये नमस्तुभ्यं जगद्धिते।
श्रीकोशलोत्तरे भागे तिष्ठ पूजां प्रगृह्यताम्।। ॐ श्रोसरय्यैनमः।।
ॐ गंगादेवि महाभागे इहागच्छ नमोऽस्तु ते।
पूर्वभागे समातिष्ठ पूजनं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ श्रीगंगादेव्यै नमः।।

ॐ भो भूशक्ते नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुभप्रदे।
याम्यभागे समातिष्ठ पूजनं स्वीकुरुष्व मे।। ॐ भूशक्तये नमः।।
ॐ वह्निवीज नमस्तुभ्यमिहागच्छ सुरार्चितः।
याम्यभागे सदा तिष्ठ पूजनं संगृहाण मे।। ॐ वह्निवीजाय नमः।।
ॐ भो केशरिन् नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुचिव्रत।
याम्यभागे सदा तिष्ठ पूजनं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ श्रीकेशरिणे नमः।।
ॐ भो सुषेण नमस्तुभ्यमिहागच्छ शुभप्रद।
याम्यभागे समाविष्ठ पूजनं स्वीकुरुष्व मे।। ॐ सुषेणाय नमः।।
ॐ ऋक्षराज नमस्तुभ्यमिहागच्छ महावल।
याम्यभागे समाविष्ठ पूजनं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ ऋक्षराजाय नमः।।
ॐ भो अंगद नमस्तुभ्यमिहागच्छ दृढ़व्रत।
याम्यभागे समातिष्ठ संगृहाण ममाऽर्चनम्।। ॐ श्री अङ्गदायनमः।।
ॐ भो सुग्रीव नमस्तुभ्यमिहागच्छ प्रभोः प्रिये।
दक्षिणे ह्युपविश्याथ गृह्यतामर्चनं मम।। ॐ श्रीसुग्रीवाय नमः।।
ॐ श्री विमलादिशक्तिभ्य इहागच्छत वो नमः।
पश्चिमे ह्युपविश्याथ पूजनं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ श्री विमलादिशक्तिभ्यो नमः।।
ॐ विभीषणाय नमस्तुभ्यमिहागच्छ प्रभोः प्रिये।
पीठकस्योत्तरे भागे पूजनं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ विभीषणाय नमः।।
ॐ नमो वो मन्त्रिणश्चाष्टमिहागच्छत तिष्ठत।
पूर्वभागे मया दत्तं गृह्यतां पूजनं मम।। ॐ अष्टमन्त्रिभ्यो नमः।।
ॐ श्रीमतेचक्रवर्तीन्द्र इहागच्छ नमोऽस्तुते।
पूर्वभागे समातिष्ठ श्रीकौशल्यादिभिः सह।। ॐ सपत्नीकाय दशरथाय नमः।।
ॐ श्रीलक्ष्मण नमस्तुभ्यमिहागच्छ सहप्रियः।
याम्यभागे समाविष्ठ पूजनं संगृहाण मे।। ॐ सपत्नीकाय लक्ष्मणाय नमः।।
ॐ श्रीभरत नमस्तुभ्यमिहागच्छ प्रियायुतः।
पीठकस्योत्तरे भागे तिष्ठ पूजां गृहाण मे।। ॐ सपत्नीकाय भरताय नमः।।
ॐ श्रीशत्रुघ्न नमस्तुभ्यमिहागच्छ प्रियायुतः।
पीठस्य पश्चिम भागे पूजनं स्वीकुरुष्व मे।। ॐ सपत्नीकाय शत्रुघ्नाय नमः।।

ॐ श्रीहनुमन् नमस्तुभ्यमिहागच्छ कृपानिधे।
पूर्वभागे समातिष्ठ पूजनं स्वीकुरु प्रभो।। ॐ श्री हनुमते नमः।।

**श्री राम ध्यानम्-** ॐ नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगम्, सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौमहासायकचारुचापम्, नमामि रामं रघुवंशनाथम्।।

ॐ वरेण्यः शारण्यः कपिपतिसखश्चान्तविधुरो,
ललाटे काश्मीरो रुचिरगतिभंगः शशिमुखः।
नराकारो रामो यतिपतिनुतः संसृतिहरो,
रमानाथो रामो रमतु मम चित्ते तु सततम्।।

ॐ आगच्छ देवदेवेश जानक्या सह राघव। गृहाण मम पूजां च वायुपुत्रादिभिर्युतः।।
ॐ सांगाय सपरिवाराय भगवान श्रीरामभद्राय नमः। आवाहयामि स्थापयामि ।।

## पूजनम्

पाद्यं, अर्घ्य, आचमनीयं, सर्वांगे स्नानीयं जलं समर्पयामि, पंचामृत स्नानं, शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि, यज्ञोपवीतं, वस्त्रं, उपवस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं, सुगन्धि द्रव्यं समर्पयामि, चंदनं, कुंकुमं, हरिद्रां, सिंदूरं समर्पयामि, अक्षतान, पुष्पाणि, दुर्वाकुरान्, बिल्वपत्राणि समर्पयामि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं निवेदयामि, मध्ये पानीयं, आचमनीयं जलं
ॐ प्राणाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा,अपानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा। उत्तरापोशनं, करोद्वर्तनार्थे चंदनं समर्पयामि, ॠतुफलं, सताम्बूल पूगीफलं, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि, नमस्करोमि।

## प्रार्थनाम्

ॐ नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगम्, सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महासायकचारूचापं, नमामि रामं रघुवंशनाथम्।।

श्री रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे, रघुनाथाय नाथाय सीताया पतये नमः ।।

लोकाभिरामं रणरंगधीरं, राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम्।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं, श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ।।

श्री रामभद्र सहित श्री रामभद्र मंडलोक्त देवताभ्यो नमः। प्रार्थनापूर्वकं नमस्करोमि ।

ॐ अनया पूजया श्री रामभद्र मंडल देवताः प्रीयन्तां न मम।। इति भूमौ जलं क्षिपेत्।।
श्रीरामभद्रमंडल देवता पूजन कर्मणो यन्न्यूनादिरिक्तं रामभद्र प्रसादात्परिपूर्णमस्तु।।

# श्री प्रधान यज्ञेश्वर पूजनम्

## ध्यानम् (श्री विष्णु जी)

ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्,
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्ण सुभांगम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिः ध्यानगम्यम्,
वन्दे विष्णुं भवभयहरंसर्वलोकैक नाथम्।।
ॐ प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री लक्ष्मीनारायणाभ्याम् नमः। ध्यानम् समर्पयामि।

अथवा

## ध्यानम् (श्री शिव जी)

ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरि निभं चारुचन्द्रा वतंसं,
रत्नाकल्पोज्वलांगं परशुमृगवरा भीति हस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैः व्याघ्रकृत्तिं वसानम्,
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।
ॐ प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री साम्बसदाशिवाय नमः। ध्यानम् समर्पयामि।

## ध्यानम् (श्री दुर्गा जी)

ॐ विद्युद्दाम् समप्रभाम् मृगपति स्कन्धस्थिताम् भीषणाम्,
कन्याभिः करवाल खेट विलसद् धस्ताभिरा सेवताम्।
हस्तैश्चक्र गदासि खेट विशिखां चापम् गुणम् तर्जनीम्,
बिभ्राणाम् अनलात्मिकाम् शशिधराम् दुर्गाम् त्रिनेत्राम् भजे।।
ॐ प्रधान यज्ञेश्वरि श्रीमद् आद्यशक्त्यै नमः। ध्यानम् समर्पयामि।

## अग्न्युत्तारण विधिः

तत्र आचार्यः पात्रान्तरे प्रतिमां निधाय, घृतेन आभ्यज्य, उपरि जलधारां कुर्यात्।
ॐ समुद्रस्य त्वावकयाग्ने परिव्ययामसि। पावको अस्म्मभ्य ग्वं शिवो भव।।
ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ग्ने परिव्ययामसि। पावुको अस्म्मब्भ्य ग्वं शिवो भव।।
ॐ अपामिदं न्ययन ग्वं समुद्रस्य निवेशनम्। अन्न्यास्ते अस्म्मत् तपन्तु हेतयः पावको अस्म्मब्भ्य ग्वं शिवो भव।।
ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे। अन्न्यांस्ते अस्म्मत् तपन्तु हेतयः पावको अस्म्मब्भ्य ग्वं शिवो भव।।

ॐ प्राणदा अपानदा व्यानदा वर्च्चोदा वरिवोदाः। अन्याँस्ते अस्म्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्म्मभ्य ग्वं शिवो भव।।

## प्राण प्रतिष्ठाम्

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्यां मूर्तौ प्राणाः इह प्राणाः।(पुनः)
ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्यां मूर्तौ जीव इह स्थितः।(पुनः)
ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्यां मूर्तौ सर्वेन्द्रियाणि वाङ्–मनस्त्वक्–चक्षुः–श्रोत्र–जिह्वा–घ्राण–पाणि–पाद–पायूस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।
ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ग्वं समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो 3 प्रतिष्ठ।।
ॐ अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु, अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।अस्यै देवत्वमर्चायै, मामहेति च कश्चन।।
ॐ प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री......... सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।।

## आसनम्

ॐ पुरुष एवेद ग्वं सर्व यद्भूतं यच्च भाव्यम्।उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनाति रोहति।।
श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री......... नमः।आसनम् समर्पयामि।
**पाद्यं, अर्घ्यं, आचमनीयम् जलम् समर्पयामि।** श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री..... नमः।

## पंचामृत स्नानम्

ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्त्रोतसः।सरस्वती तु पंचधासो देशे भवत्सरित्।।
ॐ पयो दधि घृतं चैव, मधु शर्करया युतं।पंचामृतं मयानीतं, स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम्।।
श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री...... नमः।मिलित पंचामृत स्नानम् समर्पयामि।

## शुद्धोदक स्नानम्

ॐ शुद्धवालः सर्व शुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।
ॐ मंदाकिन्यास्तु यद् वारि, सर्व पाप हरं शुभम्।तदिदं कल्पितं देवाः, स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
श्रीप्रधानयज्ञेश्वर भगवान श्री...नमः।शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।।

## यज्ञोपवीतम्

ॐ ब्रम्ह मयज्ञानम् प्रथमम् पुरस्तात् दिसीमतः सुरुचो वेन आवः। सबुध्न्या उपमा अस्यविष्टाः सतश्च योनिम सतश्चविवः।।
ॐ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं, त्रिगुणं देवतामयम्।उपवीतं मया दत्तं, गृहाण परमेश्वरः।।
श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री......... नमः। यज्ञोपवीतम् समर्पयामि।।

## वस्त्रम्–उपवस्त्रम्

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात् स उ श्रेयान् भवति जायमानः। तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

ॐ शीत वातोष्ण सन्त्राणं, लज्जाया रक्षणं परम्। देहालंकरणं वस्त्रं अतः शांतिं प्रयच्छ मे।।

श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री.... नमः।वस्त्रं–उपवस्त्रार्थे रक्तसूत्रं समर्पयामि।।

## आचमनीयम् जलम्

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।शंयोरभिस्त्र वन्तुनः।।

श्री प्रधानयज्ञेश्वर भगवान श्री.... नमः।यज्ञोपवीतांते, वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।।

## सुगन्धित द्रव्यम्

ॐ अहिरिवभोगैः पर्येति बाहुंज्याया हेतिम्परिबाधमानः। हस्तग्घ्नो विश्वा वयुना निविदान्पुमान्पुमा ग्वं सम्परिपातु विश्वतः।।

श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री......... नमः। सुगन्धित द्रव्यं समर्पयामि।

## चंदनम्–कुंकुमम्–हरिद्राम्–सिन्दूरम्

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनस्त्वाम् इन्द्रस्त्वाम् बृहस्पतिः।त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान यक्षमाद मुच्यत।।

ॐ श्री खण्डं चंदनं दिव्यं, गंधाढ्यं सुमनोहरम्।विलेपनं सुरश्रेष्ठ, चंदनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षाम्, नित्यपुष्टां करीषिणीम्।ईश्वरीं सर्व भूतानां, तामिहो पह्वये श्रियम्।।

ॐ हरिद्रां निर्मितं देव, सौभाग्यं सुखसम्पदाम्।अतस्त्वां पूजयिष्यामि, गृहाण परमेश्वर।।

ॐ सिंदूरं शोभनं दिव्यं, सौभाग्यं प्रियवर्धनम्।सुखदं मोक्षदं चैव, सिंदूरं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री....... नमः।चंदनं–कुंकुमं–हरिद्रां–सिन्दूरं समर्पयामि।।

## अक्षतान्

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत।अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्न विन्द्र ते हरी।।

ॐ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ, कुंकुमाक्ता सुशोभिताः।मया निवेदिता भक्त्या, गृहाण परमेश्वरः।।

श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री......... नमः। अक्षतान् समर्पयामि।।

## पुष्पम्–पुष्पमालाम्

ॐ ओषधीः प्रतिमो दद्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा इव सजित्वरीः वीरूधः पारयिष्णवः।।

ॐ माल्यादीनि सुगन्धीनि, मालत्यादीनि वै प्रभो।मया हृतानि पुष्पाणि, पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री......... नमः। पुष्पं–पुष्पमालां समर्पयामि।।

## दूर्वांकुरान्

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषष्परि।एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।

श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री......... नमः।दूर्वांकुरान् समर्पयामि।।

## तुलसी पत्राणि

ॐ यत्पुरुषं व्ययदधुः कतिधाव्य कल्प्पयन्।मुखंकिमस्यासीत् किम्बाहू किमूरू पादा उच्येते।।

ॐ तुलसीम् हेमरूपाम् च, रत्नरूपान्च मंजरीम्। भव मोक्ष प्रदाम् तुभ्यम्, अर्पयामि हरिप्रियाम्।।

श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री......... नमः।तुलसी पत्रात्रि समर्पयामि।।

## बिल्वपत्राणि

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुब्भ्याय चा हनन्याय च।।

श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री......... नमः। बिल्वपत्राणि समर्पयामि।।

## धूपम्

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं योऽस्म्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि वह्नितम ग्वं सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।।

ॐ वनस्पति रसोद्भूतो, गंधाढ्यो गंध उत्तमः। आघ्रेयः सर्व देवानां, धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री......... नमः। धूपं आघ्रापयामि।

## दीपम्

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा, सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा, अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा, सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा, ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।

ॐ साज्यं च वर्ति संयुक्तं, वह्निना योजितं मया।दीपं गृहाण देवेश, त्रैलोक्य तिमिरापहम्।।

श्री प्रधानयज्ञेश्वर भगवान श्री..... नमः।दीपम् प्रदर्शयामि।। **हस्तौ प्रच्क्षाल्य।।**

## नैवेद्यम्

ॐ अन्नपते अन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।प्रप्र दातारं तारिष ऊर्जम् नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

ॐ शर्करा खण्ड खाद्यानि, दधि क्षीर घृतानि च।आहारं भक्ष्य भोज्यं च, नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री......... नमः। नैवेद्यम् निवेदयामि।।

## आचमनीयम्

ॐ प्राणाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा।

श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री......... नमः। आचमनीयम्, मध्येपानीयम्, उत्तरापोशनम् समर्पयामि।

## करोद्वर्तनार्थे चन्दनम्

ॐ अ ग्वं शुना ते अ ग्वं शुः पृच्यतां परुषा परुः। गंधस्ते सोम मवतु मदाय रसो अच्युतः।।

ॐ चंदनं मलयोद्भूतं, कस्तूर्यादि समन्वितम्। करोद्वर्तनकं देव, गृहाण परमेश्वर।।

श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री........ नमः। करोद्वर्तनार्थे चन्दनम् समर्पयामि।।

## ऋतुफलम्

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व ग्वं हसः।।

ॐ इदं फलं मया देव, स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री......... नमः। ऋतुफलम् समर्पयामि।।

## सताम्बूल-पूगीफलम्

ॐ पातन्नो अश्विना दिवा पाहि नक्त ग्वं सरस्वती। दैव्या होतारा भिषजा पातमिन्द्र ग्वं सचासुते।।

ॐ पूगीफलं महदिव्यं, नागवल्ली दलैर्युतम्। एलादि चूर्ण संयुक्तं, ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री...... नमः। सताम्बूल-पूगीफलम् समर्पयामि।।

## द्रव्य दक्षिणाम्

ॐ हिरण्य गर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम्।।

ॐ हिरण्यगर्भ गर्भस्थं, हेमबीजं विभावसोः। अनंत पुण्य फलदं अतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री.... नमः। कृतायाः पूजायाः षाड्गुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि।।

## कर्पूर नीराजनम्

ॐ इद ग्वं हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर ग्वं सर्व गण ग्वं स्वस्तये। आत्क्म-सनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त।।

ॐ कदली गर्भ सम्भूतं, कर्पूरं च प्रदीपितं। आरार्तिकमहं कुर्वे, पश्य मे वरदो भव।।

श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री......... नमः। कर्पूर नीराजनं समर्पयामि।।

## मंत्र पुष्पांजलि:

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान् न्यासन्। तेह नाकम् महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः।।

ॐ नाना सुगन्ध पुष्पाणि, यथा कालोद्भवानि च।पुष्पांजलिः मया दत्ता, गृहाण परमेश्वरः।।

श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री......... नमः। मंत्र पुष्पांजलिम् समर्पयामि।।

## मानसिक प्रदक्षिणाम्

ॐ यानि कानि च पापानि, जन्मान्तर कृतानि च।तानि सर्वाणि नश्यन्तु, प्रदक्षिणा पदे–पदे।।

श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री......... नमः। प्रदक्षिणाम् समर्पयामि।।

## विशेष अर्घ्य:

ॐ नमस्ते देव देवेश, नमस्ते करुणाम्बुध।करुणाकर मे देव, गृहाणार्धम् नमोस्तुते।।

श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री......... नमः। विशेषार्घ्यम् समर्पयामि।।

## प्रार्थनाम्

ॐ पापोहं पापकर्माहं पापात्मा पापसंभवः।त्राहि मां पुण्डरीकाक्ष (पार्वतीनाथ) सर्वपाप हरो भव।।

श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री......... नमः। प्रार्थना पूर्वकम् नमस्करोमि।।

ॐ अनया पूजया श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री......प्रीयन्तां न मम।।इति भूमौ जलं क्षिपेत्।।

श्री प्रधान यज्ञेश्वर भगवान श्री......... पूजन कर्मणो यन्न्यूनादिरिक्तं........ प्रसादात्परिपूर्णमस्तु।।

## श्रीमद् भागवत महापुराण पूजनम्

श्रीमद् भागवत महापुराण वामे वेदिकायां तंडुलैः अष्टदलं कृत्वा मध्ये कलशं संस्थाप्य, कलश समीपे शालिग्रामं संस्थाप्य, तस्मिन् ईशानादि क्रमेण अष्टशक्तीनां स्थापनम्।

**ईशाने-** आवाहयामि देवेशीं, रुक्मिणीं कृष्ण बल्लभाम्।
गदा पद्म समायुक्तां, देवीम् आवाहयाम्यहम्।।

**ॐ रुक्मिण्यै नमः, रुक्मिणीम् आवाहयामि स्थापयामि।**

**पूर्वे-** सत्यभामां महाभागां, सर्व सिद्धि प्रदायिनीम्।
भौमासुर वधोपेतां, सत्यभामां आवाहयाम्यहम्।।

**ॐ सत्यभामायै नमः, सत्यभामाम् आवाहयामि स्थापयामि।**

**अग्नये-** जाम्बवतीं महाभागां, शुभांगीं जननीं शुभाम्।
कृष्णेन संस्थितां देवीं, शश्वत भक्त्या सदाम्बिकाम्।।

**ॐ जाम्बवत्यै नमः, जाम्बवतीम् आवाहयामि स्थापयामि।**

**दक्षिणे-** सत्यासत्ये समायुक्ते, त्रैलोक्य जननीं पुरा।
धर्मार्थ कामदां चैव, सत्यां आवाहयाम्यहम्।।

**ॐ सत्यायै नमः, सत्याम् आवाहयामि स्थापयामि।**

**नैऋत्ये-** सत्यां कृष्णेन संयुक्तां, देवासुर विराजिताम्।
पुत्रदां धनदां चैव, कालिन्दीम् शुभदाम् सदा।।

**ॐ कालिन्द्यै नमः, कालिन्दीम् आवाहयामि स्थापयामि।**

**पश्चिमे-** भद्रासनेन संयुक्तां, सर्वाभरण भूषिताम्।
मानवानां च देवानां, महाभय विनाशिनीम्।।

**ॐ मित्रविन्दायै नमः, मित्रविन्दाम् आवाहयामि स्थापयामि।**

**वायवे-** विष्णोः भगवतीं भार्याम्, सर्व विघ्न विनाशिनीम्।
हव्यं ददासि देवेभ्यः, कव्यं पितृभ्य एव च।।

**ॐ लक्ष्मणायै नमः, लक्ष्मणाम् आवाहयामि स्थापयामि।**

**उत्तरे-** चारुहास समायुक्ता, चारुनेत्र सुशोभिते।
चारुकेशवति देवि, आगच्छ चारुहासिनि।।

**ॐ चारुहासिन्यै नमः, चारुहासिनीम् आवाहयामि स्थापयामि।**

**मध्ये कलशोपरि-** ऊर्व्याः क्षीर समुद्रेऽस्मिन्, शीतचन्द्रे सकर्णिके।
तत्र त्वं सत्यया सार्द्धम्, सत्येश भव सन्निधौ।।

ॐ अष्टशक्ति सहित सत्येशाय नमः, सत्येशाम् आवाहयामि स्थापयामि।

**ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टशक्ति सहित सत्येशः सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।।**

षोडसोपचारैः सम्पूज्य।

## ॥ प्रार्थनाम् ॥

ॐ सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यम्, सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये।
सत्यस्य सत्यमृत सत्यनेत्रम्, सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नाः।।

ॐ ब्रम्हसत्रं करिष्यामि, तव अनुग्रहतो विभो।

तद् निर्विघ्नं भवेद् देव, रमानाथ क्षमस्व मे।।

**ॐ अनया पूजया श्री प्रधान यज्ञेश्वर श्री अष्टशक्ति सहित सत्य स्वरूप श्री राधारमण जी प्रीयन्तां न मम।। इति भूमौ जलं क्षिपेत्।।**

श्री प्रधान यज्ञेश्वर श्री अष्टशक्ति सहित सत्य स्वरूप श्री राधारमण जी पूजन कर्मणो यन्न्यूनादिरिक्तं श्री राधारमण जी प्रसादात्परिपूर्णमस्तु।।

**श्रीमद् भागवत महापुराण दक्षिणे वेदिकायां तंडुलैः अष्टदलं कृत्वा मध्ये कलशं संस्थाप्य, देव ऋषि स्थापनम्।**

## श्री अष्ट चिरंजीवी

ॐ अश्वत्थामा बलिः व्यासो, हनूमांश्च विभीषणः। कृपा परशुरामश्च, सप्तैते चिरजीविनः।।
अष्टमो मार्कण्डेय ज्ञानी, प्रवदन्ति मनीषिणः। यजमान गृहे नित्यं, सुखदाः सिद्धिदाः सदा।।

**भो श्री अश्वत्थामादि चिरंजीविन इहागत्य मम पूजां गृहाण वरदो भव।**

## श्री नर-नारायण

ॐ यो मायया विरचितं निजं आत्मनीदम्, खे रूप भेदमिव तत्प्रति चक्षणाय।
एतेन धर्म सदने ऋषि मूर्ति नाद्य, प्रादुश्चकार पुरुषाय नमः परस्मै।।

**भो श्री नर नारायण इहागत्य मम पूजां गृहाण वरदो भव।**

## श्री वायु देवता

ॐ अन्तः प्रविश्य भूतानि, यो विभर्त्यात्म केतुभिः।

अन्तर्यामी ईश्वरः साक्षात्, पातु नो यद्वशे स्फुटम्।।

**भो श्री वायु देव इहागत्य मम पूजां गृहाण वरदो भव।**

## श्री सद्गुरू देव

ॐ गुरूर्ब्रम्हाः गुरूर्विष्णुः, गुरूर्देवो महेश्वरः। गुरूः साक्षात् परब्रम्ह, तस्मै श्री गुरवे नमः।।

**भो श्री गुरू देव इहागत्य मम पूजां गृहाण वरदो भव।**

## श्री सरस्वती

ॐ या कुन्देन्दु तुषार हार धवला या शुभ्र वस्त्रावृता,

या वीणा वरदण्ड मण्डित करा या श्वेत पद्मासना।

या ब्रम्हाच्युत शंकर प्रभृतिभिः देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष जाड्यापहा।।

**भो श्री माता सरस्वती इहागत्य मम पूजां गृहाण वरदो भव।**

## श्री सप्तभागवत

ॐ शेषः सनत्कुमारश्च, सांख्यायन पराशरौ। वृहस्पतिश्च मैत्रेय, उद्धवश्चात्र कर्मणि।।
प्रत्यूह वृन्दं सततं, हरन्तां पूजिता मया।। भो श्री शेषादि इहागत्य मम पूजां गृहाण वरदो भव।

## श्री षट् पौराणिक

ॐ त्रय्यारुणिः कश्यपश्च, रामशिष्यः अकृतव्रणः। वैशम्पायन हारीतौ, षड् वै पौराणिकाः इमे।।
सुखदाः सन्तु मे नित्यम्, अनया पूजयार्चिताः।।
भो श्री षट् पौराणिकाः इहागत्य मम पूजां गृहाण वरदो भव।

## श्री वेद व्यास

ॐ नमस्तस्मै भगवते, व्यासाय अमित तेजसे। पपुर्ज्ञान मयं सौम्य, यन्मुखाम्बु रुहासवम्।।

**भो श्री कृष्णद्वैपायन व्यासदेव इहागत्य मम पूजां गृहाण वरदो भव।**

## श्री सूर्य नारायण

ॐ नमस्ते विश्वरूपाय, नमस्ते ब्रम्ह रूपिणे। सहस्त्र रश्मये नित्यं, नमस्ते सर्व तेजसे।।

**भो श्री सूर्यनारायण इहागत्य मम पूजां गृहाण वरदो भव।**

## श्री देवर्षि नारद

ॐ नमस्तुभ्यं भगवते, ज्ञान वैराग्य शालिने। नारदाय सर्व लोक, पूजिताय सुरर्षये।।

**भो श्री नारद इहागत्य मम पूजां गृहाण वरदो भव।**

## श्री शुकदेव

ॐ यः स्वानुभावमखिल श्रुति सारमेकम्, अध्यात्म दीपमति तितीर्षतां तमोन्धम्।
संसारिणां करुणयाह पुराण गुह्यम्, तं व्याससूनुम् उपयामि गुरुं मुनीनाम्।।

**भो श्री शुकदेव इहागत्य मम पूजां गृहाण वरदो भव।**

## श्री पुराण स्थापनम्-पूजनम्-प्रार्थनाम्

ॐ श्री मद् भागवत आख्योऽयं, प्रत्यक्षः कृष्ण एव हि।
स्वीकृतोऽसि मया नाथ, मुक्त्यर्थम् भव सागरे।।

मनोरथो मदीयोऽयं, सर्वथा सफलस्त्वया। निर्विघ्ने नैव कर्तव्यो, दासोऽहं तव केशव।।
ज्ञानं देहि यशो देहि, भगं देहि गतिं शुभाम्। ग्रन्थ उत्तम प्रसादेन, मुक्तोहं स्यां भवार्णवात्।।
ॐ नमो भगवते ग्रन्थोक्त श्री गोविन्दाय नमो नमः।।

## कथा वाचक पूजनम्

ॐ शुक रूप द्विज श्रेष्ठ, सर्व शास्त्र विशारद। एतद् कथा प्रकाशेन, मद् अज्ञानं विनाशय।।
संसार सागरे मग्नं, दीनं मां करुणानिधे। कर्म ग्राह गृहीतांगम्, मामुद्धर भवार्णवात्।।
**ॐ श्री शुकदेव मूर्तये द्विजाय नमः।।**

## यजमानाय आशीर्वादम्-चरणामृतम्

ॐ स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु,
गो वाजि हस्ति धन धान्य समृद्धिरस्तु।
ऐश्वर्यमस्तु बलमस्तु रिपुक्षयोस्तु,
वंशे सदैव भवताम् हरि भक्तिरस्तु।।

ॐ मंत्रार्थाः सफलाः सन्तु, पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रुणाम् बुद्धिनाशोस्तु, मित्राणामुदयस्तव।।
ॐ आयुष्कामो यशस्कामः, पुत्र पौत्रस्तथैव च, आरोग्यम् धन कामश्च, सर्वे कामा भवन्तु ते।।

## ।। श्री मंडलदेव हवन पद्धति।।

### संकल्पः (जलाक्षत द्रव्यं चादाय)

हरिः ॐ तत्सत् ॐ विष्णुः विष्णुः विष्णुः श्री मद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णो राज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रम्हणोन्हि द्वितीय परार्धे विष्णुपदे श्री श्वेतवाराह कल्पे वैवश्वत मन्वन्तरे अष्टाबिंशतितमे युगे कलियुगे कलि प्रथमचरणे कुमारिका क्षेत्रे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रम्हा-वर्तैक देशे श्री गंगायमुनयोः......दिग्विभागे कुरूक्षेत्राद्.......दिग्विभागेपुण्य क्षेत्रे......प्रान्ते......मंडले......जनपदे......नगरे......स्थाने देव ब्राम्हणानां संन्निधौ श्रीमन्नृपति वीर विक्रमादित्य समयतो श्री विष्णो बौद्धावतारे अस्मिन् प्रभवादि षष्टि सम्वत्सराणां मध्ये.....सम्वत्सरे.....श्री सूर्य.....अयने..... ऋतौ...... मासानांमासोत्तमे मास......मासे.......पक्षे......तिथौ.......वासरे.......नक्षत्रे.......योगे...... करणे एवं पंचांग शुद्धे.....राशि स्थिते सूर्ये.....राशि स्थिते चंद्रे......राशि स्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा राशि स्थान स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह गुणगण विशेषण विशिष्टानां

जन्मान्तर पुण्य फलोदय स्वरूपेण प्राप्ते पुण्य अवसरे .....गोत्रोत्पन्नः......नामोऽहं सपत्नीकोऽहं.........यागाख्ये कर्मणि ब्राम्हण द्वारा कुंड पूजनं, पंच भू संस्कार पूर्वकं अग्नि स्थापनं, आचार्यादि ब्राम्हण वरणं, कुशकण्डिका कर्मम्, सर्वे आवाहित देवानां हवनं, तर्पणं, मार्जनं, बलिदानं, पूर्णाहुतिम्, वसोर्धारां, भस्म धारणं, पूर्णपात्र दानम् अहं करिष्ये।।

**ॐ यज्जाग्ग्रतो दूरमुदैति दैवन्तदु सुप्तस्य तथैवैति।**
**दूरंगमन् ज्जयोतिषां ज्योतिरेकन् तन्नमे मनः शिव संकल्प्यमस्तु।।**

# कुंड पूजनम्

**कुशोदकेन कुण्डम् संप्रोक्ष्य-। कुंड मध्ये विश्वकर्मा आवाहनम्-**

ॐ आवाहयामि तत्कुंडं, विश्वकर्म विनिर्मितम्।शारीरं यच्च ते दिव्यं, अग्न्यधिष्ठान मद्भुतम्।।
हे कुंड तव निर्माणं, रचितं विश्वकर्मणा। अस्माकं वांच्छितां सिद्धिं, यज्ञ सिद्धिं ददातु भो।।
अज्ञानाज्ञानतो वापि, दोषाः स्युः खननोद्भवाः।
नाशय त्वं हि तान् सर्वान्, विश्वकर्मन् नमोस्तुते।। **(कुंड मध्ये)**
श्री विश्वकर्मणे नमः।सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।।

## उपरि मेखलायां ब्रम्हाणम् आवाहनम्

ॐ हंसपृष्ठ समारूढ़, देव देवगणावृत।रक्षार्थम् मम यज्ञस्य, कुंडेस्मिन् सन्निधो भव।।
श्री ब्रम्हणे नमः।सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।।

## मध्य मेखलायां विष्णुम् आवाहनम्

ॐ विष्णो यज्ञपते देव, दुष्ट दैत्य निषूदन। विभो यज्ञस्य रक्षार्थम्, कुंडेस्मिन् सन्निधो भव।। श्री विष्णवे नमः।सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।।

## अधो मेखलायां रुद्रम् आवाहनम्

ॐ गंगाधर महादेव, वृषारूढ़ महेश्वर।आगच्छ भगवन् रुद्र, कुंडेस्मिन् सन्निधो भव।।
श्री रुद्राय नमः।सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।।

## योन्ये गौरीम् आवाहनम्

ॐ मनोभवयुता देवी, अति सौख्य प्रदायिनी। मोहयित्री सुरान् सर्वान्, जगद् धात्री नमोस्तुते।। श्री गौर्यै नमः।सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।।
**कण्ठे-** ॐ कंठाय नमः।सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।।

**नाभ्ये-** नाभ्यै नमः।सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ।।

**कुंड मध्ये नैऋत्य कोणे-** ॐ वास्तुपुरुषाय नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ।।

**कुंड मध्ये-** ॐ ब्रम्हणे नमः।ॐ विष्णवे नमः।ॐ रुद्राय नमः।ॐ कूर्माय नमः।
ॐ अनन्ताय नमः।ॐ हिरण्यगर्भाय नमः।ॐ श्रीकंठाय नमः।ॐ धनदाय नमः।
ॐ शिवाय नमः। ॐ धर्माय नमः। ॐ सूर्याय नमः। ॐ कुंडस्थदेवताभ्यो नमो नमः।।
सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि ।।

## अग्नि स्थापनम्

कुशैः परिसमूह्य कुंड प्रक्षाल्य, तान् कुशान् ईशान्यां परित्यज्य।

**कुशो से कुंड साफ कर ईशान में फेंकें।**

श्रुवमूलेन प्रागग्रं प्रादेशमात्रम् उत्तरोत्तर कमेण त्रिः रेखां उल्लिख्य, **''ह्रीं''** इति बीजमंत्र उच्चारय अनामिकां अंगुष्ठाभ्यां मृदम् उद्धृत्य, उदकेन प्रक्षाल्य, त्रिकोणं निर्मित्वा मध्ये **''रं''** इति लिखित्वा अग्निम् स्थापयेत्।**पूर्व की ओर मुख करके उत्तर से उत्तर की तरफ श्रुवमूल से तीन रेखायें खीचें।** **''ह्रीं''** मंत्र बोलते हुए अनामिका अंगूठे से मिट्टी उठाकर कुंड के बाहर फेकें, जल का छींटा दें। कुंड के बीच में रोली से त्रिकोण बनाकर **''रं''** लिखकर अग्नि स्थापन करें।

### ध्यानम्-आवाहनम्-प्रतिष्ठाम्

ॐ चत्वारि श्रृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य त्रिधा बद्धो बृषभो रोरवीति महोदेवो मर्त्या ग्वं आविवेश ।।

ॐ अग्निदूतं पुरोदधे हव्यवाह मुपब्रुवे।देवां आसादयादिह ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने वैश्वानरः शाण्डिल्य गोत्रः शाण्डिलासित देवलेति त्रिप्रवरान्विताः भूमि माता वरुण पिता पश्चिम चरण पूर्व शिर स्कन्ध ऊर्ध्व पाद पाताल दृष्टिः गोचर प्रांग्मुख मम सम्मुखो वरदो भव अग्ने त्वं स्वागतो भव।

ॐ कनकायै नमः। ॐ रक्तायै नमः। ॐ कृष्णायै नमः। ॐ उद्गारिण्यै नमः।
ॐ सुप्रभायै नमः। ॐ बहुरूपायै नमः। ॐ अतिरिक्तायै नमः।
श्री अग्नये नमः।ध्यानम्–आवाहनम्–प्रतिष्ठाम् समर्पयामि।

## पूजनम्

पाद्यं, अर्घ्य, आचमनीयं, सर्वांगे स्नानीयं घृतं समर्पयामि, वस्त्रं, उपवस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं घृतं समर्पयामि, चंदनं, कुंकुमं, हरिद्रां, सिंदूरं समर्पयामि, अक्षतान, पुष्पाणि, दुर्वांकुरान्, बिल्वपत्राणि समर्पयामि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं निवेदयामि, आचमनीयं घृतं– प्राणाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा। ऋतुफलं, सताम्बूल पूगीफलं, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि, नमस्करोमि।

## प्रार्थनाम्

ॐ अग्निं प्रज्वलितं वंदे, जातवेदं हुताशनम्। हिरण्य वर्णम् अनलं, समृद्ध्यं विश्वतो मुखम्।। श्री अग्नये नमः। प्रार्थना पूर्वकम् नमस्करोमि।।

**अनया पूजया अग्नि देवता प्रीयताम् न मम।।**

## ब्राम्हण वरणम्

ॐ अद्येत्यादि पूर्व उच्चारित कर्तव्य........होम कर्मणि कृताकृत वेक्षणरूप ब्रम्ह कर्म कर्तुम्. .......गोत्रे.......नाम्नि ब्राम्हणे ब्रम्हत्वेन त्वाम् अहम् वृणे।।

## ब्रह्मा पूजनम्

**ततो अग्नेः दक्षिणतः ब्रम्होपवेशनम्, स्थापनम्, पूजनम्-** (अग्नि से दक्षिण ब्रम्हा)

पंचाशत् कुश निर्मितं ब्रम्हाणं अग्नि प्रदक्षिणां कारयित्वा कल्पित आसने उपविश्य गंधाक्षतादिभिः सम्पूजयेत्।

ॐ ब्रम्ह यज्ञानम् प्रथमम् पुरस्ताद् विसीमतः सुरुचोव्वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।।

ॐ अस्मिन्....... होम कर्मणि त्वं मे ब्रम्हा भव।। पूजयामि, नमस्करोमि।।

**ततः प्रणीता-प्रोक्षणी पात्रद्वयं वारिणा परिपूर्य, त्रिकुशैः आच्छाद्य, ब्रम्हणो मुखं अवलोक्य, अग्नेरुत्तरतः कुशोपरि निदध्यात्।**

प्रोक्षणी, प्रणीता में जल भरकर तीन कुशो से ढककर ब्रम्हा का मुख दिखाकर अग्नि के उत्तर में कुशासन पर रखें।

**ततः षोडश कुशान् आदाय, चतुर्भिः चतुर्भिः कुशैः कुंड परितः प्रसार्य।**
16 कुश लेकर, 4–4 अलग कर लें, कुंड के चारो तरफ रखें।
**आग्नेयाद् ईशान पर्यन्तम् उत्तराग्रैः।** अग्निकोण से ईशान तक, अग्र भाग उत्तर में।
**ब्रम्हणो अग्नि पर्यन्तम् प्रागग्रैः।** ब्रम्हा से अग्निकुंड के बीच में, अग्र भाग पूर्व में।
**नैऋ त्याद् वायव्याम् उत्तराग्रैः।** नैऋत्यकोण से वायु तक, अग्र भाग उत्तर में।
**अग्नितः प्रणीता पर्यन्तम् प्रागग्रैः।** अग्निकुंड से प्रणीता के बीच में, अग्र भाग उत्तर में।
**इतरथावृत्तिः।** हाथ में जल लेकर हवन कुंड के चारो तरफ उल्टा घुमायें।

## पात्र आसादनम्

अग्नेरुत्तरतः पश्चिम दिशि पृथक–2 पवित्रच्छेदनार्थे त्रीणि तथा मूलरहित पत्रद्वयम्। अग्नि से उत्तर दिशा में अलग–2 पवित्र छेदन के लिए तीन व जड़ रहित दो कुशापत्र रखें।
**आज्यस्थाली**-(घी का पात्र) **चरुस्थाली**-(सामग्री पात्र) **सम्मार्जनार्थम् पंच कुशा**-(सम्मार्जन के लिए 5 कुशा) **उपयमनार्थम् वेणी रूपं सप्त कुशा**- (उपयमन के लिए वेणीरूप 7 कुशा) **समिधस्तिस्त्र**-(3 समिधा) **श्रुव**-(श्रुवा) **आज्यम्**-(घी) **पूर्णपात्रम्**-(पूर्णपात्र) **दक्षिणाम्**-(दक्षिणा) आदि वहीं पश्चिम में रखें।

## पवित्रच्छेदनम्

**द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय**-(2 के ऊपर 3 कुशा रखें) **अग्रतः प्रादेशमात्रंविहाय दक्षिणावर्त ग्रन्थिम् दत्वा**-(आगे से 1बीता छोड़कर दाहिनी तरफ घुमाकर गाँठ लगाकर) **त्रिभिश्छद्य**-(3 कुशा तोड़ दें) **द्वौ ग्राह्यौ, त्रिस्त्याज्य**-(2 ग्रहण करें, 3 त्याग दें) **अनामिका अंगुष्ठाभ्यां द्वे गृहीत्वा,**(अनामिका अंगूठे में 2 कुशा पकड़कर) **प्रणीतापात्र जलम् त्रिवारं प्रोक्षणी पात्रे क्षिपेत्**-(प्रणीता के जल को 3 वार प्रोक्षणी में छोड़े) **प्रोक्षणी पात्र जलं कुशाद् त्रिरुत्पवनम्**-(प्रोक्षणी के जल को कुशा से 3 बार उछालें) **प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीम् अभिषिच्य**-(प्रणीता जल को प्रोक्षणी में छिड़के) **प्रोक्षणी जलेन आज्यस्थाल्याः, चरुस्थाल्याः, सम्मार्जन कुशानां, उपयवन कुशानां, समिधां, श्रुवस्य, आज्यस्य, पूर्णपात्रं, उपकल्पनीयानांपदार्थानां प्रोक्षणम्**-(प्रोक्षणी जल से यज्ञीय वस्तुओं को पवित्र करें)।।
**प्रणीताग्न्योरन्तराले प्रोक्षणी पात्रं निदध्यात्**-(अग्नि व प्रणीता के बीच में प्रोक्षणी रखें)

**आज्यस्थाल्यां आज्य निर्वापः**-(घी के पात्र में घी भरें) **तद् आज्यं अग्नावधिश्रित्य**-(अग्नि में घी गर्म करें) **''वं'' इति बीज मंत्रेण ज्वल दर्भादि आज्यस्योपरि प्रदक्षिणम् समन्तात् भ्रामयित्वा, इतरथावृत्तिः तद् दर्भम् अग्नौ क्षिपेत्**-(वं बीजमंत्र बोलते हुए कुशा जलाकर घी के ऊपर घुमाकर अग्नि में छोड़ दें)

**जल स्पर्श**- (जल स्पर्श करें) **चरुस्थाल्यांप्रणीतोदक असेक पूर्वकं तण्डुल प्रक्षेप**-(चरुस्थाली में प्रणीता जल से चावल पवित्र कर डालें घी आदि डालकर अग्नि में पकायें) **अर्धश्रिते चरौ अधो मुखस्य श्रुवस्यप्रतपनम्**-(चावल के आधे पक जाने पर श्रुवा का मुख नीचे करके अग्नि में तपायें) **सम्मार्जन कुशैः श्रुवस्य ऊर्ध्व मुखस्य सम्मार्जनम्**-(सम्मार्जन कुशा से श्रुवा पर जल छिड़कें) **सम्मार्जन कुशां अग्नौ प्रक्षेप**-(सम्मार्जन कुशा अग्नि में छोड़ दें) **पुनः श्रुवस्य प्रतपनम् दक्षिण भागे निधाय, सम्पूजयेत्**- .

(फिर श्रुवा को अग्नि में तपाकर दाहिनी तरफ रखकर पूजन करें।

**ॐ आवाहयाम्यहं देवं श्रुवं शेवधिमुत्तमम्।**

**स्वाहाकार स्वधाकार वषट्कार समन्वितम्।।**

**आज्यस्योत्तरतः चरुं स्थापयेत्**- (आज्यस्थाली के उत्तर में चरु रखें) **कुशाद् आज्योत्पवनम्**- (कुशा से घी उछालें) **आज्यावेक्षणम्**- (घी का निरीक्षण करें) **प्रोक्षण्युत्पवनम्**- (प्रोक्षणी जल घृतपात्र में छिड़कें) **वाम हस्ते उपयमन सप्त कुशान् आदाय**- (उपयमन वेणीरूप 7 कुशा वायें हाथ में लेकर) **उत्तिष्ठन् घृताक्तः समिधस्तित्रः प्रजापतिम् मनसा ध्यात्वा अग्नौ क्षिपेत्**- (खड़े होकर मौन होकर तीनों समिधा अलग–2 घी में डुबोकर अग्नि में डालें)। **उपविश्य कुश पत्रद्वयम् प्रोक्षणी जलेन सपवित्र हस्तेन ईशानादि अग्नेः प्रदक्षिणम् पर्युक्षणम्, अग्नि सिंचनम्, इतरथावृत्ति**- (दो कुशो से प्रोक्षणी जल ईशान से शुरू करके सीधा व उल्टा कुंड के चारो तरफ घुमायें व अग्नि सिंचन करें) **कुशद्वयोः प्रणीता पात्रे निधाय**- (दोनों कुशों को प्रणीता पात्र के ऊपर रख दें)

**पातित दक्षिण जानु**- (दाहिना घुटना मोड़कर) **कुशेन् ब्रम्हणान् वारब्ध**- (ब्रम्हा से कुशों द्वारा सम्बंध करके) **दक्षिण हस्ते शंख संनिभ मुद्रया श्रुवं गृहीत्वा मनसा प्रजापतिम् ध्यात्वा आज्य होम**- (दाहिने हाथ की अँगुलियों को शंख मुद्रा से श्रुवा पकड़कर प्रजापति का मन से ध्यान करते हुए पहली घी की आहुति दें।

## आज्य होमः (प्रथम घृताहुति में यजमान स्वाहा न बोलें)

**अग्ने उत्तर भागे-** ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।।
**अग्ने दक्षिण भागे-** ॐ इन्द्राय स्वाहा।इदं इन्द्राय न मम।।
**अग्नि मध्ये-** ॐ अग्नये स्वाहा।इदं अग्नये न मम।। ॐ सोमाय स्वाहा।
इदं सोमाय न मम।।ॐ भूः स्वाहा।इदं अग्नये न मम।।
ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम।। ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।।

**यजमानोपरि जलं प्रक्षेपः-** ॐ यथा बाण प्रहाराणां कवचं वारकम् भवेत्। तद् वद् दैवोपघातानाम् शांतिर्भवति वारिका।। **शांतिरस्तु पुष्टिरस्तु यत्पापम् रोगम् अकल्याणम् तद् दूरे प्रतिहतमस्तु, द्विपदे चतुष्पदे सुशांतिर्भवतु।।**

## सर्व प्रायश्चित्त संज्ञक वारुण होमः

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान देवस्य हेडो अवियासि सीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ग्वं सि प्रमु मुग्ध्यस्मत् स्वाहा।।**इदं अग्नीवरुणाभ्याम् न मम।।**

ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्टो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुण ग्वं रराणो वीहि मृडीक ग्वं सुहवो न एधि स्वाहा।।**इदं अग्नीवरुणाभ्याम् न मम।।**

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया असि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ग्वं स्वाहा।। **इदं अग्नये न मम।।**

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेर्भिनो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुन्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।। **इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।।**

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्म दवाधमं विमध्यम ग्वं श्रथाय।अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा।। **इदं वरुणाय न मम।।**

**ततः वायव्यकोणे गंधाक्षतपुष्पैः अग्निम् सम्पूज्य, आवाहितदेवानां होमः।**

## चरू होमः (आवाहित देवानाम्)

ॐ गणानां त्वा गणपति ग्वं हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपति ग्वं हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ग्वं हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।।
ॐ गणपतये स्वाहा। **इदं गणपतये न मम।।**

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्।। ॐ गौर्यै स्वाहा। **इदं गौर्यै न मम।।**

ॐ वरुणस्योतम् भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्त्थो वरुणस्य ॠत सदन्यसि वरुणस्य ॠत सदन्मसि वरुणस्य ॠत सदन्मासीद ।।

ॐ वरुणाय स्वाहा।इदं वरुणाय न मम ।।

## श्री षोडश मातृका होमः

ॐ गौर्यै स्वाहा।ॐ पद्मायै स्वाहा।ॐ शच्यै स्वाहा।ॐ मेधायै स्वाहा।

ॐ सावित्र्यै स्वाहा।ॐ विजयायै स्वाहा।ॐ जयायै स्वाहा।ॐ देवसेनायै स्वाहा।

ॐ स्वधायै स्वाहा।ॐ स्वाहायै स्वाहा।ॐ मातृभ्यो स्वाहा। ॐ लोकमातृभ्यो स्वाहा।

ॐ धृत्यै स्वाहा।ॐ पुष्ट्यै स्वाहा।ॐ तुष्ट्यै स्वाहा।ॐ आत्मकुलदेवतायै स्वाहा।।

**अनेन शाकल्यादि होमेन गौर्यादि षोडश मातृकाः प्रीयन्ताम् न मम।।**

## श्री सप्तघृत मातृका होमः

ॐ श्रियै स्वाहा।ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा।ॐ धृत्यै स्वाहा।ॐ मेधायै स्वाहा।

ॐ स्वाहायै स्वाहा।ॐ प्रज्ञायै स्वाहा।ॐ सरस्वत्यै स्वाहा।।

अनेन शाकल्यादि होमेन सप्तघृत मातृकाः प्रीयन्ताम् न मम।।

## श्री चतुःषष्टि योगिनी होमः

ॐ भूर्भुवः स्वः महाकाल्यै स्वाहा।ॐ भूर्भुवः स्वः महालक्ष्म्यै स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः महासरस्वत्यै स्वाहा।।

ॐ गजाननायै स्वाहा। ॐ सिंहमुख्यै स्वाहा। ॐ गृधास्यायै स्वाहा। ॐ काकतुण्डिकायै स्वाहा। ॐ उष्ट्ग्रीवायै स्वाहा।ॐ हयग्रीवायै स्वाहा।ॐ वाराह्यै स्वाहा।ॐ शरभाननायै स्वाहा। ॐ उलूकिकायै स्वाहा। ॐ शिवारवायै स्वाहा। मयूर्यै स्वाहा। विकटाननायै स्वाहा। ॐ अष्टवक्रायै स्वाहा। ॐ कोटराक्ष्यै स्वाहा। ॐ कुब्जायै स्वाहा। ॐ विकट–लोचनायै स्वाहा। ॐ शुष्कोदर्यै स्वाहा।ॐ ललजिव्हायै स्वाहा।ॐ स्वदंष्टायै स्वाहा।

ॐ वानराननायै स्वाहा।ॐ रुक्षाक्ष्यै स्वाहा।ॐ केकराक्ष्यै स्वाहा।ॐ बृहत्तुण्डायै स्वाहा।

ॐ सुराप्रियायै स्वाहा।ॐ कपालहस्तायै स्वाहा।ॐ रक्ताक्ष्यै स्वाहा।ॐ शुक्यै स्वाहा।

ॐ श्येन्यै स्वाहा।ॐ कपोतिकायै स्वाहा। ॐ पाशहस्तायै स्वाहा।ॐ दण्डहस्तायै स्वाहा।

ॐ प्रचण्डायै स्वाहा।ॐ चण्डविक्रमायै स्वाहा।ॐ शिशुघ्न्यै स्वाहा।ॐ पापहन्त्र्यै स्वाहा।

ॐ काल्यै स्वाहा।ॐ रुधिरपायिन्यै स्वाहा।ॐ वसाधयायै स्वाहा।ॐ गर्भभक्षायै स्वाहा।

ॐ शवहस्तायै स्वाहा। ॐ आन्त्रमालिन्यै स्वाहा। ॐ स्थूलकेश्यै स्वाहा। ॐ बृहत्कुक्ष्यै स्वाहा। ॐ सर्पास्यायै स्वाहा। ॐ प्रेतवाहनायै स्वाहा। ॐ दन्दशूककरायै स्वाहा।
ॐ क्रौन्च्यै स्वाहा। ॐ मृगशीर्षायै स्वाहा। ॐ बृषाननायै स्वाहा। ॐ व्यात्तास्यायै स्वाहा।
ॐ धूमनिःश्वासायै स्वाहा। ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे स्वाहा। ॐ तापिन्यै स्वाहा।
ॐ शोषणीदृष्ट्यै स्वाहा। ॐ कोटर्यै स्वाहा। ॐ स्थूलनाशिकायै स्वाहा। ॐ विद्युत्प्रभायै स्वाहा। ॐ बलाकास्यायै स्वाहा। ॐ मार्जायै स्वाहा। ॐ कटपूतनायै स्वाहा।
ॐ अट्टाट्टहासायै स्वाहा। ॐ कामाक्ष्यै स्वाहा। ॐ मृगाक्ष्यै स्वाहा। ॐ मृगलोचनायै स्वाहा।। **अनेन शाकल्यादि होमेन चतुःषष्टि योगिन्याम् प्रीयन्ताम् न मम।।**

## श्री नवग्रह मंडल देवता होमः

**अर्कम्** - ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यन्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।। ॐ सूर्याय स्वाहा। **इदं सूर्याय न मम।।**

**पलाशम्** - ॐ इमं देवा असपत्न ग्वं सुबध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते जान राज्याय इन्द्रस्य इन्द्रियाय। इममुमुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमष्यै विश एष वोमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राम्हणाना ग्वं राजा।। ॐ सोमाय स्वाहा। **इदं सोमाय न मम।।**

**खदिर** - ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ग्वं रेता ग्वं सि जिन्वति। भौमाय स्वाहा। **इदं भौमाय न मम।।**

**अपामार्गम** - ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टा पूर्ते स ग्वं सृजेथामयं च। अस्मिन् सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।। ॐ बुधाय स्वाहा। **इदं बुधाय न मम।।**

**अश्वत्थम** - ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दी दयच्छ वसऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।। ॐ बृहस्पतये स्वाहा। **इदं बृहस्पतये न मम।।**

**उदुम्बरम्** - ॐ अन्नात् परिस्त्रुतो रसं ब्रम्हणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः।
ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ग्वं शुक्रमन्धस इन्द्रस्य इन्द्रियमिदं पयो मृतं मधु।।
ॐ शुक्राय स्वाहा। **इदं शुक्राय न मम।।**

**शमीम्** - ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्त्रवन्तु नः।।
ॐ शनैश्चराय स्वाहा। **इदं शनैश्चराय न मम।।**

**दूर्वाम्** - ॐ कया नश्चित्र आभुव दूती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।।
ॐ राहवे स्वाहा। **इदं राहवे न मम।।**
**दर्भम्** - ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजा यथाः।।
ॐ केतवे स्वाहा। **इदं केतवे न मम।।**
**अधिदेवता** - ॐ ईश्वराय स्वाहा। ॐ उमायै स्वाहा। ॐ स्कन्दाय स्वाहा। ॐ विष्णवे स्वाहा। ॐ ब्रम्हणे स्वाहा। ॐ इन्द्राय स्वाहा। ॐ यमाय स्वाहा। ॐ कालाय स्वाहा। ॐ चित्रगुप्ताय स्वाहा।
**प्रत्यधिदेवता** -ॐ अग्नये स्वाहा। ॐ अद्भ्यो स्वाहा। ॐ पृथिव्यै स्वाहा। ॐ विष्णवे स्वाहा। ॐ इन्द्राय स्वाहा। ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा। ॐ प्रजापतये स्वाहा। ॐ सर्पेभ्यो स्वाहा। ॐ ब्रम्हणे स्वाहा।।
**पंचलोकपालदेवता**-ॐ गणपतये स्वाहा। ॐ दुर्गायै स्वाहा। ॐ वायवे स्वाहा। ॐ आकाशाय स्वाहा। ॐ अश्विभ्याम् स्वाहा।। **ॐ वास्तोष्पते स्वाहा। ॐ क्षेत्राधिपतये स्वाहा।।**
**दशदिक्पालदेवता** -ॐ इन्द्राय स्वाहा। ॐ अग्नये स्वाहा। ॐ यमाय स्वाहा। ॐ नैर्ऋते स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ वायवे स्वाहा। ॐ सोमाय स्वाहा। ॐ ईश्वराय स्वाहा। ॐ ब्रम्हणे स्वाहा। ॐ अनंताय स्वाहा।।
अनेन शाकल्यादि होमेन सूर्यादि अनन्तान्त देवताः प्रीयन्ताम् न मम।।

## श्री वास्तु मंडल देवता होमः

ॐ शिखिने स्वाहा। ॐ पर्जन्याय स्वाहा। ॐ जयन्ताय स्वाहा। ॐ कुलिशायुधाय स्वाहा। ॐ सूर्याय स्वाहा। ॐ सत्याय स्वाहा। ॐ भृशाय स्वाहा। ॐ आकाशाय स्वाहा। ॐ वायवे स्वाहा। ॐ पूष्णे स्वाहा। ॐ वितथाय स्वाहा। ॐ गृहक्षताय स्वाहा। ॐ यमाय स्वाहा। ॐ गन्धर्वाय स्वाहा। ॐ भृंगराजाय स्वाहा। ॐ मृगाय स्वाहा। ॐ पितृभ्यो स्वाहा। ॐ दौवारिकाय स्वाहा। ॐ सुग्रीवाय स्वाहा। ॐ पुष्पदन्ताय स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ असुराय स्वाहा। ॐ शोषाय स्वाहा। ॐ पापाय स्वाहा। ॐ रोगाय स्वाहा। ॐ अहये स्वाहा। ॐ मुख्याय स्वाहा। ॐ भल्लाटाय स्वाहा। ॐ सोमाय स्वाहा। ॐ सर्पाय स्वाहा। ॐ अदित्यै स्वाहा। ॐ दित्यै स्वाहा। ॐ आपाय स्वाहा। ॐ सावित्राय स्वाहा। ॐ जयाय स्वाहा। ॐ रुद्राय स्वाहा। ॐ अर्यमणे स्वाहा। ॐ सवित्रे स्वाहा। ॐ विवस्वते स्वाहा। ॐ विवुधाधिपाय स्वाहा। ॐ मित्राय स्वाहा। ॐ राजयक्ष्मणे स्वाहा। ॐ पृथिवीधराय स्वाहा। ॐ आपवत्साय स्वाहा। ॐ ब्रम्हणे स्वाहा। ॐ चरक्यै स्वाहा। ॐ विदार्यै स्वाहा। ॐ पूतनायै स्वाहा। ॐ पापराक्षस्यै स्वाहा। ॐ स्कन्दाय स्वाहा। ॐ अर्यमणे स्वाहा।

ॐ जृम्भकाय स्वाहा। ॐ पिलिपिच्छाय स्वाहा। ॐ इन्द्राय स्वाहा। ॐ अग्नये स्वाहा। ॐ यमाय स्वाहा। ॐ निर्ऋतये स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ वायवे स्वाहा। ॐ कुबेराय स्वाहा। ॐ ईश्वराय स्वाहा। ॐ ब्रम्हणे स्वाहा। ॐ अनन्ताय स्वाहा। ॐ वास्तोष्पतये स्वाहा।। अनेन शाकल्यादि होमेन वास्तुमंडल देवताः प्रीयन्ताम् न मम।।

## श्री क्षेत्रपाल मंडल होमः

ॐ क्षेत्रपालाय स्वाहा। ॐ अजराय स्वाहा। ॐ व्यापकाय स्वाहा। ॐ इन्द्रचौराय स्वाहा। ॐ इन्द्रमूर्तये स्वाहा। ॐ कूष्माण्डाय स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ वटुकाय स्वाहा। ॐ विमुक्ताय स्वाहा। ॐ लिप्तकाय स्वाहा। ॐ लीलाकाय स्वाहा। ॐ एकदंष्टाय स्वाहा। ॐ ऐरावताय स्वाहा। ॐ ओषधिघ्नाय स्वाहा। ॐ बन्धनाय स्वाहा। ॐ दिव्यकाय स्वाहा। ॐ कम्बलाय स्वाहा। ॐ भीषणाय स्वाहा। ॐ गवयाय स्वाहा। ॐ घण्टाय स्वाहा। ॐ व्यालाय स्वाहा। ॐ अणवे स्वाहा। ॐ चन्द्रवारुणाय स्वाहा। ॐ पटाटोपाय स्वाहा। ॐ जटिलाय स्वाहा। ॐ क्रतव स्वाहा। ॐ घण्टेश्वराय स्वाहा। ॐ विटंकाय स्वाहा। ॐ मणिमानाय स्वाहा। ॐ गणबन्धवे स्वाहा। ॐ डामराय स्वाहा। ॐ ढुण्डिकर्णाय स्वाहा। ॐ स्थविराय स्वाहा। ॐ दन्तुराय स्वाहा। ॐ नागकर्णाय स्वाहा। ॐ धनदाय स्वाहा। ॐ महाबलाय स्वाहा। ॐ फेत्काराय स्वाहा। ॐ चीत्काराय स्वाहा। ॐ सिंहाय स्वाहा। ॐ मृगाय स्वाहा। ॐ यक्षाय स्वाहा। ॐ मेघवाहनाय स्वाहा। ॐ तीक्ष्णोष्ठाय स्वाहा। ॐ अनलाय स्वाहा। ॐ शुक्लतुण्डाय स्वाहा। ॐ सुधालापाय स्वाहा। ॐ बर्बरकाय स्वाहा। ॐ सवनाय स्वाहा। ॐ पावनाय स्वाहा।।

अनेन शाकल्यादि होमेन क्षेत्रपाल मंडल देवताः प्रीयन्ताम् न मम।।

## यज्ञ मण्डपाधिष्ठातृ देवता होमः

ॐ ब्रम्हणे स्वाहा। ॐ सावित्र्यै स्वाहा। ॐ वास्तुदेवतायै स्वाहा। ॐ ब्राह्मयै स्वाहा। ॐ गंगायै स्वाहा। ॐ नागमात्रे स्वाहा। ॐ विष्णवे स्वाहा। ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा। ॐ आदित्यायै स्वाहा। ॐ वैष्णव्यै स्वाहा। ॐ वसुदायै स्वाहा। ॐ शिवायै स्वाहा। ॐ गौर्यै स्वाहा। ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा। ॐ शोभनाय स्वाहा। ॐ भद्रायै स्वाहा। ॐ इन्द्राय स्वाहा। ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा। ॐ आनन्दायै स्वाहा। ॐ विभूत्यै स्वाहा। ॐ आदित्यायै स्वाहा। ॐ सूर्याय स्वाहा। ॐ सौर्यै स्वाहा। ॐ भूत्यै स्वाहा। ॐ सावित्र्यै स्वाहा। ॐ मंगलायै स्वाहा। ॐ गणेशाय स्वाहा। ॐ सरस्वत्यै स्वाहा। ॐ विघ्नहरायै स्वाहा।

ॐ जयायै स्वाहा। ॐ यमाय स्वाहा। ॐ संध्यायै स्वाहा। ॐ आश्वत्यै स्वाहा। ॐ कूरायै स्वाहा। ॐ नियन्त्र्यै स्वाहा। ॐ नागराजाय स्वाहा। ॐ नमो खेटक हस्तेभ्यो त्रिभोगेभ्यो स्वाहा। ॐ नमो भीषण देवेभ्यः खंगधृभ्यो स्वाहा। ॐ मध्य संध्यायै स्वाहा। ॐ धरायै स्वाहा। ॐ पद्मायै स्वाहा। ॐ स्कन्दाय स्वाहा। ॐ पश्चिम संध्यायै स्वाहा। ॐ वायवे स्वाहा। ॐ वायव्यै स्वाहा। ॐ गायत्र्यै स्वाहा। ॐ मध्यम सन्ध्यायै स्वाहा। ॐ सोमाय स्वाहा। ॐ सावित्र्यै स्वाहा। ॐ अमृतकलशायै स्वाहा। ॐ पश्चिम सन्ध्यायै स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ वारुण्यै स्वाहा। ॐ पाशधारिण्यै स्वाहा। ॐ वृहत्यै स्वाहा। ॐ वसुभ्यो स्वाहा। ॐ विनतायै स्वाहा। ॐ अणिमायै स्वाहा। ॐ भूत्यै स्वाहा। ॐ गरिमायै स्वाहा। ॐ धनदाय स्वाहा। ॐ आदित्यायै स्वाहा। ॐ लघिमायै स्वाहा। ॐ सिनीवाल्यै स्वाहा। ॐ वृहस्पतये स्वाहा। ॐ पूर्णमास्यै स्वाहा। ॐ सावित्र्यै स्वाहा। ॐ विश्वकर्मणे स्वाहा। ॐ सिनीवाल्यै स्वाहा। ॐ सावित्र्यै स्वाहा। ॐ वास्तुदेवतायै स्वाहा।

## सतोरण द्वारपाल होमः

ॐ ऋग्वेदाय स्वाहा। ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा। ॐ सामवेदाय स्वाहा। ॐ अथर्ववेदाय स्वाहा।

**दिग्पाल होमः –** ॐ इन्द्राय स्वाहा। ॐ अग्नये स्वाहा। ॐ यमाय स्वाहा। ॐ नैर्ऋते स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ वायवे स्वाहा। ॐ सोमाय स्वाहा। ॐ ईश्वराय स्वाहा। ॐ ब्रम्हणे स्वाहा। ॐ अनंताय स्वाहा। ॐ गरुणध्वजाय स्वाहा।

## श्री सर्वतोभद्र मंडल देवता होमः

ॐ ब्रम्हणे स्वाहा। ॐ सोमाय स्वाहा। ॐ ईशानाय स्वाहा। ॐ इन्द्राय स्वाहा। ॐ अग्नये स्वाहा। ॐ यमाय स्वाहा। ॐ निर्ऋतये स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ वायवे स्वाहा। ॐ अष्ट वसुभ्यो स्वाहा। ॐ एकादश रुद्रेभ्यो स्वाहा। ॐ द्वादश आदित्तेभ्यो स्वाहा। ॐ अश्विभ्याम् स्वाहा। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो स्वाहा। ॐ पितृभ्यो स्वाहा। ॐ सप्त यक्षेभ्यो स्वाहा। ॐ भूतेभ्यो स्वाहा। ॐ सर्पेभ्यो स्वाहा। ॐ गन्धर्वभ्यो स्वाहा। ॐ अप्सरोभ्यो स्वाहा। ॐ स्कन्दाय स्वाहा। ॐ नन्दीश्वराय स्वाहा। ॐ शूलाय स्वाहा। ॐ महाकालाय स्वाहा। ॐ प्रजापतिभ्यो स्वाहा। ॐ दुर्गायै स्वाहा। ॐ विष्णवे स्वाहा। ॐ स्वधा सहित पितृभ्यो स्वाहा। ॐ मृत्युरोगेभ्यो स्वाहा। ॐ गणपतये स्वाहा। ॐ अद्भ्यो स्वाहा। ॐ मरुद्भ्यो स्वाहा। ॐ पृथिव्यै स्वाहा। ॐ गंगादि सप्तसरिद्भ्यो स्वाहा।

ॐ सप्त सागरेभ्यो स्वाहा। ॐ मेरवे स्वाहा। ॐ गदायै स्वाहा। ॐ त्रिशूलाय स्वाहा। ॐ वज्राय स्वाहा। ॐ शक्तये स्वाहा। ॐ दण्डाय स्वाहा। ॐ खड्गाय स्वाहा। ॐ पाशाय स्वाहा। ॐ अंकुशाय स्वाहा। ॐ गौतमाय स्वाहा। ॐ भरद्वाजाय स्वाहा। ॐ विश्वामित्राय स्वाहा। ॐ कश्यपाय स्वाहा। ॐ जमदग्नये स्वाहा। ॐ वशिष्ठाय स्वाहा। ॐ अत्रये स्वाहा। ॐ अरुन्धत्यै स्वाहा। ॐ ऐन्द्रयै स्वाहा। ॐ कौमार्यै स्वाहा। ॐ ब्राम्ह्यै स्वाहा। ॐ बाराह्यै स्वाहा। ॐ चामुण्डायै स्वाहा। ॐ वैष्णव्यै स्वाहा। ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा। ॐ वैनायक्यै स्वाहा।। **अनेन शाकल्यादि होमेन सर्वतोभद्र देवताः प्रीयन्ताम् न मम।।**

## श्री चतुर्लिंगतोभद्र मंडल देवता होमः

ॐ असितांग भैरवाय स्वाहा। ॐ रुरु भैरवाय स्वाहा। ॐ चण्ड भैरवाय स्वाहा। ॐ क्रोध भैरवाय स्वाहा। ॐ उन्मत्त भैरवाय स्वाहा। ॐ कपाल भैरवाय स्वाहा। ॐ भीषण भैरवाय स्वाहा। ॐ संहार भैरवाय स्वाहा। ॐ अनन्ताय स्वाहा। ॐ वासुकये स्वाहा। ॐ तक्षकाय स्वाहा। ॐ कुलिशा युधाय स्वाहा। ॐ कर्कोटिकाय स्वाहा। ॐ शंखपालाय स्वाहा। ॐ कम्बलाय स्वाहा। ॐ अश्वताय स्वाहा। ॐ शूलाय स्वाहा। ॐ चन्द्रमौलिने स्वाहा। ॐ चन्द्रमसे स्वाहा। ॐ वृषभध्वजाय स्वाहा। ॐ त्रिलोचनाय स्वाहा। ॐ शक्तिधराय स्वाहा। ॐ महेश्वराय स्वाहा। ॐ शूलपाणये स्वाहा।

## ततः सर्वतोभद्रवत् देवता होमम्। तदन्तरम्–

ॐ सद्योजाताय स्वाहा। ॐ वामदेवाय स्वाहा। ॐ अघोराय स्वाहा। ॐ तत्पुरुषाय स्वाहा। ॐ ईशानाय स्वाहा। ॐ ऋग्वेदाय स्वाहा। ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा। ॐ सामवेदाय स्वाहा। ॐ अथर्ववेदाय स्वाहा। ॐ भवाय स्वाहा। ॐ शर्वाय स्वाहा। ॐ पशुपतये स्वाहा। ॐ ईशानाय स्वाहा। ॐ उग्राय स्वाहा। ॐ रुद्राय स्वाहा। ॐ भीमाय स्वाहा। ॐ महते स्वाहा। ॐ भवान्यै स्वाहा। ॐ शर्वाण्यै स्वाहा। ॐ पशुपत्यै स्वाहा। ॐ ईशान्यै स्वाहा। ॐ उग्रायै स्वाहा। ॐ रुद्राण्यै स्वाहा। ॐ भीमायै स्वाहा। ॐ महत्यै स्वाहा। ॐ गदायै स्वाहा। ॐ त्रिशूलाय स्वाहा।। अनेन शाकल्यादि होमेन चतुर्लिंगतोभद्र देवताः प्रीयन्ताम् न मम।।

## ।। श्री गौरीतिलक मंडल होमः ।।

ॐ महाविष्णवे स्वाहा। ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा। ॐ महेश्वराय स्वाहा। ॐ महामायायै स्वाहा। ॐ ऋग्वेदाय स्वाहा। ॐ यजुर्वेदाय स्वाहा। ॐ सामवेदाय स्वाहा। ॐ अथर्ववेदाय स्वाहा। ॐ अद्भ्यो स्वाहा। ॐ जलोद्भवाय स्वाहा। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ॐ प्रजापतये स्वाहा।

ॐ शिवाय स्वाहा। ॐ अनन्ताय स्वाहा। ॐ परमेष्ठिने स्वाहा। ॐ धात्रे स्वाहा। ॐ विधात्रे स्वाहा। ॐ अर्यमणे स्वाहा। ॐ मित्राय स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ अंशुमते स्वाहा। ॐ भगाय स्वाहा। ॐ इन्द्राय स्वाहा। ॐ विवस्वते स्वाहा। ॐ पूष्णे स्वाहा। ॐ पर्जन्याय स्वाहा। ॐ त्वष्ट्रे स्वाहा।। ॐ दक्ष यज्ञाय स्वाहा। ॐ देववसवे स्वाहा। ॐ महासुताय स्वाहा। ॐ सुधर्मणे स्वाहा। ॐ शंखपदे स्वाहा। ॐ महावाहवे स्वाहा। ॐ वपुष्मते स्वाहा। ॐ अनन्ताय स्वाहा। ॐ महेरणाय स्वाहा। ॐ विश्वावसवे स्वाहा। ॐ सुपर्वणे स्वाहा। ॐ विष्टराय स्वाहा। ॐ रुद्रदेवताय स्वाहा। ॐ ध्रुवाय स्वाहा। ॐ धराय स्वाहा। ॐ सोमाय स्वाहा। ॐ आपवत्साय स्वाहा। ॐ नलाय स्वाहा। ॐ अनिलाय स्वाहा। ॐ प्रत्यूषाय स्वाहा। ॐ प्रभासाय स्वाहा। ॐ आवर्ताय स्वाहा। ॐ सांवर्ताय स्वाहा। ॐ द्रोणाय स्वाहा। ॐ पुष्कराय स्वाहा। ॐ ह्रींकार्य्यै स्वाहा। ॐ ह्रियै स्वाहा। ॐ कात्यायन्यै स्वाहा। ॐ चामुण्डायै स्वाहा। ॐ महादिव्यायै स्वाहा। ॐ महाशब्दायै स्वाहा। ॐ सिद्धिदायै स्वाहा। ॐ ऐं स्वाहा। ॐ श्रीं श्रियै स्वाहा। ॐ ह्रीं ह्रियै स्वाहा। ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा। ॐ श्रियै स्वाहा। ॐ सुधायै स्वाहा। ॐ मेधायै स्वाहा। ॐ प्रज्ञायै स्वाहा। ॐ मत्यै स्वाहा। ॐ सरस्वत्यै स्वाहा। ॐ गौर्यै स्वाहा। ॐ पद्मायै स्वाहा। ॐ शच्यै स्वाहा। ॐ सुमेधायै स्वाहा। ॐ सावित्र्यै स्वाहा। ॐ विजयायै स्वाहा। ॐ देवसेनायै स्वाहा। ॐ स्वाहायै स्वाहा। ॐ स्वधायै स्वाहा। ॐ मात्रे स्वाहा। ॐ गायत्र्यै स्वाहा। ॐ लोकमात्रे स्वाहा। ॐ धृत्यै स्वाहा। ॐ पुष्टयै स्वाहा। ॐ तुष्टयै स्वाहा। ॐ आत्मकुलदेवतायै स्वाहा। ॐ गणेश्वर्यै स्वाहा। ॐ कुलमात्रे स्वाहा। ॐ शान्त्यै स्वाहा। ॐ जयन्त्यै स्वाहा। ॐ मंगलायै स्वाहा। ॐ काल्यै स्वाहा। ॐ भद्रकाल्यै स्वाहा। ॐ कपालिन्यै स्वाहा। ॐ दुर्गायै स्वाहा। ॐ क्षमायै स्वाहा। ॐ शिवायै स्वाहा। ॐ धात्र्यै स्वाहा। ॐ स्वाहास्वधाभ्यां स्वाहा। ॐ दीप्यमानायै स्वाहा। ॐ दीप्तायै स्वाहा। ॐ सूक्ष्मायै स्वाहा। ॐ विभूत्यै स्वाहा। ॐ विमलायै स्वाहा। ॐ परायै स्वाहा। ॐ अमोघायै स्वाहा। ॐ वैद्युतायै स्वाहा। ॐ सर्वतोमुख्यै स्वाहा। ॐ आनन्दायै स्वाहा। ॐ नन्दिन्यै स्वाहा। ॐ शक्त्यै स्वाहा। ॐ महासूक्ष्मायै स्वाहा। ॐ करालिन्यै स्वाहा। ॐ भारत्यै स्वाहा। ॐ ज्योतिष्मत्यै स्वाहा। ॐ ब्राह्मयै स्वाहा। ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा। ॐ कौमार्यै स्वाहा। ॐ वैष्णव्यै स्वाहा। ॐ वाराह्यै स्वाहा। ॐ इन्द्राण्यै स्वाहा। ॐ चण्डिकायै स्वाहा। ॐ बुद्ध्यै स्वाहा।

ॐ लज्जायै स्वाहा। ॐ वपुष्मत्यै स्वाहा। ॐ शान्त्यै स्वाहा। ॐ कान्त्यै स्वाहा। ॐ रत्यै स्वाहा। ॐ प्रीत्यै स्वाहा। ॐ कीर्त्यै स्वाहा। ॐ प्रभायै स्वाहा। ॐ काम्यायै स्वाहा। ॐ कान्तायै स्वाहा। ॐ ऋद्धयै स्वाहा। ॐ दयायै स्वाहा। ॐ शिवदूत्यै स्वाहा। ॐ श्रद्धायै स्वाहा। ॐ क्षमायै स्वाहा। ॐ क्रियायै स्वाहा। ॐ विद्यायै स्वाहा। ॐ मोहिन्यै स्वाहा। ॐ यशोवत्यै स्वाहा। ॐ कृपावत्यै स्वाहा। ॐ सलीलायै स्वाहा। ॐ सुशीलायै स्वाहा। ॐ ईश्वर्यै स्वाहा। ॐ सिद्धेश्वर्यै स्वाहा। ॐ द्वैपायनाय स्वाहा। ॐ भारद्वाजाय स्वाहा। ॐ गौतमाय स्वाहा। ॐ सुमन्तवे स्वाहा। ॐ देवलाय स्वाहा। ॐ व्यासाय स्वाहा। ॐ वसिष्ठाय स्वाहा। ॐ च्यवनाय स्वाहा। ॐ कण्वाय स्वाहा। ॐ मैत्रेयाय स्वाहा। ॐ कवये स्वाहा। ॐ विश्वामित्राय स्वाहा। ॐ वामदेवाय स्वाहा। ॐ सुमन्ताय स्वाहा। ॐ जैमिनये स्वाहा। ॐ क्रतवे स्वाहा। ॐ पिप्पलादाय स्वाहा। ॐ पराशराय स्वाहा। ॐ गर्गाय स्वाहा। ॐ वैशम्पायनाय स्वाहा। ॐ दक्षाय स्वाहा। ॐ मार्कण्डेयाय स्वाहा। ॐ मृकण्डाय स्वाहा। ॐ लोमशाय स्वाहा। ॐ पुलहाय स्वाहा। ॐ पुलस्त्याय स्वाहा। ॐ बृहस्पतये स्वाहा। ॐ जमदग्नये स्वाहा। ॐ जामदग्न्याय स्वाहा। ॐ दाल्भ्याय स्वाहा। ॐ शिलोञ्छनाय स्वाहा। ॐ गालवाय स्वाहा। ॐ याज्ञवल्क्याय स्वाहा। ॐ दुर्वाससे स्वाहा। ॐ सौभरये स्वाहा। ॐ जावालये स्वाहा। ॐ वाल्मीकये स्वाहा। ॐ बह्वचाय स्वाहा। ॐ इन्द्रप्रमीतये स्वाहा। ॐ देवमित्राय स्वाहा। ॐ जाजलये स्वाहा। ॐ शाकल्याय स्वाहा। ॐ मुद्रलाय स्वाहा। ॐ जातुकर्ण्याय स्वाहा। ॐ बलाकाय स्वाहा। ॐ कृपाचार्याय स्वाहा। ॐ सुकर्मणे स्वाहा। ॐ कौसल्याय स्वाहा। ॐ ब्रह्माग्नये स्वाहा। ॐ गार्हपत्याग्नये स्वाहा। ॐ ईश्वराग्नये स्वाहा। ॐ दक्षिणाग्नये स्वाहा। ॐ वैष्णवाग्नये स्वाहा। ॐ आहवनीयाग्नये स्वाहा। ॐ सप्त जिव्हाग्नये स्वाहा। ॐ इध्मजिह्वाग्नये स्वाहा। ॐ प्रवर्ग्याग्नये स्वाहा। ॐ वडवाग्नये स्वाहा। ॐ जाठराग्नये स्वाहा। ॐ लौकिकाग्नये स्वाहा। ॐ सूर्य्याय स्वाहा। ॐ वेदाङ्गाय स्वाहा। ॐ भानवे स्वाहा। ॐ इन्द्राय स्वाहा। ॐ खगाय स्वाहा। ॐ गभस्तिने स्वाहा। ॐ यमाय स्वाहा। ॐ अंशुमते स्वाहा। ॐ हिरण्यरेतशे स्वाहा। ॐ दिवाकराय स्वाहा। ॐ मित्राय स्वाहा। ॐ विष्णवे स्वाहा। ॐ शम्भवे स्वाहा। ॐ गिरिशाय स्वाहा। ॐ अजैकपदे स्वाहा। ॐ अर्हिर्बुधन्याय स्वाहा। ॐ पिनाक पाणये स्वाहा। ॐ अपराजिताय स्वाहा। ॐ भुवनाधीश्वराय स्वाहा।

ॐ कपालिने स्वाहा। ॐ विशाम्पतये स्वाहा। ॐ रुद्राय स्वाहा। ॐ वीरभद्राय स्वाहा। ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां स्वाहा। ॐ आवहाय स्वाहा ।ॐ प्रवहाय स्वाहा। ॐ उद्वहाय स्वाहा। ॐ सम्वहाय स्वाहा। ॐ विवहाय स्वाहा। ॐ परिवहाय स्वाहा। ॐ परीवहाय स्वाहा। ॐ धरायै स्वाहा। ॐ अद्भ्यो स्वाहा। ॐ अग्नये स्वाहा। ॐ वायवे स्वाहा। ॐ आकाशाय स्वाहा। ॐ हिरण्यनाभाय स्वाहा। ॐ पुष्पंजयाय स्वाहा। ॐ द्रोणाय स्वाहा। ॐ शृंगिणे स्वाहा। ॐ वादरायणाय स्वाहा। ॐ अगस्त्याय स्वाहा। ॐ मनवे स्वाहा। ॐ कश्यपाय स्वाहा। ॐ धौम्याय स्वाहा। ॐ भृगवे स्वाहा। ॐ वीतिहोत्राय स्वाहा। ॐ मधुछन्दसे स्वाहा। ॐ वीरसेनाय स्वाहा। ॐ कृतवृष्णये स्वाहा। ॐ अत्रये स्वाहा। ॐ मेधातिथये स्वाहा। ॐ अरिष्टनेमये स्वाहा। ॐ आङ्गिरसाय स्वाहा। ॐ इन्द्रप्रमदाय स्वाहा। ॐ इध्मवाहवे स्वाहा। ॐ पिप्पलादाय स्वाहा। ॐ नारदाय स्वाहा। ॐ अरिष्टसेनाय स्वाहा। ॐ अरुणाय स्वाहा। ॐ सनकाय स्वाहा। ॐ सनन्दनाय स्वाहा। ॐ सनातनाय स्वाहा। ॐ सनत्कुमाराय स्वाहा। ॐ कपिलाय स्वाहा। ॐ कर्दमाय स्वाहा। ॐ मरीचये स्वाहा। ॐ कतवे स्वाहा। ॐ प्रचेतसे स्वाहा। ॐ उत्तमाय स्वाहा। ॐ दधीचे स्वाहा। ॐ श्राद्धदेवताभ्यो स्वाहा। ॐ गणदेवेभ्यो स्वाहा। ॐ विद्याधरेभ्यो स्वाहा। ॐ अप्सरोभ्यो स्वाहा। ॐ यक्षेभ्यो स्वाहा। ॐ रक्षोभ्यो स्वाहा। ॐ गन्धर्वेभ्यो स्वाहा। ॐ पिशाचेभ्यो स्वाहा। ॐ गुह्यकेभ्यो स्वाहा। ॐ सिद्धदेवताभ्यो स्वाहा। ॐ औषधीभ्यो स्वाहा। ॐ भूतग्रामाय स्वाहा। ॐ चतुर्विधभूतग्रामाय स्वाहा।

**अनेन शाकल्यादि होमेन गौरीतिलक मंडल देवताः प्रीयन्ताम् न मम।।**

## श्री रामभद्र मंडल होमः

ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा। ॐ गणाधिपतये स्वाहा। ॐ महाशक्तये स्वाहा। ॐ महालक्ष्म्यै स्वाहा। ॐ महादुर्गायै स्वाहा। ॐ गायत्र्यै स्वाहा। ॐ सावित्र्यै स्वाहा। ॐ सरस्वत्यै स्वाहा। ॐ सर्वमातृभ्यो स्वाहा। ॐ सिद्धिदेव्यै स्वाहा। ॐ बुद्धिदेव्यै स्वाहा। ॐ लोकमात्रे स्वाहा। ॐ महादेव्यै स्वाहा। ॐ देवमात्रे स्वाहा। ॐ वास्तुदेवेभ्यो स्वाहा। ॐ लोकपालेभ्यो स्वाहा। ॐ श्री मनवे स्वाहा। ॐ वसिष्ठादिभ्यो स्वाहा। ॐ अधिप्रत्यधिदेवेभ्यो स्वाहा। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ॐ श्री नवग्रहेभ्यो स्वाहा। ॐ दशदिक्पालेभ्यो स्वाहा। ॐ गौरीपतये स्वाहा। ॐ अयोध्यायै स्वाहा। ॐ श्रोसरय्यै स्वाहा। ॐ श्रीगंगादेव्यै स्वाहा। ॐ भूशक्तये

स्वाहा। ॐ वह्निवीजाय स्वाहा। ॐ श्रीकेशरिणे स्वाहा। ॐ सुषेणाय स्वाहा। ॐ ऋक्षराजाय स्वाहा। ॐ श्री अंगदाय स्वाहा। ॐ श्रीसुग्रीवाय स्वाहा। ॐ श्री विमलादिशक्तिभ्यो स्वाहा। ॐ विभीषणाय स्वाहा। ॐ अष्टमन्त्रिभ्यो स्वाहा। ॐ सपत्नीकाय दशरथाय स्वाहा। ॐ सपत्नीकाय लक्ष्मणाय स्वाहा। ॐ सपत्नीकाय भरताय स्वाहा। ॐ सपत्नीकाय शत्रुघ्नाय स्वाहा। ॐ श्री हनुमते स्वाहा। ॐ श्री रामभद्राय स्वाहा ।

**अनेन शाकल्यादि होमेन रामभद्र मंडल देवताः प्रीयन्ताम् न मम।।**

## श्री प्रधान यज्ञेश्वर होमः

प्रधान देवता ध्यानम् प्रणामम् च कृत्वा जप दशांशेन होमम् कुर्यात्। यंत्रस्थ आवरण देवताभ्यः आहुतिम् जुहुयात्।।

## श्री अग्नि पूजनम्

ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्म जुहुराणमेनो भूयिष्ठाम् ते नम उक्तिम् विधेम।। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा स्वधा युताग्नये वैश्वानराय नमः। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।।

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा।इदं अग्नये स्विष्टकृते न मम।।

## घृतेन नवाहुतयः

ॐ भूः स्वाहा। इदं अग्नये न मम।। ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम।। ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।।

ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान देवस्य हेडो अवियासि सीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ग्वं सि प्रमु मुग्ध्यस्मत् स्वाहा।। **इदं अग्नीवरुणाभ्याम् न मम।।**

ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्टो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुण ग्वं रराणो वीहि मृडीक ग्वं सुहवो न एधि स्वाहा।। **इदं अग्नीवरुणाभ्याम् न मम।।**

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया असि। अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषज ग्वं स्वाहा।। **इदं अग्नये अयसे न मम।।**

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेर्भिनो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुन्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा।।

**इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।।**

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्म दवाधमं विमध्यम ग्वं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा।।**इदं वरुणाय आदित्याय आदितये न मम।।**

ॐ प्रजापतये स्वाहा। **इदं प्रजापतये न मम।।**

नवाहुतीनाम् प्रोक्षणी पात्रे संश्रव प्रक्षेपः।।उपयमन कुशांश्च निधाय।

## श्री नवग्रह सहित दशादिग्पाल बलिदानम्

**संकल्प-** हरिः ॐ तत्सत् अद्य....गोत्रः....नामोऽहं कृतस्य कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थम् दशदिक्पाल पूर्वकं आदित्यादि नवग्रह मंडल स्थापित देवताभ्यो बलिदानम् अहं करिष्ये।। इन्द्रादि दशदिक्पालेभ्यो नमः।सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि,नमस्करोमि।।

**पूर्वे-** ॐ इन्द्राय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपम् दधि माष भक्त बलिम् समर्पयामि।

भो इन्द्र! स्वां दिशं रक्ष, बलिं भक्ष, मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता, क्षेम कर्ता, शुभ कर्ता, शांति कर्ता, पुष्टि कर्ता, तुष्टि कर्ता वरदो भव।।**अनेन बलिदानेन इन्द्रः प्रीयताम्।।**

**अग्निकोणे-** ॐ अग्नये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपम् दधि माष भक्त बलिम् समर्पयामि।

भो अग्ने! स्वां दिशं रक्ष, बलिं भक्ष, मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेम कर्ता, शुभ कर्ता, शांति कर्ता, पुष्टि कर्ता, तुष्टि कर्ता वरदो भव।।**अनेन बलिदानेन अग्निः प्रीयताम्।।**

**दक्षिणे-** ॐ यमाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपम् दधि माष भक्त बलिम् समर्पयामि।

भो यम! स्वां दिशं रक्ष, बलिं भक्ष, मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता, क्षेम कर्ता, शुभ कर्ता, शांति कर्ता, पुष्टि कर्ता, तुष्टि कर्ता वरदो भव।।**अनेन बलिदानेन यमः प्रीयताम्।।**

**नैर्ऋत्यकोणे-** ॐ निर्ऋतये सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपम् दधि माष भक्त बलिम् समर्पयामि।

भो निर्ऋते! स्वां दिशं रक्ष, बलिं भक्ष, मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता, क्षेम कर्ता, शुभ कर्ता, शांति कर्ता, पुष्टि कर्ता, तुष्टि कर्ता वरदो भव।।**अनेन बलिदानेन निर्ऋतिः प्रीयताम्।।**

**पश्चिमे-** ॐ वरुणाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधि माष भक्त बलिम् समर्पयामि।

भो वरुण! स्वां दिशं रक्ष, बलिं भक्ष, मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेम कर्ता, शुभ कर्ता, शांति कर्ता, पुष्टि कर्ता, तुष्टि कर्ता वरदो भव।।**अनेन बलिदानेन वरुणः प्रीयताम्।।**

**वायुकोणे-** ॐ वायवे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपं दधि माष भक्त बलिम् समर्पयामि।

भो वायो! स्वां दिशं रक्ष, बलिं भक्ष, मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेम कर्ता, शुभ कर्ता, शांति कर्ता, पुष्टि कर्ता, तुष्टि कर्ता वरदो भव।।**अनेन बलिदानेन वायुः प्रीयताम्।।**

**उत्तरे-** ॐ कुबेराय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपम् दधि माष भक्त बलिम् समर्पयामि।

भो कुबेर! स्वां दिशं रक्ष, बलिं भक्ष, मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्ता, क्षेम कर्ता, शुभ कर्ता, शांति कर्ता, पुष्टि कर्ता, तुष्टि कर्ता वरदो भव।।**अनेन बलिदानेन कुबेरः प्रीयताम्।।**

**ईशानकोणे-** ॐ ईशानाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपम् दधि माष भक्त बलिम् समर्पयामि।

भो ईशान! स्वां दिशं रक्ष, बलिं भक्ष, मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता, क्षेम कर्ता, शुभ कर्ता, शांति कर्ता, पुष्टि कर्ता, तुष्टि कर्ता वरदो भव।।**अनेन बलिदानेन ईशानः प्रीयताम्।।**

**पूर्व-ईशान मध्ये-** ॐ ब्रम्हणे सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपम् दधि माष भक्त बलिम् समर्पयामि।

भो ब्रम्हन्! स्वां दिशं रक्ष, बलिं भक्ष, मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता, क्षेम कर्ता, शुभ कर्ता, शांति कर्ता, पुष्टि कर्ता, तुष्टि कर्ता वरदो भव।।**अनेन बलिदानेन ब्रम्हा प्रीयताम्।।**

**नैर्ऋत्य-पश्चिम मध्ये-** ॐ अनन्ताय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय एतं सदीपम् दधि माष भक्त बलिम् समर्पयामि।

भो अनन्त! स्वां दिशं रक्ष, बलिं भक्ष, मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्ता, क्षेम कर्ता, शुभ कर्ता, शांति कर्ता, पुष्टि कर्ता, तुष्टि कर्ता वरदो भव।।**अनेन बलिदानेन अनन्तः प्रीयताम्।।**

**उत्तरे-** ॐ सूर्यादि नवग्रहेभ्यः सांगेभ्यः सपरिवारेभ्यः सायुधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः अधिदेवता प्रत्यधिदेवता गणपत्यादि पंचलोकपाल वास्तोष्पति सहितेभ्यः एतं सदीपम् दधि माष भक्त बलिम् समर्पयामि। भो भो सूर्यादि नवग्रहाः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः अधिदेवता प्रत्यधिदेवता गणपत्यादि पंचलोकपाल वास्तोष्पति सहिताः! इमम् बलिम् गृह्णीत् मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुः कर्तारः, क्षेम कर्तारः, शुभ कर्तारः, शांति कर्तारः, पुष्टि कर्तारः, तुष्टि कर्तारो वरदा भवत।।

**अनेन बलिदानेन सूर्यादिग्रहाः प्रीयन्ताम्।।**

# श्री क्षेत्रपाल बलिदानम्

एकस्मिन् वंशपात्रे कुशान् आस्तीर्य तदुपरि मनुष्य आहार चतुर्गुणम् द्विगुणम् वा माष, दधि, ओदनम्, जलपात्रं च निधाय, हरिद्रां, कुंकुमं, सिंदूरं, कज्जलं, द्रव्यं, पताकां, चतुर्मुखदीपम् प्रज्वाल्य–

**संकल्पः-** ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य.......गोत्रः.......नामोऽहं कृतस्य कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थम् क्षेत्रपाल पूजन पूर्वकं बलिदानम् अहं करिष्ये।

**पूजनम्-** ॐ नहि स्प्पश मविदन्न् अन्यमस्माद् वैश्वानरात् पुर एतारम् अग्नेः। एमेनम् अवृधन्न् अमृता अमर्त्यम् वैश्वानरम् क्षैत्रजित्थाय देवाः।। ॐ भूर्भुवः स्वः श्री क्षेत्रपालाय नमः।सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।।

## प्रार्थनाम्

ॐ नमो वै क्षेत्रपालस्त्वम्, भूत प्रेत गणैः सह।पूजाम् बलिम् गृहाणेमम्, सौम्यो भवतु सर्वदा।।
पुत्रान् देहि धनम् देहि, सर्वान् कामाश्च देहि मे। आयुः आरोग्यम् मे देहि, निर्विघ्नम् कुरु सर्वदा।।

**अनेन पूजनेन श्री क्षेत्रपालः प्रीयताम्।।**

**हस्ते साक्षत जलमादाय-** ॐ क्षेत्रपाल महाबाहो, महाबल पराक्रमः।
क्षेत्राणां रक्षणार्थाय,बलिम् नय नमोस्तु ते।। **श्री क्षौं क्षेत्रपालाय सांगाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय भूत प्रेत पिशाच डाकिनी शाकिनी पिशाचिनी मारीगण भैरव राक्षस कूष्माण्ड वेतालादि परिवार सहिताय इमम् सचतुर्मुख दीप दधि माष भक्त बलिम् समर्पयामि।।** भूमौ जलं क्षिपेत्।।

**प्रार्थनाम्-** ॐ भो भो क्षेत्रपाल! स्वं क्षेत्रम् रक्ष बलिम् भक्ष यज्ञम् परिरक्ष मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य अभ्युदयम् कुरु आयुः कर्ता, क्षेम कर्ता, शांति कर्ता, पुष्टि कर्ता, तुष्टि कर्ता, निर्विघ्न कर्ता वरदो भव।। **अनेन बलिदानेन श्री क्षेत्रपालः प्रीयताम्।।**

ततो दुर्ब्राम्हणेन अथवा नापितेन अथवा शूद्रेण बलिम् गृहित्वा सपत्नीक यजमानस्य मस्तकोपरि सकृद् भ्रामयित्वा पृष्ठतो अनवलोकयन् चतुष्पथे मण्डपाद् वहिः निक्षिपेत्।। यजमानः तस्य पृष्ठतो द्वार पर्यन्तम् गत्वा जलम् क्षिपेत्।

ॐ हिंकाराय स्वाहा हिंकृताय स्वाहा कन्दते स्वाहा वक्कन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा पप्प्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहा उपविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहा सीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते

स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृताय स्वाहा स ग्वं हानाय स्वाहा उपस्थिताय स्वाहा अयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा ।।

**बलिं दत्वा पाणि पादम् प्रक्षाल्य होम स्थाने आगत्य आचमनम् कुर्यात्।।**

ततः दशांश तर्पणम्–तद् दशांश मार्जनम् कुर्यात्। **अमुकः देवता तर्पयामि, मार्जामि।।**

## पूर्णाहुति होमः

**संकल्पः-** ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य.......गोत्रः.......नामोऽहं मम मनः अभिलषित धर्मार्थ कामादि फल प्राप्त्यर्थम् ब्राम्हण द्वारा मत्कारिते.......कर्मणि परिपूर्णता सिद्धये वसोर्धारा समन्वितम् पूर्णाहुति होमम् अहं करिष्ये।

**पूजनम्-** ॐ पूर्णाहुत्यै नमः। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, नमस्करोमि।।

**उत्तिष्ठन् श्री जगदीश्वरं मनसा ध्यायन् शंखतूर्यादि घोषैः पूर्णाहुतिं जुहुयात्।।**

ॐ मूर्धानम् दिवो अरतिम् पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्। कवि ग्वं सम्राज मतिथिन्जनानाम् आसन्ना पात्रम् जनयन्त देवाः।।

ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत वस्नेव विक्रीणा वहा इषमूर्ज ग्वं शतक्रतो स्वाहा।।
इदम् अग्नये वैश्वानराय वसु रुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नये अद्भ्यः पुरुषाय श्रियै च न मम।।

## अविच्छिन्न वसोर्धाराम्

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारं। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा।।
इदम् वाजादिभ्यो अग्नये विष्णवे रुद्राय सोमाय वैश्वानराय च न मम।।

## अग्नि प्रार्थनाम्

ॐ श्रद्धाम् मेधाम् यशः प्रज्ञाम्, विद्याम् पुष्टिम् श्रियम् बलम्।
तेज आयुष्यम् आरोग्यम् देहि मे हव्यवाहन।।

भो भो अग्ने महाशक्ते, सर्व कर्म प्रसाधन।
कर्मान्तरेऽपि सम्प्राप्ते, सान्निध्यम् कुरु सर्वदा।।

**भस्म धारणम् –** ॐ त्र्यायुषम् जम्दग्नेति इति ललाटे। कश्यपस्य त्र्यायुषम् इति ग्रीवायाम्। ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम् इति दक्षिण बाहुमूले। तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् इति हृदि वाम स्कन्धे च।।

ततः प्रोक्षणी पात्रे प्रक्षिप्तस्य आज्यस्य यजमानेन अनामिकां अंगुष्ठाभ्यां संश्रव प्राशनम्।

## छायापात्र दानम्

**घृत पूरित कांस्यपात्रे सपत्नीको यजमानः स्वमुखम् अवलोकयेत्।**

ॐ आज्यम् सुराणाम् आहारमाज्यम् पापहरम् परम्।
आज्य मध्ये मुखम् दृष्ट्वा, सर्व पापैः प्रमुच्यते।।
घृतम् नाशयते व्याधिम्, घृतन्च हरते रुजम्।
घृतम् तेजोधिकरणम्, घृतम् आयुः प्रवर्द्धते।।

**संकल्पः-** ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य.......गोत्रः......जन्मनामतः प्रसिद्ध नामोऽहं सपत्नीकोऽहम् स्व शरीर छाया अवलोकित घृत पूरितम् कांस्यपात्रम्दक्षिणा सहितम् श्री महामृत्युंजय देवता प्रीत्यर्थम् सर्वारिष्ट विनाशार्थम् यथा नाम गोत्राय ब्राम्हणाय दातुम् अहम् उत्सृजे।।

## सदक्षिणाम् पूर्णपात्र दानम्

**संकल्पः-** ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य.......गोत्रः.......नामोऽहं कृतस्य .......होम कर्मणः प्रतिष्ठार्थम् इदम् तण्डुल पूरितम् पूर्णपात्रम् सदक्षिणम् प्रजापति दैवतम् ब्रम्हणे तुभ्यमहम् संप्रददे। स्वस्तीति प्रतिबचनम्।।

**ततो ब्रम्हग्रंथि विमोकः। उपयमन कुशैः मार्जयेत्। उपयमन कुशानाम् अग्नौ प्रक्षेपः।। आरार्तिक्यम्।। प्रदक्षिणाम्।।**

## श्रेयो दानम्

ॐ भवन्नियोगेन मया अस्मिन्....यज्ञ कर्मणि एभिः ब्राम्हणैः सह कृतं मद् आचार्यत्वं जपहोमादिकन्च तदुत्पन्नम् यद् श्रेयः साक्षतजलेन पूगीफलेन तुभ्यमहं सम्प्रददे।

**तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव-इत्याचार्यो वदेत्। भवामि इति यजमानो वदेत्।।**

## दक्षिणा दानम्

**संकल्पः-** ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य......गोत्रः.......नामोऽहं मया आचारितस्य . .....कर्मणः प्रतिष्ठा सांगता सिद्ध्यर्थम् तत्सम्पूर्ण फल प्राप्तये च नाना गोत्रेभ्योः ब्राम्हणेभ्यो यथोक्त दक्षिणाम् तन्निष्क्रयभूतम् इदम् द्रव्यम् विभज्याहम् सम्प्रददे न मम।। स्वस्तीति ब्राम्हणो वदेत्।।

**ब्राम्हण भोजन संकल्पः-** ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य.......गोत्रः ..... नामोऽहं कृतस्य......कर्मणः सम्पूर्णता सिद्धये यथा उपन्नेन अन्नेन यथा कालम् यथा संख्यकान् नाना गोत्रान् नानाभिधान् ब्राम्हणान् भोजयिष्ये दक्षिणांच दास्ये।।

## उत्तरपूजनम्

**संकल्पः-** ॐ अद्येत्यादि देशकालौ संकीर्त्य कृतस्य.....कर्मणः गोत्रः......नामोऽहं सपत्नीकोऽहं प्रधान यज्ञेश्वर सहित आवाहित देवानाम् उत्तर पूजनम् अहम् करिष्ये।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपत्यादि स्थापित देवताभ्यो नमः। सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि, उत्तरपूजनम् समर्पयामि, नमस्करोमि ।।

## मंत्र पुष्पांजलिम्

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान् न्यासन्। तेह नाकम् महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः।।

ॐ नाना सुगन्ध पुष्पाणि, यथा कालोद्भवानि च।पुष्पांजलिः मया दत्ता, गृहाण परमेश्वरः।।

ॐ सर्वेभ्यो देवताभ्यो नमः। मंत्र पुष्पांजलिम् समर्पयामि।।

## क्षमा प्रार्थनाम्

ॐ आवाहनम् न जानामि, न जानामि विसर्जनम्।पूजाम् चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।

अपराध सहस्त्राणि, क्रियन्ते अहर्निशम् मया।दासोऽयमिति मां मत्वा, क्षमस्व परमेश्वर।।

मंत्र हीनं क्रिया हीनं, भक्ति हीनं सुरेश्वर। यत्पूजितम् मया देव, परिपूर्णम् तदस्तु मे।।

अन्यथा शरणम् नास्ति, त्वमेव शरणम् मम।तस्मात् कारुण्य भावेन, रक्ष माम् परमेश्वर।।

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या, तपो यज्ञ क्रियादिषु।न्यूनं सम्पूर्णताम् याति, सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।

## आवाहित देवानाम् विसर्जनम्

ॐ उत्तिष्ठ ब्रम्हणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उप प्रयन्तु मरुतः सुदानवऽइन्द्र प्राशूर्भवा सचा।।

ॐ यज्ञ यज्ञम् गच्छ यज्ञपतिम् गच्छ स्वाम् योनिम् गच्छ स्वाहा। एष ते यज्ञो यज्ञपते सह सूक्त वाकः सर्व वीरस्तन् जुषस्व स्वाहा।।

ॐ ये च ब्रम्हादयो देवा, अस्मिन् यज्ञे समागताः। स्व स्व स्थानम् व्रजन् त्वेते, शांतिम् कुर्वन्ति मे सदा।।

ॐ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ, स्व स्थाने परमेश्वर।यत्र ब्रम्हादयो देवाः, तत्र गच्छ हुताशन।।

**श्री गणपति लक्ष्म्यौ यजमान गृहे तिष्ठतम्। आवाहित देवताः स्व स्व स्थाने गच्छत।।**

# यजमान अभिषेकः (कलशोदकेन)

ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान् ऊर्जे दधातनमहेरणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः।उशतीरिव मातरः।तस्मादरंगमामवो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथाचन।।

ॐ वरुणस्योतम् भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्त्थो वरुणस्य ॠत सदन्यसि वरुणस्य ॠत सदन्मसि वरुणस्य ॠत सदन्मासीद।।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः। पुनन्तु विश्वा भूतानि जात वेदः पुनीहि मा।।

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।यद्भद्द्रं तन्न आसुव।

ॐ अन्नपते अन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।प्रप्र दातारं तारिष ऊर्जम् नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ग्वं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रम्हशान्तिः सर्व ग्वं शान्तिः शान्तिरेव– शान्तिः सामा शान्तिरेधि।।

ॐ यतोयतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्यो भयन्नः पशुभ्यः।।

## आशीर्बचनम्

ॐ स्वस्त्यस्तु ते कुशलमस्तु चिरायुरस्तु, गो वाजि हस्ति धन धान्य समृद्धिरस्तु।
ऐश्वर्यमस्तु बलमस्तु रिपोक्षयोऽस्तु, वंशे सदैव भवताम् हरि भक्तिरस्तु।।

ॐ भद्रमस्तु शिवम् चास्तु, महालक्ष्मीः प्रसीदतु।रक्षन्तु त्वाम् सदा देवाः,सम्पदः सन्तु सर्वदा।।

ॐ श्रीः वर्चस्वम् आयुष्यम् आरोग्यम् आविधात् पवमानम् महीयते।
धनम् धान्यम् पशुम् बहुपुत्र लाभम् शत सम्वत्सरम् दीर्घमायुः।।

**ॐ मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु, पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।**
**शत्रूणाम् बुद्धि नाशोऽस्तु, मित्राणाम् उदयस्तव।।**

ॐ आयुष्कामो यशस्कामो पुत्र पौत्रस्तथैव च।आरोग्यम् धन कामश्च, सर्वे कामा भवन्तु ते।।

आयुर्द्रौण सुतो श्रियो दशरथे, शत्रुक्षयो राघवे।
ऐश्वर्य नहुषे गतिश्च पवने, मानं च दुर्योधने।
शौर्यं शान्तनवे बलं हलधरे, सत्यं च कुन्तीसुते।
विज्ञानं विदुरे भवन्तु भवतः, कीर्तिश्च नारायणे।।

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च, सूर्यादि सकला ग्रहाः। सौभाग्यं ते प्रगच्छन्तु, वेदमंत्राश्च कल्पका ।।

**यजमानः यज्ञान्ते ब्राह्मणान् भोजयित्वा स्वयं इष्ट मित्रदि सहितः हविष्यान्नं भुंजीत ।**

# श्री दुर्गा यंत्रार्चनम् (लाल चावल से)

**श्री पीठ पूजनम्** (वेदी के ऊपर नमः के साथ चावल का छींटा दें)

ॐ पूर्व पीठाय नमः। ॐ पं पूर्ण पीठाय नमः। ॐ कं काम पीठाय नमः।।

**प्राच्यां दिशि-** ॐ उं उड्यान पीठाय नमः। **आग्नेयाम्-** ॐ मां मातृपीठाय नमः। **दक्षिणे-** ॐ जं जालन्धर पीठाय नमः। **नैर्ऋृते-** ॐ कं कोल्हापुर पीठाय नमः। **पश्चिमे-** ॐ पूं पूर्णागिरि पीठाय नमः। **वायव्याम्-** ॐ सौं सौहारोप पीठाय नमः। **उत्तरे-** ॐ कं कोल्हागिरि पीठाय नमः। **ईशान्याम्-** ॐ कं कामरूप पीठाय नमः।।

**नमस्कारम् दक्षिणे-** ॐ गुरुवे नमः। ॐ परमगुरुवे नमः। ॐ परमेष्ठिगुरुवे नमः। ॐ गुरुपंक्तये नमः। ॐ मातापितृभ्याम् नमः। ॐ उपमन्यु नारद सनक व्यासादिभ्यो नमः।। **वामे-** ॐ गं गणपतये नमः। ॐ दुं दुर्गायै नमः। ॐ सं सरस्वत्यै नमः। ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः।। **पीठ मध्ये-** ॐ मं मंडूकाय नमः। ॐ आं आधार शक्त्यै नमः। ॐ मूं मूलप्रकृत्यै नमः। ॐ कां कालाग्नि रुद्राय नमः। **तदुपरि-** ॐ आं आदि कूर्माय नमः। ॐ अं अनन्ताय नमः। ॐ आं आदिवराहाय नमः। ॐ पं पृथिव्यैनमः। ॐ अं अमृतार्णवाय नमः। ॐ रं रत्नद्वीपाय नमः। ॐ हं हेमगिरये नमः। ॐ नं नन्दनोद्यानाय नमः। ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः। ॐ मं मणि भूतलाय नमः। ॐ दं दिव्यमंडपाय नमः। ॐ सं स्वर्णवेदिकायै नमः। ॐ रं रत्न सिंहासनाय नमः। **आग्नये-** ॐ धं धर्माय नमः। **नैर्ऋृते-** ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः। **वायव्ये-** ॐ वैं वैराग्याय नमः। **ईशाने-** ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः।। **मंडलाद् चतुर्दिक्षु। पूर्वे-** ॐ अं अर्धामाय नमः। **दक्षिणे-** ॐ अं अज्ञानाय नमः। **पश्चिमे-** ॐ अं अवैराग्याय नमः। **उत्तरे-** ॐ अं अनैश्वर्याय नमः। **मंडल मध्ये अष्टदले-** ह्रीं आदिमायायै नमः। विं विद्यायै नमः। आं आनन्दकन्द पद्माय नमः। सं साविन्नालाय नमः। प्रं प्रकृतिमय पत्रेभ्यो नमः। विं विकारमय केशरेभ्यो नमः। रं अग्नि मंडलाय नमः। अं सूर्य मंडलाय नमः। सों सोम मंडलाय नमः। सं सत्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः। मं मोहात्मने नमः। मां माया तत्वाय नमः। विं विद्या तत्वाय नमः। शं शिव तत्वाय नमः। ब्रं ब्रम्हणे नमः। विं विष्णवे नमः। ॐ मं महेश्वराय नमः। **आग्नये-** ॐ आं आत्मने नमः।

**वायव्ये-** ॐ अं अन्तरात्मने नमः। **नैर्ऋते-** ॐ पं परमात्मने नमः।
**ईशाने-** ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः।
**पूर्वादि अष्टसु दिक्षु-** ॐ नं नन्दायै नमः। ॐ भगवत्यै नमः। ॐ रक्त दन्तिकायै नमः। ॐ शाकम्भर्यै नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ भीमायै नमः। ॐ कालिकायै नमः। ॐ भ्रामर्यै नमः। **मध्ये-** ॐ शिवदूत्यै नमः। ॐ धं धर्माय नमः।।
**प्रधान पीठोपरि यंत्रम् अभिवाद्य, संस्थाप्य, वस्त्रं आच्छाद्य पश्चात्-**
यंत्र को मस्तक में लगाकर वेदी पर कलश के ऊपर लाल वस्त्र बिछाकर स्थापित करके यंत्र पर लाल वस्त्र ढककर चावल से आवरण पूजन करें।

## आवरण पूजनम्

### प्रथमावरणम्

**पूर्वादि क्रमेण-** ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ अजितायै नमः। ॐ अपराजितायै नमः। ॐ नित्यायै नमः। ॐ विलासिन्यै नमः। ॐ द्रोग्ध्र्यै नमः। ॐ अघोराय नमः। ॐ मंगलायै नमः।।
**प्रार्थनाम्-** ॐ सच्चिन्मये परे देवि, परामृत चरूप्रिये।
अनुज्ञाम् देहि मे मातः, परिवार अर्चनाय मे।।
**विशेषार्घ जलै- तर्पणम्** (विशेष अर्घ्य दें)
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे सांगायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्रीमहाकाली–महालक्ष्मी–महासरस्वत्यै नमः,
श्री महाकाली–महालक्ष्मी–महासरस्वती श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि नमः ।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे सांगायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्री महाकाल्यै नमः, श्रीमहाकाली श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे सांगायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्री महालक्ष्म्यै नमः, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे सांगायै सपरिवारायै सावरणायै सायुधायै सशक्तिकायै श्री महासरस्वत्यै नमः, श्री महासरस्वती श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि नमः।।
**बिन्दोः परितो गुरू चतुष्टय पूजनम्-** ह्रीं गुरवे नमः, गुरू शक्तिं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्रीं परमगुरवे नमः, परमगुरू शक्तिं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ह्लीं परात्पर गुरवे नमः, परात्पर गुरू शक्तिं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं परमेष्ठि गुरवे नमः, परमेष्ठि गुरू शक्तिं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।।

## षडंग पूजनम् (बिन्दु मध्ये)

ऐं हृदयाय नमः, हृदय शक्तिं श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं शिरसे स्वाहा, शिरः शक्तिं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। क्लीं शिखायै वषट्, शिखा शक्तिंश्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ चामुण्डायै कवचाय हुँ, कवच शक्तिं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय बौषट्, नेत्र शक्तिं श्री पादुकांपूजयामि तर्पयामि। मूलेन अस्त्राय फट्, अस्त्र शक्तिं श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।।

प्रथमावरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।।

**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः प्रथमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, प्रथमावरणार्चनम्।।

अनेन प्रथमावरण देवता पूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गा देवता प्रीयताम्।

## द्वितीयावरणम्- (त्रिकोणे)

ह्लीं सावित्र्या सह विधात्रे नमः, विधातृ शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं श्रिया सह विष्णवे नमः, विष्णु शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं उमया सह शिवाय नमः, शिव शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं क्षुं सिंहाय सह शक्त्यै नमः, सिंह शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ह्लीं हुं महिषाय सह शक्त्यै नमः, महिष शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।।

द्वितीयावरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः द्वितीयावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, द्वितीयावरणार्चनम्।।

अनेन द्वितीयावरण देवता पूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्।

## तृतीयावरणम्– (षट्कोणे)

ह्लीं ऐं नन्दजायै नमः, नन्दजा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं रक्तदन्तिकायै नमः, रक्तदन्तिका शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं क्लीं शाकम्भर्यै नमः, शाकम्भरी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं दुं दुर्गायै नमः, दुर्गा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं हुं भीमायै नमः, भीमा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं भ्रामर्यै नमः, भ्रामरी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।। तृतीयावरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः तृतीयावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, तृतीयावरणार्चनम्।।

अनेन तृतीयावरण देवता पूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्।

## चतुर्थावरणम्– (अष्टपत्रे)

ह्लीं ऐं ब्राम्ह्यै नमः, ब्राम्ही शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं माहेश्वर्यै नमः, माहेश्वरी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं क्लीं कौमार्यै नमः, कौमारी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं वैष्णव्यै नमः, वैष्णवी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं लृं वाराह्यै नमः, वाराही शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं क्ष्रौं नारसिंह्यै नमः, नारसिंही शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं लं ऐन्द्र्यै नमः, ऐन्द्री शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं स्यें चामुण्डायै नमः, चामुण्डा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

**मध्ये-** ह्लीं लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।।

चतुर्थावरणवरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः चतुर्थावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, चतुर्थावरणार्चनम्।।

अनेन चतुर्थावरण देवता पूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्।

## पंचमावरणम्– (चतुर्बिंशति दले)

ह्लीं विं विष्णु मायायै नमः, विष्णु माया शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं चें चेतनायै नमः, चेतना शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं बुं बुद्ध्यै नमः, बुद्धि शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं निं निद्रायै नमः, निद्रा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं क्षुं क्षुधायै नमः, क्षुधा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं छां छायायै नमः, छाया शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं शं शक्त्यै नमः, शक्ति शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं तृं तृष्णायै नमः, तृष्णा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं क्षां क्षान्त्यै नमः, क्षान्ति शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं जां जात्यै नमः, जाति शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं लं लज्जायै नमः, लज्जा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं शां शान्त्यै नमः, शान्ति शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं श्रं श्रद्धायै नमः, श्रद्धा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं कां कान्त्यै नमः, कान्ति शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं लं लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं धृं धृत्यै नमः, धृति शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं वृं वृत्यै नमः, वृत्ति शक्ति श्री पादुकां पूजयामितर्पयामि। ह्लीं श्रुं श्रुत्यै नमः, श्रुति शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं स्मृं स्मृत्यै नमः, स्मृति शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं दं दयायै नमः, दया शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं तुं तुष्ट्यै नमः, तुष्टि शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं पुं पुष्ट्यै नमः, पुष्टि शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं मां मातृभ्यो नमः, मातृ शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं भ्रां भ्रान्त्यै नमः, भ्रान्ति शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। पंचमावरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः पंचमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः
सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, पंचमावरणार्चनम्।।

अनेन पंचमावरण देवता पूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्।

## षष्ठावरणम्– (भूपुरे चतुष्कोणे) आग्नेयादि क्रमेण-

ह्लीं गं गणपतये नमः, गणपति शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ह्लीं क्षं क्षेत्रपालाय नमः, क्षेत्रपाल शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ह्लीं बं बटुकाय नमः, बटुक शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ह्लीं यां योगिन्यै नमः, योगिनी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।
षष्ठावरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः षष्ठावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः
सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, षष्ठावरणार्चनम्।।
अनेन षष्ठावरण देवता पूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्।

## सप्तमावरणम्– पूर्वादि दशदिक्षुः–

ह्लीं लं इन्द्राय नमः, इन्द्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं रं अग्नये नमः, अग्नि शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं यं यमाय नमः, यम शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं क्षं नैर्ॠते नमः, नैर्ॠति शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं वं वरुणाय नमः, वरुण शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं यं वायवे नमः, वायु शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं सं सोमाय नमः, सोम शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं हं ईशानाय नमः, ईशान शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं ब्रं ब्रम्हणे नमः, ब्रम्ह शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं अनन्ताय नमः, अनन्त शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।। सप्तमावरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः सप्तमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः
सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, सप्तमावरणार्चनम्।।
अनेन सप्तमावरण देवता पूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्।

## अष्टमावरणम्- बहिः पूर्वादिक्षु:-

ह्लीं वं वज्राय नमः, वज्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं शं शक्त्यै नमः, शक्ति शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं दं दण्डाय नमः, दण्ड शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं खं खड्गाय नमः, खड्ग शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं पां पाशाय नमः, पाश शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं अं अंकुशाय नमः, अंकुश शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं गं गदायै नमः, गदा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं त्रिं त्रिशूलाय नमः, त्रिशूल शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं पं पद्माय नमः, पद्म शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं चं चक्राय नमः, चक्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।।

अष्टमावरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

**सामान्य अर्घ्य जलम्**- एताः अष्टमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः
सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

**पुष्पांजलिम् –** ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, अष्टमावरणार्चनम्।।

अनेन अष्टमावरण देवता पूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्।

## नवमावरणम्- कलशात् पूर्वादिक्षु:-

ह्लीं वज्रहस्तायै गजारूढायै कादम्बरी देव्यै नमः, कादम्बरी देवी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं शक्ति हस्तायै अजवाहनायै उल्का देव्यै नमः, उल्का देवी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं दण्डहस्तायै महिषारूढायै कराली देव्यै नमः, कराली देवी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं खड्ग हस्तायै शववाहनायै रक्ताक्षी देव्यै नमः, रक्ताक्षी देवी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं पाशहस्तायै मकरवाहनायै श्वेताक्षी देव्यै नमः, श्वेताक्षी देवी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं अंकुशहस्तायै मृग–वाहनायै हरिताक्षीदेव्यै नमः, हरिताक्षी देवी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं गदाहस्तायै सिंहारूढायै यक्षिणीदेव्यै नमः, यक्षिणी देवी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं शूलहस्तायै वृषभवाहनायै कालीदेव्यै नमः, काली देवी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं पद्महस्तायै हंसवाहनायैसुरज्येष्ठादेव्यै नमः, सुरज्येष्ठा देवी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि। ह्लीं चक्रहस्तायै सर्पवाहनायै सर्पराज्ञीदेव्यै नमः,

सर्पराज्ञी देवी शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।।

नवमावरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

**सामान्य अर्घ्य जलम्**- एताः नवमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः
सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

**पुष्पांजलिम्** – ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, नवमावरणार्चनम्।।
अनेन नवमावरण देवता पूजनेन त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गादेवता प्रीयताम्।

## ।। पूजनम्।।

**ध्यानम्** – ॐ विद्युद्दाम् समप्रभाम् मृगपति स्कन्धस्थिताम् भीषणाम्,
कन्याभिः करवाल खेट विलसद् धस्ताभिरा सेवताम्।
हस्तैश्चक्र गदासि खेट विशिखां चापम् गुणम् तर्जनीम्,
बिभ्राणाम् अनलात्मिकाम् शशिधराम् दुर्गाम् त्रिनेत्राम् भजे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यंत्रस्थ श्रीमद् आद्यशक्ति श्री दुर्गा देव्यै नमः। ध्यानम् समर्पयामि।।

## आवाहनम्

ॐ आगच्छ वरदे देवि, दैत्य दर्प निषूदिनि। पूजां गृहाण सुमुखि, नमस्ते शंकरप्रिये।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यंत्रस्थ श्रीमद् आदि शक्त्यै नमः। आवाहनम् समर्पयामि।।

## प्रतिष्ठाम्

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ग्वं समिमं
दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो 3 प्रतिष्ठ।।

श्री दुर्गा यंत्रस्थ देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।।

पाद्यं, अर्घ्य, आचमनीयं, सर्वांगे स्नानीयं जलं समर्पयामि, पंचामृत स्नानं, शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि, यज्ञोपवीतं, वस्त्रं, उपवस्त्रं समर्पयामि, आचमनीयं जलं, सुगन्धि द्रव्यं समर्पयामि, चंदनं, कुंकुमं, हरिद्रां, सिंदूरं समर्पयामि, अक्षतान, पुष्पाणि, बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

## अंग पूजनम्

ॐ ह्रीं दुर्गायै नमः, पादौ पूजयामि। ॐ ह्रीं महाकाल्यै नमः, गुल्फौ पूजयामि।

ॐ ह्रीं मंगलायै नमः, जानुनीं पूजयामि। ॐ ह्रीं कात्यायन्यै नमः, उरुं पूजयामि। ॐ ह्रीं भद्रकाल्यै नमः, कटिं पूजयामि। ॐ ह्रीं कमलायै नमः, नाभिंपूजयामि। ॐ ह्रीं शिवायै नमः, उदरं पूजयामि। ॐ ह्रीं क्षमायै नमः, हृदयं पूजयामि। ॐ ह्रीं स्कन्दायै नमः, कंठं पूजयामि। ॐ ह्रीं महिषासुरमर्दिन्यै नमः, नेत्रौ पूजयामि। ॐ ह्रीं उमायै नमः, शिरः पूजयामि। ॐ ह्रीं विन्ध्यवासिन्यै नमः, सर्वांगं पूजयामि।।

धूपं, दीपं, नैवेद्यं निवेदयामि, मध्ये पानीयं, आचमनीयं जलं– ॐ प्राणाय स्वाहा, व्यानाय स्वाहा, अपानाय स्वाहा, उदानाय स्वाहा, समानाय स्वाहा। उत्तरापोशनं, करोद्वर्तनार्थे चंदनं समर्पयामि, ऋतुफलं, सताम्बूल पूगीफलं, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि, नमस्करोमि।।

## प्रार्थनाम्

ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभाम् ददासि।
दारिद्र्य दुःख भय हारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकार करणाय सदार्द्र चित्ता।।
ॐ पुत्रान् देहि धनम् देहि, सौभाग्यम् देहि मंगले।
अन्यांश्च सर्व कामाश्च, देहि देवि नमोऽस्तुते।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यंत्रस्थ श्रीमद् आदिशक्त्यै नमः। प्रार्थनापूर्वकम् नमस्करोमि।।

**श्री दुर्गा यंत्र सिद्ध करने की सरल विधि-** नवरात्रि में यंत्र स्थापित करके 21 दिन लगातार 108 बार 'ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे' मंत्र बोलते हुए लाल सिन्दूर का छींटा दें। यंत्र सिद्ध हो जायेगा।

## ।। श्री श्री यंत्रार्चनम्।। (लाल चावल से)

## श्री पीठ पूजनम्

ॐ पूर्व पीठाय नमः। ॐ पं पूर्ण पीठाय नमः। ॐ कं काम पीठाय नमः।।

**प्राच्यां दिशि-** ॐ उं उड्यान पीठाय नमः। **आग्नेयाम्-** ॐ मां मातृ पीठाय नमः।

**दक्षिणे-** ॐ जं जालन्धर पीठाय नमः। **नैर्ऋते-** ॐ कं कोल्हापुर पीठाय नमः। **पश्चिमे-** ॐ पूं पूर्णागिरि पीठाय नमः। **वायव्याम्-** ॐ सौं सौहारोप पीठाय नमः। **उत्तरे-** ॐ कं कोल्हागिरि पीठाय नमः। **ईशान्याम्-** ॐ कं कामरूप पीठाय नमः।।

**नमस्कारम् दक्षिणे-** ॐ गुरुवे नमः। ॐ परमगुरुवे नमः। ॐ परमेष्ठि गुरुवेनमः। ॐ गुरुपंक्तये नमः। ॐ मातापितृभ्याम् नमः। ॐ उपमन्यु नारद सनक व्यासादिभ्यो नमः।। **वामे-** ॐ गं गणपतये नमः। ॐ दुं दुर्गायै नमः। ॐ सं सरस्वत्यै नमः।
ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः।। **पीठ मध्ये-** ॐ मं मंडूकाय नमः। ॐ आं आधार शक्त्यै नमः। ॐ मूं मूल प्रकृत्यै नमः। ॐ कां कालाग्नि रुद्राय नमः। **तदुपरि-** ॐ आं आदिकूर्माय नमः। ॐ अं अनन्ताय नमः। ॐ आं आदिवराहाय नमः। ॐ पं पृथिव्यै नमः। ॐ अं अमृतार्णवाय नमः।
ॐ रं रत्नद्वीपाय नमः। ॐ हं हेमगिरये नमः। ॐ नं नन्दनोद्यानाय नमः।
ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः। ॐ मं मणि भूतलाय नमः। ॐ दं दिव्यमंडपाय नमः।
ॐ सं स्वर्ण वेदिकायै नमः। ॐ रं रत्न सिंहासनाय नमः। **आग्नये-** ॐ धं धर्माय नमः।
**नैर्ऋते-** ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः। **वायव्ये-**ॐ वैं वैराग्याय नमः। **ईशाने-** ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः।।
**मंडलाद् चतुर्दिक्षु। पूर्वे-** ॐ अं अर्धामाय नमः। **दक्षिणे-** ॐ अं अज्ञानाय नमः। **पश्चिमे-** ॐ अं अवैराग्याय नमः। **उत्तरे-** ॐ अं अनैश्वर्याय नमः। मंडल मध्ये **अष्टदले-** ह्रीं आदिमायायै नमः। विं विद्यायै नमः। आं आनन्दकन्द पद्माय नमः। सं साविन्नालाय नमः। प्रं प्रकृतिमय पत्रेभ्यो नमः। विं विकारमय केशरेभ्यो नमः। रं अग्नि मंडलाय नमः। अं सूर्य मंडलाय नमः। सों सोम मंडलाय नमः। सं सत्वाय नमः। रं रजसे नमः। तं तमसे नमः।
मं मोहात्मने नमः। मां माया तत्वाय नमः। विं विद्या तत्वाय नमः। शं शिव तत्वाय नमः। ब्रं ब्रम्हणे नमः। विं विष्णवे नमः। ॐ मं महेश्वराय नमः। **आग्नये-** ॐ आं आत्मने नमः। **वायव्ये-** ॐ अं अन्तरात्मने नमः। **नैर्ऋते-** ॐ पं परमात्मने नमः। **ईशाने-** ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। **पूर्वादि अष्टसु दिक्षु-** ॐ नं नन्दायै नमः। ॐ भगवत्यै नमः। ॐ रक्त दन्तिकायै नमः। ॐ शाकम्भर्यै नमः। ॐ दुर्गायै नमः। ॐ भीमायै नमः। ॐ कालिकायै नमः। ॐ भ्रामर्यै नमः। **मध्ये-** ॐ शिवदूत्यै नमः। ॐ धं धर्माय नमः।।

**प्रधान पीठोपरि यंत्रम् अभिवाद्य, संस्थाप्य, वस्त्रं आच्छाद्य पश्चात्-**

## आवरण पूजनम्

### प्रथमावरणम्- (षट्कोणे)

ॐ हिरण्यायै हृदयाय नमः, हृदय श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ चंद्राय शिरसे स्वाहा, शिर श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ रजतस्त्रजायै शिखायै वषट्, शिखा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

ॐ हिरण्यस्त्रजायै कवचाय हुँ, कवच श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ हिरण्यायै नेत्रत्रयाय बौषट्, नेत्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ हिरण्यवर्णायै अस्त्राय फट्, अस्त्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।
प्रथमावरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।
**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः प्रथमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः
सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, प्रथमावरणार्चनम्।।
अनेन प्रथमावरण देवता पूजनेन श्री महालक्ष्मी प्रीयताम्।

## द्वितीयावरणम्- (अष्टदले)

ॐ हिरण्यवर्णाम् हरिणीं सुवर्ण रजतस्त्राम्,श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ चंद्राम् हिरण्यमयीम् लक्ष्मीम् जातवेदो ममावह, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ताम आवहजातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ यस्याम् हिरण्यम् विन्देयम् गामश्वम् पुरुषानहम्, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।
ॐ अश्वपूर्वाम् रथमध्याम् हस्तिनाद् प्रमोदिनीम्, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ श्रियम् देवीम् उपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ कांसोस्मिताम् हिरण्य प्राकाराम् आर्द्राम् ज्वलन्तीम् तृप्ताम् तर्पयन्तीम्, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ पद्मेस्थिताम् पद्मवर्णाम् तामिहोपह्वये श्रियम्, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि।।
द्वितीयावरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।
**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः द्वितीयावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः
सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, द्वितीयावरणार्चनम्।।
अनेन द्वितीयावरण देवता पूजनेन श्री महालक्ष्मी प्रीयताम्।

## तृतीयावरणम्-(द्वादशदले)

ॐ चंद्राम् प्रभासाम् यशसा ज्वलन्तीम् श्रियम् लोके देव जुष्टामुदाराम्,
श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ताम् पद्मनेमिम् शरणम् प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यताम् त्वाम् वृणोमि,
श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।

ॐ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः, श्री महालक्ष्मी
श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।

ॐ तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्त रायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः,
श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।

ॐ उपैतु माम् देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।

ॐ प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिम् वृद्धिम् ददातु मे, श्री महालक्ष्मी
श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।

ॐ क्षुत्पिपासामलाम् ज्येष्ठा अलक्ष्मीर्नाशयाम्यहम्, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम्
पूजयामि तर्पयामि।

ॐ अभूतिम् असमृद्धिम् च सर्वाम् निर्णुद मे गृहात्, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकां
पूजयामि तर्पयामि।

ॐ गंधद्वाराम् दुराधर्षाम् नित्यपुष्टाम् करीषिणीम्, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम्
पूजयामि तर्पयामि।

ॐ ईश्वरीम् सर्व भूतानाम् तामिहोपह्वे श्रियम्, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम्
पूजयामि तर्पयामि।

ॐ मनसः कामम् आकूतिम् वाचः सत्यमशीमहि, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम्
पूजयामि तर्पयामि।

ॐ पशूनाम् रूप मन्नस्य मयि श्रीः श्रयताम् यशः, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम्
पूजयामि तर्पयामि।

तृतीयावरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः तृतीयावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः
सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, तृतीयावरणार्चनम्।।

अनेन तृतीयावरण देवता पूजनेन श्री महालक्ष्मी प्रीयताम्।

## चतुर्थावरणम्-(षोडशदले)

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले नमः, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमलालये प्रसीद नमः, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं प्रसीद नमः, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्मै नमः श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ कर्दमेन प्रजाभूतामयि संभव कर्दमः, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ श्रियम् वासय मे कुले मातरम् पद्ममालिनीम्, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत् वस मे गृहे, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ नि च देवीम् मातरम् श्रियम् वासय मे कुले, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ आर्द्राम् पुष्करिणीम् यष्टिम् सुवर्णाम् हेममालिनीम्, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ चंद्राम् हिरण्यमयीम् लक्ष्मीम् जातवेदो ममावह, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ आर्द्राम् पुष्करिणीम् पुष्टिम् पिंगलाम् पद्म मालिनीम्, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ सूर्याम् हिरण्यमयीम् लक्ष्मीम् जातवेदो ममावह, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ताम आवहजातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ यस्याम् हिरण्यम् प्रभूतम् गावो दास्योऽश्वान विन्देयम् पुरुषानहम्, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ श्रियः पंचदशर्चम् च श्री कामः सततम् जपेत्, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
चतुर्थावरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।
**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः चतुर्थावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, चतुर्थावरणार्चनम्।।
अनेन चतुर्थावरण देवता पूजनेन श्री महालक्ष्मी प्रीयताम्।

## पंचमावरणम्–(वृत्तस्य प्रथम वीथिकायाम्)

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्, श्रियः पंचदशर्चम् च श्री कामः सततम् जपेत्, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
पंचमावरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।
**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः पंचमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः
सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, पंचमावरणार्चनम्।।
अनेन पंचमावरण देवता पूजनेन श्री महालक्ष्मी प्रीयताम्।

## षष्ठमावरणम्–(वृत्तस्य द्वितीय वीथिकायाम्)

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं एं ऐं ओं औं अँ अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं मातृका रूपायै श्री महालक्ष्मै नमः, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
षष्ठमावरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।
**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः षष्ठमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः
सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, षष्ठमावरणार्चनम्।।
अनेन षष्ठमावरण देवता पूजनेन श्री महालक्ष्मी प्रीयताम्।

## सप्तमावरणम्–(भूपुर मध्ये)

ॐ पद्मायै नमः, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ पद्मवर्णायै नमः, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ पद्मस्थायै नमः, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ आर्द्रायै नमः, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।

ॐ तर्पयन्त्यै नमः, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ तृप्तायै नमः, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ ज्वलन्त्यै नमः, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
ॐ स्वर्णप्राकारायै नमः, श्री महालक्ष्मी श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि।
सप्तमावरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।
**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः सप्तमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु ।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, सप्तमावरणार्चनम् ।।
अनेन सप्तमावरण देवता पूजनेन श्री महालक्ष्मी प्रीयताम्।

## अष्टमावरणम्-(भूपुरे)

**पूर्वे-** ॐ इन्द्राय नमः। **आग्नेयाम्-** ॐ अग्नये नमः। **दक्षिणे-** ॐ यमाय नमः।
**नैर्ऋृत्याम्-** ॐ नैर्ऋृत्ये नमः। **पश्चिमे-** ॐ वरुणाय नमः। **वायव्याम्-** ॐ वायवे नमः।
**उत्तरे-** ॐ कुबेराय नमः। **ऐशान्याम्-** ॐ ईशानाय नमः। **ईशान पूर्वयोर्मध्ये-** ॐ ब्रम्हणे नमः। **नैर्ऋृत्य पश्चिमयोर्मध्ये-** ॐ अनंताय नमः।
अष्टमावरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।
**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः अष्टमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु ।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, अष्टमावरणार्चनम् ।।
अनेन अष्टमावरण देवता पूजनेन श्री महालक्ष्मी प्रीयताम्।

## नवमावरणम्-(भूपुरे लोकपाल समीपे)

ॐ वज्राय नमः। ॐ शक्तये नमः। ॐ दण्डाय नमः। ॐ खड्गाय नमः। ॐ पाशाय नमः।
ॐ अंकुशाय नमः। ॐ गदायै नमः। ॐ त्रिशूलाय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ चक्राय नमः।।
नवमावरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।
**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः नवमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु ।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, नवमावरणार्चनम्।।
अनेन नवमावरण देवता पूजनेन श्री महालक्ष्मी प्रीयताम्।

## पूजनम्

### ध्यानम्

ॐ खट्वांगांकुश पाश शूल वर कृद्भी त्राण पात्रं शिरः।
कुंभासि ज्वलितोद् भटैर्भुज वरैराभास मानां शिवाम्।।
रुद्रस्कंध गतां शरद् शशिनिभां पंचाननां सुन्दरीम्।
पंचत्र्यक्ष विराजितां भगवतीं श्री सिद्ध लक्ष्मीं भजे।।
ॐ सिन्दूरारुण कान्तिमब्ज वसतिं सौन्दर्य वारां निधिम्।
कोटीरांगद हार कुण्डल कटी सूत्रादिभिः भूषिताम्।।
हस्ताब्जैः वसुपात्रमब्ज युगलादर्शौ वहन्तीं परामाविताम्।
परिचारिकाभिरनिशं ध्यायेत् प्रियां शारगिंणः।।
ॐ भूर्भुवः स्वः यंत्रस्थ श्रीमद् आद्यशक्ति श्री महालक्ष्म्यै नमः। ध्यानम् समर्पयामि।।

### आवाहनम्

ॐ आगच्छ वरदे देवि, धन धान्य प्रवर्धिनी। पूजां गृहाण सुमुखि, नमस्ते विष्णुप्रिये।।
ॐ भूर्भुवः स्वः यंत्रस्थ श्रीमद् महालक्ष्मै नमः। आवाहनम् समर्पयामि।।

### प्रष्ठिाम्

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ग्वं समिमं दधातु।
विश्वेदेवास इह मादयन्तामो 3 प्रतिष्ठ।।
श्री श्री यंत्रस्थ देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।।

**सर्वोपचारार्थे सर्व सामाग्रीं समर्पयामि पूज्यामि नमस्करोमि ।**

**श्री श्री यंत्र सिद्ध करने की सरल विधि-** दीपावली की रात्रि में यंत्र स्थापित करके 21 दिन लगातार 108 बार 'श्रीं श्रियै नमः' मंत्र बोलते हुए लाल सिन्दूर का छींटा दें। यंत्र सिद्ध हो जायगा।

# ।। श्री गायत्री यंत्रार्चनम्।।

## श्री पीठ पूजनम्

ॐ मं मंडूकाय नमः। ॐ कूं कूर्माय नमः। ॐ कां कालाग्नि रुद्राय नमः।
ॐ वां वाराहाय नमः। ॐ पृं पृथिव्यै नमः। ॐ अं अमृत सागराय नमः।
ॐ मं मणिद्वीपाय नमः। ॐ रं रत्नद्वीपाय नमः। ॐ नं नन्दनोद्यानाय नमः।
ॐ कं कल्पवृक्षेभ्यो नमः। ॐ रं रत्न वेदिकायै नमः। ॐ रं रत्न सिंहासनाय नमः।
ॐ अं अग्निमण्डलाय नमः। ॐ अं अर्कमण्डलाय नमः। ॐ सों सोममण्डलाय नमः।

**नवशक्ति देवता- (मध्ये पूर्वादि क्रमेण अष्टदलेषु)**

ॐ रां दीप्तायै नमः। ॐ रीं सूक्ष्मायै नमः। ॐ रूं जयायै नमः। ॐ रें भद्राय नमः।
ॐ रैं विभूत्यै नमः। ॐ रों विमलायै नमः। ॐ रौं अमोधायै नमः।
ॐ रं विद्युतायै नमः। मध्ये–ॐ रः सर्वतोमुख्यै नमः।

**त्रिकोण मध्ये (बिन्दु से) पूर्वादि चतुर्दिक्षु मध्ये-**

ॐ प्रभूताय नमः। ॐ विमलायै नमः। ॐ साराय नमः। ॐ समाराध्याय नमः। मध्ये–
ॐ परमसुखाय नमः।

**पीठोपरि कलश मध्ये श्री गायत्री आवाहनम्। (ध्यानम्)**

ॐ मुक्ता विद्रुम हेम नील धवला छायामुखैः त्रीक्षणैः,
युक्तां इन्दु निबद्ध रत्न मुकुटां तत्त्वात्म वर्णात्मिकाम्।
गायत्रीं वरदाभयांकुश कशा पाशं कपालं गुणं,
शंखं चक्रमथारविन्दु युगलं हस्तैः वहन्तीम् भजे।।

**प्रधान पीठोपरि यंत्रम् अभिवाद्य, संस्थाप्य, वस्त्रं आच्छाद्य पश्चात्-**

ॐ सचिन्मये परे देवि, परामृत रसप्रिये। अनुज्ञां देहि गायत्री, परिवारार्चनाय मे।।

## आवरण पूजनम्

### प्रथमावरणम्– (बिन्दु में)

श्री सविता देवता श्री पादुकाम् पूजयामि तर्पयामि नमः।

**(षट्कोणे) बिन्दु समीपे**

ॐ तत्सवितुर्ब्रह्मणे हृदयाय नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ वरेण्यम् विष्णवे शिरसे स्वाहा, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

ॐ भर्गो देवस्य रुद्राय शिखायै वषट्, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ धीमहि ईश्वराय कवचाय हुँ, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ धियो योनः सदाशिव नेत्रत्रयाय बौषट्, श्री पादुकां पू0 तर्पयामि नमः।
ॐ प्रचोदयात् सर्वात्मने अस्त्राय फट्, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
प्रथमावरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।
**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः प्रथमावरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः
सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, प्रथमावरणार्चनम्।।
अनेन प्रथमावरण देवता पूजनेन श्री गायत्री प्रीयताम्।

## द्वितीयावरणम्-(त्रिकोणे)

ॐ गायत्र्यै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ सावित्र्यै नमः, श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
द्वितीय आवरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।
**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः द्वितीय आवरण देवताः सांगाः सपरिवाराः
सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, द्वितीयावरणार्चनम्।।
अनेन द्वितीय आवरण देवता पूजनेन श्री गायत्री प्रीयताम्।

## तृतीयावरणम्-(त्रिकोणाद् बहिर्कोणे)

ॐ ब्रह्मणे नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ विष्णवे नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ रुद्राय नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
तृतीय आवरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।
**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः तृतीय आवरण देवताः सांगाः सपरिवाराः
सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, तृतीयावरणार्चनम्।। अनेन तृतीय आवरण देवता पूजनेन श्री गायत्री प्रीयताम्।

## चतुर्थावरणम्-(अष्टदलेषु) पूर्वादि क्रमेण

ॐ आदित्याय नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ उषायै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ भानवे नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ प्रज्ञायै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ भास्कराय नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ प्रभावै नमः, श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ रवये नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामिनमः। ॐ संध्यायै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। चतुर्थ आवरणदेवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः चतुर्थ आवरण देवताः सांगाः सपरिवाराः
सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, चतुर्थावरणार्चनम्।। अनेन चतुर्थ आवरण देवता पूजनेन श्री गायत्री प्रीयताम्।

## पंचमावरणम्-(अष्टदलेषु) पूर्वादि क्रमेण (केसरेषु)

ॐ प्रह्लादिन्यै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ प्रभायै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।ॐ नित्यायै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ विश्वम्भरायै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।ॐ विशालिन्यै नमः,
श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।ॐ प्रभावत्यै नमः,श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जयायै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।ॐ शान्त्यै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। पंचम आवरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः पंचम आवरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, पंचमावरणार्चनम्।। अनेन पंचम आवरण देवता पूजनेन श्री गायत्री प्रीयताम्।

## षष्टमावरणाम्–(अष्टदल मूल भागे) पूर्वादि क्रमेण

ॐ कान्त्यै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ दुर्गायै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ सरस्वत्यै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ विश्वरूपायै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ विशालायै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ईशायै नमः,श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ चापिन्यै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ विमलायै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। षष्टम आवरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः षष्टम आवरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, षष्टमावरणार्चनम्।।

अनेन षष्टम आवरण देवता पूजनेन श्री गायत्री प्रीयताम्।

## सप्तमावरणाम्–(अष्टदलेषु मध्ये) पूर्वादि क्रमेण

ॐ अपरिहारिण्यै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ सूक्ष्मायै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ विश्वयोन्यै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ जयावहायै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ पद्मालयायै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ परायै नमः,श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ शोभायै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ पद्मरूपायै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। सप्तम आवरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः सप्तम आवरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, सप्तमावरणार्चनम्।।

अनेन सप्तम आवरण देवता पूजनेन श्री गायत्री प्रीयताम्।

## अष्टमावरणम्–(अष्टदलाग्रे कर्णिकायै) पूर्वादि क्रमेण

ॐ आं ब्राह्मम्यै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ई माहेश्वर्यै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ऊं कौमार्यै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ॠं वैष्णव्यै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ॡं वाराह्यै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ऐं इन्द्राण्यै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ औं चामुण्डायै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ अः महालक्ष्म्यै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। अष्टम आवरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः अष्टम आवरणदेवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, अष्टमावरणार्चनम्।।
अनेन अष्टम आवरण देवता पूजनेन श्री गायत्री प्रीयताम्।

## नवमावरणम्–(भूपूरे) प्रथम श्वेत रेखायाम् (पूर्वादि क्रमेण)

ॐ सूं सूर्याय नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ सों सोमाय नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ भौं भौमाय नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ बुं बुधाय नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ गुं गुरवे नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ शुं शुक्राय नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ शं शनैश्चराय नमः, श्री पादुकांपूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ रां राहवे नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ कें केतवे नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। अष्टम आवरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः नवम आवरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, नवमावरणार्चनम्।।
अनेन नवम आवरण देवता पूजनेन श्री गायत्री प्रीयताम्।

## दशमावरणम्–(भूपूरे) रक्त परिधौ (पूर्वादि दश दिक्षु)

ॐ लं इन्द्राय नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ रं अग्नये नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ मं यमाय नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ क्षं निर्ऋत्ये नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ वं वरुणाय नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ यं वायवे नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ सं सोमाय नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ ई ईशानाय नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ आं ब्रम्हणे नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
ॐ अं अनन्ताय नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
दशम आवरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।
**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः दशम आवरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, दशमावरणार्चनम्।।
अनेन दशम आवरण देवता पूजनेन श्री गायत्री प्रीयताम्।

## एकादशमावरणम्–(भूपूरे) कृष्ण परिधौ (पूर्वादि दश दिक्षु)

ॐ वं वज्राय नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ शं शक्तये नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ दं दण्डाय नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ खं खड्गाय नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामिनमः। ॐ पं पाशाय नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ अं अंकुशाय नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ गं गदायै नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ पं पद्माय नमः, श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ॐ चं चक्राय नमः,

श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। एकादश आवरण देवताभ्यो नमः, सर्वोपचारार्थे गंधाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

**सामान्य अर्घ्य जलम्-** एताः एकादश आवरण देवताः सांगाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः पूजिताः तर्पिताः सन्तु।।

## पुष्पांजलिम्

ॐ अभीष्ट सिद्धिं मे देहि, शरणागत वत्सले। भक्त्या समर्पये तुभ्यम्, एकादशमावरणार्चनम्।।

अनेन दशम आवरण देवता पूजनेन श्री गायत्री प्रीयताम्।

## पूजनम्

**प्रतिष्ठाम्** - ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ग्वं समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो 3 प्रतिष्ठ।।

श्री गायत्री यंत्रस्थ देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।।

**सर्वोपचारार्थे सर्व सामाग्रीं समर्पयामि पूजयामि नमस्करोमि ।**

## ।। श्री महामृत्युंजय यंत्रार्चनम् ।।

ध्यानम्– ॐ चन्द्रोद् भाषित मूर्धजं सुरपतिं पीयूष पात्रं वहत्,

हस्ताब्जे न दधत्सु दिव्य ममलैः हास्यास्य पंकेरुहम्।

सूर्येन्द्वग्नि विलोचनं करतले पाशाक्ष सूत्रां कुशाम्,

भोजं विभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युंजयं संस्मरे।।

पीठ पूजा– चौकी में चावल का छींटा दें।

ॐ आधारशक्त्यै नमः। ॐ मूलप्रकृत्यै नमः। ॐ कालाग्निरूपाय नमः। ॐ आदिकूर्मायै नमः। ॐ अनन्तायै नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ रत्नद्विपायै नमः। ॐ हेमागिरये नमः। ॐ नन्दनोद्यानाय नमः। ॐ कल्पवृक्षाय नमः। ॐ मणिभूतलाय नमः। ॐ दिव्यमण्डपाय नमः। ॐ स्वर्णवेदिकायै नमः। ॐ धर्माय नमः। ॐ ज्ञानाय नमः। ॐ प्रकृतात्मने नमः। ॐ रजसे नमः। ॐ तमसे नमः। ॐ सोममण्डलाय नमः। ॐ सूर्यमण्डलाय नमः।

ॐ मण्डूकादि परतत्वांत पीठ देवताभ्यो नमः।

आसन के लिए बिल्वपत्र चढायें– ॐ सिंहासनाय नमः।

प्राण प्रतिष्ठाम् – ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ग्वं समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो 3 प्रतिष्ठ।। श्री महामृत्युंजय यंत्रस्थ देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।। गंधाक्षतपुष्प जल का छींटा दें– ॐ महामृत्युंजय पादुकां पूजयामि तर्पयामि।

## प्रथमावरणम्–

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्। इति पूर्वे।

ॐ अघोरेभ्योथघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः।सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।। इति दक्षिणे।

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः।भवे भवेनाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।। इति पश्चिमे।

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बल विकरणाय नमो। बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूत दमनाय नमो मनोन्मनाय नमः।। इति उत्तरे।

ॐ ईशानः सर्व विद्यानां ईश्वरः सर्व भूतानां।ब्रम्हाधिपतिर्ब्रम्हणोधिपतिर्ब्रम्हा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्।। इति ऊर्ध्वे।

जल का छींटा दें व पुष्पांजलि चढायें। ॐ पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।

## द्वितीयावरणम्–

ॐ निवृत्यै नमः। ॐ प्रतिष्ठायै नमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ शान्त्यै नमः। ॐ शान्त्यतितायै नमः। जल का छींटा दें व पुष्पांजलि चढायें। ॐ पूजिताः तर्पिताः सन्तु। ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।

## तृतीयावरणम्–

ॐ सूर्यमूर्तये नमः। ॐ इन्द्रमूर्तये नमः। ॐ क्षितिमूर्तये नमः। ॐ जलमूर्तये नमः। ॐ अग्निमूर्तये नमः। ॐ वायुमूर्तये नमः। ॐ आकाश मूर्तये नमः। ॐ यज्ञमूर्तये नमः। जल का छींटा दें व पुष्पांजलि चढायें। ॐ पूजिताः तर्पिताः सन्तु। ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।।

## चतुर्थावरणम्–

ॐ रमायै नमः। ॐ शकायै नमः। ॐ प्रभायै नमः। ॐ ज्योतस्नायै नमः। ॐ पूर्णायै नमः। ॐ ऊषायै नमः। ॐ पुरण्यै नमः। ॐ सुधायै नमः। जल का छींटा दें व पुष्पांजलि चढायें। ॐ पूजिताः तर्पिताः सन्तु। ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सल।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।।

## पंचमावरणम्–

ॐ विश्वायै नमः। ॐ विश्वबन्धायै नमः। ॐ सितायै नमः। ॐ प्रहव्यायै नमः। ॐ सारायै नमः। ॐ संध्यायै नमः। ॐ शिवायै नमः। ॐ निशायै नमः। जल का छींटा दें व पुष्पांजलि चढायें। ॐ पूजिताः तर्पिताः सन्तु। ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम्।।

## षष्ठमावरणम्–

ॐ आर्यायै नमः। ॐ प्रज्ञायै नमः। ॐ प्रभायै नमः। ॐ मेधायै नमः। ॐ शान्त्यै नमः। ॐ कान्त्यै नमः। ॐ धृत्यै नमः। ॐ मत्स्यै नमः।

जल का छींटा दें व पुष्पांजलि चढायें। ॐ पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठमावरणार्चनम्।।

## सप्तमावरणम् –

ॐ धरायै नमः। ॐ उमायै नमः। ॐ पावन्यै नमः। ॐ पद्मायै नमः। ॐ शान्त्यै नमः। ॐ अमोघायै नमः। ॐ जयायै नमः। ॐ अमलायै नमः।

जल का छींटा दें व पुष्पांजलि चढायें।ॐ पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागत वत्सल।भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्।।

## अष्टमावरणम्–

ॐ अनन्ताय नमः।ॐ सूक्ष्मायै नमः।ॐ शिवोत्मायै नमः।ॐ एकपदे नमः।ॐ एकरुद्राय नमः।ॐ त्रिमूर्तये नमः।ॐ श्रीकण्ठाय नमः।ॐ नीलकण्ठाय नमः।ॐ महाकालाय नमः।

जल का छींटा दें व पुष्पांजलि चढायें।ॐ पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सल।भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम्।।

## नवमावरणम्–

ॐ उमायै नमः। ॐ चण्डीश्वरायै नमः। ॐ नन्दिने नमः। ॐ महाकालाय नमः। ॐ गणेशाय नमः। ॐ वृषभाय नमः। ॐ भृंगी;षये नमः। ॐ स्कन्दाय नमः। जल का छींटा दें व पुष्पांजलि चढायें। ॐ पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सल।भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम्।।

## दशमावरणम्–

ॐ ब्राम्ह्यै नमः।ॐ माहेश्वर्यै नमः।ॐ कौमार्यै नमः।ॐ वैष्णव्यै नमः। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ नारसिंह्यै नमः। ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ चामुण्डायै नमः। ॐ महेश्वर्यै नमः। जल का छींटा दें व पुष्पांजलि चढायें।ॐ पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं दशमावरणार्चनम्।।

## एकादशमावरणम्–

ॐ लं इन्द्राय नमः।ॐ इं अग्नये नमः।ॐ यं यमाय नमः।ॐ नं नै;ते नमः।ॐ वं वरुणाय नमः। ॐ यं वायवे नमः। ॐ सं सोमाय नमः। ॐ हं रुद्राय नमः। ॐ आं ब्रम्हणे नमः। ॐ ङ्कीं शेषाय नमः। जल का छींटा दें व पुष्पांजलि चढायें। ॐ पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सल।भक्त्या समर्पये तुभ्यं एकादशमावरणार्चनम्।।

## द्वादशमावरणम्–

ॐ बं बज्राय नमः। ॐ शं शक्तये नमः। ॐ दं दण्डाय नमः। ॐ खं खण्डगाय नमः। ॐ पं पाशाय नमः। ॐ अं अंकुशाय नमः। ॐ गं गदायै नमः। ॐ तं त्रिशूलाय नमः। ॐ पं पद्मायै नमः। ॐ चं चक्रायै नमः।

जल का छींटा दें व पुष्पांजलि चढायें। ॐ पूजिताः तर्पिताः सन्तु। ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सल। भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वादशमावरणार्चनम्।।

## पूजनम्

**प्रतिष्ठाम्** - ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ग्वं समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो 3 प्रतिष्ठ।।

श्री महामृत्युंजय यंत्रस्थ देवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।।

**सर्वोपचारार्थे सर्व सामाग्रीं समर्पयामि पूजयामि नमस्करोमि ।**

## श्री महामृत्युंजय मंत्र जप विधिः

**विनियोगः**- ॐ अस्य श्री महामृत्युंजय मन्त्रस्य वामदेव कहोल वशिष्ठाः ऋषयः पंक्तिः गायत्री उष्णिक् अनुष्टुप् छन्दांसि सदाशिव श्री त्र्यम्बक रुद्रो देवता श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः मम यजमानस्य वा मम शरीरे सर्वारिष्ट निवृत्ति पूर्वक सकल मनोरथ सिद्ध्यर्थे श्री महामृत्यंजय प्रीतये जपे विनियोगः।

**ऋष्यादिन्यासः**- ॐ वामदेव कहोल वशिष्ठाः ऋषयः मूर्ध्नि। ॐ पंक्तिः गायत्री उष्णिक् अनुष्टुप् छन्दांसि मुखे। ॐ सदाशिव श्री त्र्यम्बक रुद्रो देवतायै नमो हृदि। ॐ ह्रीं शक्तये नमो लिंगे। श्रीं बीजाय नमः पादयोः।।

**अंगन्यासः**- ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः। ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृत मूर्तये मां जीवय जीवय शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टि वर्द्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्र शिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट्। ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते त्रिपुरान्तकाय ॐ ह्रां ह्रीं कवचाय हुम्।

ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग् यजुः साम मंत्राय नेत्रत्रयाय बौषट्। ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ अग्नित्रयाय ज्वल ज्वालाय मां रक्ष रक्ष अघोराय अस्त्राय फट्।।

**मंत्र न्यासः-** ॐ त्र्यम्बकं शिरसि। ॐ यजामहे भ्रुवोः। ॐ सुगन्धिं नेत्रयोः।
ॐ पुष्टि वर्द्धनम् मुखे। ॐ उर्वारुक गण्डयोः। ॐ इव हृदये। ॐ बन्धनात् जठरे।
ॐ मृत्योः लिंगे। ॐ मुक्षीय ऊर्वो। ॐ मां जान्वोः। ॐ अमृतात् पादयोः।।

**ध्यानम्-** ॐ चन्द्रोद् भाषित मूर्धजं सुरपतिं पीयूष पात्रं वहत्,
हस्ताब्जे न दधत्सु दिव्य ममलैः हास्यास्य पंकेरुहम्।
सूर्येन्द्वग्नि विलोचनं करतले पाशाक्ष सूत्रां कुशाम्,
भोजं विभ्रत मक्षयं पशुपतिं मृत्युंजयं संस्मरे।।

**तत्पश्चात् लिंग मुद्रां प्रदर्श्य, जपं कुर्यात्।**

**मंत्रः- ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वः ॐ जूँ सः ह्रौं ॐ।।**

**जपार्पण-** ॐ मृत्युंजय महारुद्र, त्राहि मां शरणागतम्।
जन्म मृत्यु जरा व्याधिः, पीडितं कर्म बन्धनैः।।

## श्री गायत्री मंत्र जप विधिः

**विनियोगः-** ॐ अस्य श्री ब्रम्ह गायत्री मंत्रस्य सप्त व्याहृतीनां जमदग्नि भारद्वाज अत्रि गौतम कश्यप विश्वामित्र वशिष्ठाः ऋषयः गायत्री उष्णिक् अनुष्टुप् बृहती पंक्ति त्रिष्टुप् जगती छन्दासि अग्नि वायु सूर्य वृहस्पति वरुण इन्द्र विश्वेदेवा देवताः मम यजमानस्य सकल पितृ देवता प्रसन्नार्थम् एवं असद्गति प्राप्त......प्रेतस्य सद्गति प्राप्त्यर्थम् एवं सकल मनोरथ सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

**ऋष्यादिन्यासः-** ॐ जमदग्नि भारद्वाज अत्रि गौतम कश्यप विश्वामित्र वशिष्ठ ऋषिभ्यो नमः शिरसि। ॐ गायत्री उष्णिक् अनुष्टुप् बृहती पंक्ति त्रिष्टुप् जगती छन्दोभ्यो नमः मुखे। ॐ अग्नि वायु सूर्य वृहस्पति वरुण इन्द्र विश्वेदेवा देवताभ्यो नमः हृदये।।

**अंगन्यासः-** ॐ तत्सवितुर्ब्रम्हणे हृदयाय नमः। ॐ वरेण्यं विष्णवे शिरसे स्वाहा।
ॐ भर्गो देवस्य रुद्राय शिखायै वषट्। ॐ धीमहि ईश्वराय कवचाय हुम्।
ॐ धियो यो नः सदाशिवाय नेत्रत्रयाय बौषट्। ॐ प्रचोदयात् सर्वात्मने अस्त्राय फट्।।

**मंत्र न्यासः-** ॐ तत् नमः शिरसि। ॐ सवितुर्नमः भ्रुवोर्मध्ये। ॐ वरेण्यं नमः नेत्रयोः। ॐ भर्गो नमः मुखे। ॐ देवस्य नमः कंठे। ॐ धीमहि नमः हृदये ॐ धियो नमः नाभौ। ॐ यो नमः गुह्ये। ॐ नः नमः जानुनोः। ॐ प्रचोदयात् नमः पादयोः।।

**ध्यानम्-** ॐ मुक्ता विद्रुम हेम नील धवला छायैः मुखैः तीक्षणैः,

युक्तां इन्दु निबद्ध रत्न मुकुटां तत्वार्थ वर्णात्मिकाम्।

सावित्रीं वरदा भयांकुश कशां पाशं कपालं गुणम्,

शंखं चक्रमथा अरविन्द युगलं हस्तैः बहंती भजे।।

**तत्पश्चात् चतुर्बिशति मुदां प्रदर्श्य, जपं कुर्यात्।**

**मंत्रः- ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।। जपोपरान्ते अष्टमुद्रां प्रदर्श्य, जपार्पण।।**



## ।। श्री गणपत्यथर्वशीर्षम् ।।

ॐ नमस्ते गणपतये। त्वमेव प्रत्यक्षम् तत्वमसि। त्वमेव केवलम् कर्तासि। त्वमेव केवलम् धर्तासि। त्वमेव केवलम् हर्तासि। त्वमेव सर्वम् खल्विदम् ब्रह्मासि। त्वम् साक्षात् आत्मासि नित्यम्। ऋतम् वच्मि। सत्यम् वच्मि। अव त्वम् माम्। अव वक्तारम्। अव श्रोतारम्। अव दातारम्। अव धातारम्। अवानूचानमव शिष्यम्। अव पश्चात्तात्। अव पुरस्तात्। अवोत्तरात्तात्। अव दक्षिणात्तात्। अव चोर्ध्वात्तात्। अवाधरात्तात्। सर्वतो माम् पाहि पाहि समन्तात्। त्वम् वाङ्मयः त्वम् चिन्मयः। त्वम् आनन्दमयः त्वम् ब्रह्ममयः। त्वम् सच्चिदानन्द अद्वितीयोऽसि। त्वम् प्रत्यक्षम् ब्रह्मासि। त्वम् ज्ञानमयो विज्ञान मयोऽसि। सर्वम् जगदिदम् त्वत्तो जायते। सर्वम् जगदिदम् त्वत्तः तिष्ठति। सर्वम् जगदिदम् त्वयि लयमेष्यति। सर्वम् जगदिदम् त्वयि प्रत्येति। त्वम् भूमिः आपः अनलः अनिलो नभः। त्वम् चत्वारि वाक् पदानि।। त्वम् गुणत्रयातीतः। त्वम् अवस्था त्रयातीतः। त्वम् देह त्रयातीतः। त्वम् काल त्रयातीतः। त्वम् मूलाधार स्थितोऽसि नित्यम्। त्वम् शक्ति त्रयात्मकः। त्वाम् योगिनो ध्यायन्ति नित्यम्। त्वम् ब्रम्हा त्वम् विष्णुः त्वम् रुद्रः त्वम् इन्द्रः त्वम् अग्निः त्वम्

वायुः त्वम् सूर्यः त्वम् चन्द्रमाः त्वम् ब्रम्ह भूर्भुवः स्वरोम्। गणादीन् पूर्वम् उच्चार्य वर्णादींस्तद नन्तरम्। अनुस्वारः परतरः। अर्धेन्दु लसितम्। तारेण रुद्धम्। एतद् तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्व रूपम्। अकारो मध्यम रूपम्। अनुस्वारः चान्त्य रूपम्। बिन्दुः उत्तर रूपम्। नादः संधानम्। स ग्वं हिता सन्धिः। सैषा गणेश विद्या। गणक ॠषिः। निचृद् गायत्री छन्दः। गणपतिः देवता। ॐ गं गणपतये नमः। ॐ एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।। एकदन्तम् चतुर्हस्तम् पाशमंकुश धारिणम्। रदम् च वरदम् हस्तैः बिभ्राणम् मूषकध्वजम्।। रक्तम् लम्बोदरम् शूर्प कर्णकम् रक्त वाससम्। रक्त गन्धानु लिप्तांगम् रक्त पुष्पैः सुपूजितम्।। भक्तानु कम्पिनम् देवम् जगत् कारणमच्युतम्। आविर्भूतम् च सृष्ट्यादौ प्रकृतेः पुरुषात्परम्।। एवम् ध्यायति यो नित्यम् स योगी योगिनाम् वरः।। नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदराय एकदन्ताय विघ्ननाशिने शिवसुताय श्री वरद मूर्तये नमः।। एतद् अथर्वशीर्षम् योऽधीते। स ब्रम्ह भूयाय कल्पते। स सर्व विघ्नैः न वाध्यते। स सर्वतः सुखमेधते। स पंच महापापात् प्रमुच्यते।। सायमधीयानो दिवस कृतम् पापम् नाशयति। प्रातरधीयानो रात्रि कृतम् पापम् नाशयति। सायं प्रातः प्रयुन्जाना अपापो भवति। सर्वत्र आधीयाना अपविघ्नो भवति। धर्मम् अर्थम् कामम् मोक्षम् च विन्दति।। इदम् अथर्वशीर्षम् अशिष्यायन देयम्। यो यदि मोहाद् दास्यति। स पापीयान् भवति।। सहस्त्रावर्तनाद्यम् यं काममधीते। तं तमनेन साधयेत्। अनेन गणपतिम् अभिसिंचति। स वाग्मी भवति। चतुर्थ्याम् अनश्नन् जपति। स विद्यावान् भवति। इति अथर्वण वाक्यम्।। ब्रम्हाद्याचरणम् विद्यान्न बिभेति कदाचनेति। यो दूर्वांकुरैः यजति। स वैश्रवणोपमो भवति। यो लाजैः यजति। स यशोवान् भवति। स मेधावान् भवति। यो मोदक सहस्त्रेण यजति। स वांछित फलम् अवाप्नोति। यः साज्य समिद्भिः यजति। स सर्वम् लभते स सर्वम् लभते।। अष्टौ ब्राम्हणान् सम्यग् ग्राहयित्वा सूर्य वर्चस्वी भवति। सूर्यग्रहे महानद्याम् प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्ध मंत्रो भवति।। महाविघ्नात् प्रमुच्यते। महादोषात् प्रमुच्यते। महापापात् प्रमुच्यते। स सर्वविद् भवति स सर्वविद् भवति। य एवम् वेद। इत्युपनिषत्।।

# ।। अथ पुरुष सूक्तम् ।।

हरिः ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्।स भूमि ग्वं सर्वतः स्पृत्वा त्यतिष्ट्ठद् दशांगुलम्।। पुरुष एवेद ग्वं सर्वम् यद्भूतम् यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।एतावानस्य महिमा तोज्या याँश्च पूरुषः।पादोस्यऽस्य विश्श्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतम् दिवि।। त्रिपादूर्ध्व उदत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः। ततो विष्वङ् व्यका मत्सा शना नशने अभि।। ततो विराड जायत विराजो अधि पूरुषः।स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः।।तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतम् पृषदाज्यम्।पशूँस्तांश्चके वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये।। तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दा ग्वं सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।। तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्माद् तस्माज्जाता अजावयः। तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्न् पुरुषं जातमग्ग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।। यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यय कल्प्पयन्। मुखं किमस्यासीत् किम् बाहू किमूरू पादा उच्च्येते।। ब्राम्हणोस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पदभ्या ग्वं शूद्रो अजायत।। चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।। नाब्भ्या आसीदन्तरिक्ष ग्वं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।पदभ्यां भूमिर्दिशः श्रोश्त्रातथा लोकाँ2 अकल्पयन्।।यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।। सप्तास्या सन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबघ्नन् पुरुषं पशुम्।। यज्ञेन यज्ञमय जन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः हरिः ॐ।।

# ।। अथ रुद्र सूक्तम् ।।

हरिः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः।बाहुभ्यामुत ते नमः।। या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि।। यामिषुं गिरिशन्तहस्ते बिभर्यस्तवे।शिवां गिरित्र तां कुरु मा हि ग्वं सीः पुरुषं जगत्।।शिवेन वचसा त्वा गिरिशाऽच्छावदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगद यक्ष्म ग्वं सुमना असत्।। अद्ध्यवो च दधि वक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींश्च सर्वान् जम्भयन्त् सर्वाश्च

यातुधान्योऽधराचीः परासुव।। असौ यस्ताम्रो अरुण उत बब्भ्रुः सुमंगलः। ये चैन ग्वं रुद्रा अभितो दिक्षुश्रिताः। सहस्त्रशोऽवैषा ग्वं हेड ईमहे।। असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृसन्न दृशनुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः।। नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्त्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः।। प्रमुंच धन्व नस्त्वमुभयो रात्न्र्योज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो व्वप।। विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ2 उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषंगधिः।। या ते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयाऽस्म मान् विश्व तस्त्व मयक्ष्मया परिभुज।। परि ते धन्वनो हेतिरस्मान् वृणक्तु विश्वतः। अथो य इषुधिस्तवारे अस्मन्नि धेहि तम्।। अवतत्य धनुष्ट्व ग्वं सहस्त्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव।। नमस्त आयुधायाना तताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने।। मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः।। मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान्न् रुद्र भामिनो वधीर्ह विष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः हरिः ॐ।।

## ।। अथ श्री सूक्तम् ।।

हरिः ॐ हिरण्यवर्णाम् हरिणीं सुवर्ण रजतस्त्राम्। चंद्राम् हिरण्यमयीम् लक्ष्मीम्जातवेदो ममावह।। ताम आवहजातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्याम् हिरण्यम् विन्देयम् गामश्वम् पुरुषानहम्।। अश्वपूर्वाम् रथमध्याम् हस्तिनाद् प्रमोदिनीम्। श्रियम् देवीम् उपह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।। कांसोस्मिताम् हिरण्य प्राकाराम् आर्द्राम् ज्वलन्तीम् तृप्ताम् तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थिताम् पद्म वर्णाम् तामिहोपह्वये श्रियम्।। चंद्राम् प्रभासाम् यशसा ज्वलन्तीम् श्रियम् लोकेदेव जुष्टामुदाराम्, ताम् पद्मनेमिम् शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यताम् त्वाम् वृणोमि।। आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः। तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्त रायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः।। उपैतु माम् देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिम् ददातु मे।। क्षुत्पिपासामलाम् ज्येष्ठा अलक्ष्मीर्नाशयाम्यहम्। अभूतिम् असमृद्धिम् च सर्वा निर्णुद मे गृहात्।। गंधद्वाराम् दुराधर्षाम् नित्यपुष्टाम् करीषिणीम्। ईश्वरीम् सर्व भूतानाम् तामिहोपह्वे श्रियम्।। मनसः कामं आकूतिं वाचः सत्यमशीमहि। पशूनाम् रूप मन्नस्य मयि श्रीः श्रयताम् यशः।। कर्दमेन

प्रजाभूतामयि संभव कर्दमः। श्रियम् वासय मे कुले मातरम् द्‌ममालिनीम्।। आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत् वस मे गृहे। नि च देवीम् मातरम् श्रियम् वासय मे कुले।। आर्द्राम् पुष्करिणीम् पुष्टिम् पिंगलाम् पद्‌म मालिनीम्। चंद्राम् हिरण्यमयीम् लक्ष्मींजातवेदो ममावह।। आर्द्राम् यः करिणीम् यष्टिम् सुवर्णाम् हेममालिनीम्। सूर्याम् हिरण्यमयीम् लक्ष्मीम् जातवेदो ममावह।। ताम आवहजातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्याम् हिरण्यम् संभूतम् गावो दास्योऽश्वान विन्देयम् पुरुषानहम्।। यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्। श्रियः पंचदशर्चम् च श्री कामः सततम् जपेत् हरिः ॐ।।

## श्री अग्नि सूक्तम्

प्रमंहिष्ठाय गायत ऋताव्नेबृहते शुक्रशोचिषे। उपस्तुतासो अग्नये।। 1।।
प्रसो अग्ने तवोतिभिः सुवीराभिस्तरति वाज कर्मभिः। यस्य त्वं सख्यमाविथ।। 2।।
तंगूर्धया स्वर्णरंदेवासो देवमरतिं दधन्विरे। देवत्रा हव्यमूहिषे।। 3।।
मानोह्वगीथा अतिथिं वसुरग्निः पुरु प्रशस्त एषः। यः सुहोता स्वध्वरः।। 4।।
भद्रोनो अग्निराहुतो भद्रारातिः सुभगः भद्रो अध्वरः। भद्रा उत प्रशस्तयः।। 5।।
यजिष्ठं त्वाव वृमहे देवं देवत्रा होतारम मर्त्यम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्।। 6।।
तदग्ने द्युम्नमाभर यत्सासाहा सदने कं चिदत्रिणम्। मन्युंजनस्य दूढ्यम्।। 7।।
यद्वा उ विश्वपतिः शितः सुप्रीतो मनुषो विशे। विश्वेदग्निः प्रति रक्षांसि सेधति।। 8।।

1. अग्निमीले पुरोहितं, यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्न धातमम्।।
2. अग्निः पूर्वेभि ऋषि भिरीड्यो नूतनैरुत। स देवाँ एह वक्षति।।
3. अग्निना रयिमश्नवत्, पोषमेव दिवे दिवे। यशसं वीर वत्तमम्।।
4. अग्ने यं यज्ञमध्वरं, विश्वतः परिभूरसि। स इद् देवेषु गच्छति।।
5. अग्निर्होता कविक्रतुः, सत्यश्चित्रश्श्रवस्तमः। देवो देवेभिरा गमत्।।
6. यदंग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि। तवेत् तत् सत्यमंगिरः।।

## ।। अथ बगला तंत्रोक्त कुंजिका स्तोत्र प्रयोग ।।

विनियोग–अस्य श्री सिद्ध कुंजिका स्तोत्र मंत्रस्य ब्रह्मा विष्णु महेश्वरा ऋषयः। गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दांसि। श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवता। ह्लीं शक्ति सहिताय नंदा शाकंभरी भीमा शक्तयः, रक्तदंतिका दुर्गा भ्रामर्यो सहिताय ऐं बीजानि, क्लीं कीलकं, अग्नि वायु सूर्यास्तत्वानि, ऋग्यजुः सामानि स्वरूपाणि, श्रीत्रिगुणात्मिका श्री पीताम्बरा बगलामुखि स्वरूपिण्यै श्री महादुर्गा प्रसन्नार्थे जपे विनियोगः।

**अंगन्यास-** ह्लां हृदयाय नमः। ह्लीं शिरसे स्वाहा। ह्लूं शिखायै वषट्।
ह्लैं कवचाय हुं। ह्लौं नेत्रत्रयाय बौषट्। ह्लः अस्त्राय फट्।

**ध्यान-** लक्ष्मी प्रदान समये नवविद्रुमाभाम्, विद्या प्रदान समये शरदिन्दुशुभ्राम्।
विद्वेषि वर्ग विजयेऽपि तमालनीलाम्, देवीं त्रिलोक जननीं शरणं प्रपद्ये।।

**शापविमोचन-** ॐ श्रां श्रीं श्रूं फट् ऐं ह्लीं क्लीं ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्लीं क्लीं क्लीं स्त्रावय स्त्रावय वशिष्ठ नारद संवाद गौतम विश्वामित्र दक्षप्रजापति ब्रह्माण ऋषयः सर्वैश्वर्यकारिणि श्री दुर्गा देवता गायत्र्या शापानुग्रह कुरु कुरु हुं फट्।
ॐ ऐं ह्लीं क्लीं नमः शिवायै अमोघ कवच स्वरूपिण्यै ब्रह्म वशिष्ठ विश्वामित्र शापाद् विमुक्ता भव। ॐ क्रीं काल्यै कालि ह्लीं फट् स्वाहायै ऋग्वेद स्वरूपिण्यै ब्रह्म वशिष्ठ शापाद् विमुक्ता भव।

**मूलमंत्र-** ऐं ह्लीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। ॐ नमश्चामुण्डे श्री बगलानने अघोर अमोघे वरदे विच्चे ॐ ग्लौं हूं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ऐं ह्लीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।

।। स्तोत्र।।

### ।। शिव उवाच ।।

श्रृणु देवि प्रवक्ष्यामि, कुंजिका स्तोत्रमुत्तमम्।
येन मंत्र प्रभावेण, चंडी जापः शुभो भवेत्।। 1 ।।

न कवचं नार्गला स्तोत्रं, कीलकं न रहस्यकम्।
न सूक्तं नापि ध्यानं च, न न्यासो न च वार्चनम्।। 2।।
कुंजिका पाठ मात्रेण, दुर्गा पाठ फलं लभेत्।
अति गुह्यतरं देवि, देवानामपि दुर्लभम्।। 3।।
गोपनीयं प्रयत्नेन, स्वयो निरिव पार्वति।
मारणं मोहनं वश्यं, स्तम्भनोच्चाटनादिकम्।
पाठ मात्रेण संसिद्धयेत्, कुंजिका स्तोत्रमुत्तमम्।। 4।।
नमस्ते रुद्र रूपिण्यै, नमस्ते मधुमर्दिनी।
नमः कैटभ हारिण्यै, नमस्ते महिषार्दिनि।। 5।।
नमस्ते शुंभ हन्त्रै च, निशुंभासुर घातिनि।
जाग्रतं हि महादेवि, जपं सिद्धं कुरुष्व मे।। 6।।
ऐंकारी सृष्टि रूपायै, ह्रींकारी प्रतिपालिका।
क्लींकारी काम रूपिण्यै, बीजरूपे नमोऽस्तु ते।। 7।।
चामुण्डा चण्डघाती च, यैकारी वरदायिनी।
विच्चे चाऽभयदा नित्यं, नमस्ते मंत्र रूपिणि।। 8।।

## ।। श्री बगला मंत्र ।।

ॐ ह्लीं बगलामुखि नित्यम् ऐहि ऐहि रविमंडल मध्यात् अवतर अवतर सान्निध्यं कुरु कुरु स्वाहा। ऐं ह्रीं श्रीं ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः बगले चतुर्भुजे मुद्गर शर संयुते दक्षिणे जिह्वा वज्र संयुते वामे श्रीमहाविद्ये पीत वस्त्रे पंच महाप्रेताधि रूढ़े सिद्ध विद्याधर वंदिते ब्रह्म विष्णु रुद्र पूजिते आनंद स्वरूपे विश्व सृष्टि स्वरूपे महाभैरव रूप धारिणि स्वर्ग मृत्यु पातालस्तंभिनि वाम मार्गाश्रिते श्री बगले ब्रह्म विष्णु रुद्र रूप निर्मिते षोडश कला परिपूरिते दानव रूप सहस्त्रादित्य शोभिते त्रिवर्णे एहि एहि मम हृदयं प्रवेशय प्रवेशय शत्रु मुखंस्तंभय स्तंभय अन्य भूत पिशाचान् खादय खादय अरि सैन्यं विदारय विदारय परविद्यां परचक्रं छेदय छेदय वीरचक्रंधनुषा संभारय संभारय त्रिशूलेन छिन्दि छिन्दि पाशेन बंधयबंधय भूपतिं वश्यं कुरु कुरु संमोहय संमोहय विना जाप्येन सिद्धय सिद्धय विना मंत्रेण सिद्धिं कुरु कुरु

सकल दुष्टान् घातय घातय मम त्रैलोक्यं वश्यं कुरु कुरु सकल कुल राक्षसान् दह दह पच पच मथ मथ हन हन मर्दय मर्दय मारय मारय भक्षय भक्षय मां रक्ष रक्ष विस्फोटकादीन् नाशयनाशय ॐ ह्लीं विषमज्वरं नाशय नाशय विषं निर्विषं कुरु कुरु ॐ ह्लीं बगलामुखि हुं फट् स्वाहा।

धां धीं धूं धूर्जटे पत्निं, वां वीं वूं वागधीश्वरी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि, शां शीं शूं मे शुभं कुरु।। 9 ।।
हुं हुं हुंकार रूपिण्यै, जं जं जं जम्भनादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे, भवान्यै ते नमो नमः।। 1 0 ।।
अं कं चं टं तं पं यं शं बिन्दुराभिर्भव।
आविर्भव विमर्दय हं सं लं क्षं मयि जाग्रय जाग्रय।
त्रोटय–2 जम्भय–2, दीपय–2 मोचय हूं फट् जां वौषट्।।1 1 ।।
ऐं ह्लीं क्लीं रंजय–2 संजय–2, गुंजय–2 दीप्तं कुरु–2 स्वाहा।। 1 2 ।।
पां पीं पूं पार्वती पूर्णा, खां खीं खूं खेचरी तथा।
म्लां म्लीं म्लूं दीव्यती पूर्णा, कुंजिकायै नमो नमः।
सां सीं सप्तशतीं सिद्धिं, कुरुष्व जप मात्रतः।। 1 3 ।।
इदं तु कुंजिका स्तोत्रं, मंत्र जागर्ति हेतवे।
अभक्ते नैव दातव्यं, गोपितं रक्ष पार्वति।। 1 4 ।।
यस्तु कुंजिकया देवि, हीनां सप्तशतीं पठेत्।
न तस्य जायते सिद्धिः, अरण्ये रोदनं यथा।। 1 5 ।।

## ।। अथ सप्त श्लोकी दुर्गा।।

**शिव उवाच-** देवि त्वं भक्त सुलभे, सर्व कार्य विधायिनी।
कलौ हि कार्य सिद्ध्यर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः।।

**देव्युवाच-** श्रृणु देव प्रवक्ष्यामि, कलौ सर्वेष्ट साधनम्।
मया तवैव स्नेहे, नाप्यम्बा स्तुतिः प्रकाश्यते।।

ॐ अस्य श्रीदुर्गा सप्तश्लोकी स्तोत्र मन्त्रस्य नारायणऋषिः अनुष्टुप् छन्दःश्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः श्रीदुर्गा प्रीत्यर्थम् सप्तश्लोकी दुर्गा पाठे विनियोगः।।

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा। बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति।। 1 ।।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः, स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्य दुःख भय हारिणि का त्वदन्या, सर्वोपकार करणाय सदाऽऽर्द्र चित्ता।। 2 ।।

सर्व मंगल मंगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि, नारायणि नमोऽस्तु ते।। 3 ।।

शरणागत दीनार्त, परित्राण परायणे। सर्वस्यार्तिहरे देवि, नारायणि नमोऽस्तु ते।। 4 ।।

सर्व स्वरूपे सर्वेशे, सर्व शक्ति समन्विते। भयेभ्यस्त्राहि नो देवि, दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।। 5 ।।

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा, रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां, त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति।। 6 ।।

सर्वा बाधा प्रशमनं, त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि। एवमेव त्वया कार्यम् अस्मद् वैरि विनाशनम्।। 7 ।।

## ।। अथ दुर्गा द्वात्रिंशन्नाम माला।।

दुर्गा दुर्गार्ति शमनी, दुर्गापद्वि निवारिणी। दुर्गमच्छेदनी दुर्ग, साधिनी दुर्ग नाशिनी।। 1 ।।
दुर्गतोद्धारिणी दुर्ग, निहन्त्री दुर्गमापहा। दुर्गमज्ञानदा दुर्ग, दैत्य लोक दवानला।। 2 ।।
दुर्गमा दुर्गमालोका, दुर्गमात्म स्वरूपिणी। दुर्ग मार्गप्रदा दुर्गम्, अविद्या दुर्गमाश्रिता।। 3 ।।
दुर्गमज्ञान संस्थाना, दुर्गमध्यान भासिनी। दुर्गमोहा दुर्गमगा, दुर्गमार्थ स्वरूपिणी।। 4 ।।
दुर्गमासुर संहन्त्री, दुर्गमायुध धारिणी। दुर्गमांगी दुर्गमता, दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी।। 5 ।।
दुर्ग भीमा दुर्ग भामा, दुर्गभा दुर्ग दारिणी। नामावलिमिमां यस्तु, दुर्गाया मम मानवः।। 6 ।।
पठेत् सर्व भयान्मुक्तो, भविष्यति न संशयः।। 7 ।।

## ।। श्री दुर्गा गुप्त सप्तशती ।।

ॐ ब्रीं ब्रीं ब्रीं वेणु हस्ते स्तुत सुर बटुकैर्हां गणेशस्य माता।
स्वानन्दे नन्दरूपे अनहतनिरते मुक्तिदे मुक्तिमार्गे।।
हंसः सोहं विशाले वलयगति हसे सिद्ध देवी समस्ता।
हीं हीं हीं सिद्ध लोके कच रूचि विपुले वीरभद्रे नमस्ते ।।1 ।।

ह्रींक्काररोच्चारयन्ती मम हरति भयं चण्डमुण्डौ प्रचण्डे।
खां खां खां खड्ग पाणे ध्रक ध्रक ध्रकिते उग्ररूपे स्वरूपे ।।
हुँ हुँ हुंकार नादे गगन भुवि तले व्यापिनी व्योमरूपे।
हं हं हंकार नादे सुरगण नमिते चण्डरूपे नमस्ते ।।2 ।।
ऐं लोके कीर्तयन्ती मम हरतु भयं राक्षसान् हन्यमाने।
घ्रां घ्रां घ्रां घोर रूपे घघ घघ घटिते घर्घरे घोर रावे ।।
निर्मांसे काकजङ्घे घसित नख नखा धूम्रनेत्रे त्रिनेत्रे।
हस्ताब्जे शूलमुण्डे कुल कुल कुकुले सिद्धहस्ते नमस्ते ।।3 ।।
ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ऐं कुमारी कुह कुह मखिले कोलिमानुरागे।
मुद्रासंज्ञ त्रिरेखा कुरू कुरू सततं श्रीमहामारि गुह्रे ।।
तेजोङ्गे सिद्धिनाथे मनुपवन चले नैव आज्ञा निधाने ।
ऐङ्कारे रात्रिमध्ये स्वपित पशुजने तंत्राकान्ते नमस्ते ।। 4 ।।
ॐ व्रां व्रीं व्रूं व्रैं कवित्वे दहनपुर गते रुक्मिरूपेण चक्रे।
त्रिः शक्त्या युक्तवर्णादिक करनमिते दादिवं पूर्व वर्णे।।
ह्रीं स्थाने कामराजे ज्वल ज्वल ज्वलिते कोशिनि कोशिपत्रे।
स्वच्छन्दे कष्टनाशे सुरवर वपुषे गुह्यमुण्डे नमस्ते ।।5 ।।
ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घोरतुण्डे घघ घघ घघघे घर्घरान्याङ्घ्रिघोषे।
ह्रीं क्रीं द्रूं द्रोञ्च चक्रे रर रर रमिते सर्वज्ञाने प्रधाने ।।
द्रीं तीर्थेषु च ज्येष्ठे जुग जुग जजुगे म्लीं पदे कालमुण्डे।
सर्वांगे रक्तधोरा मथन करवरे वज्रदण्डे नमस्ते ।।6 ।।
ॐ क्रां क्रीं क्रूं वामनमिते गगन गडगडे गुह्य योनिस्वरूपे।
वज्रांगे वज्रहस्ते सुरपति वरदे मत्त मातंगरूढे ।।
स्वस्तेजे शुद्धदेहे लललल ललिते छेदिते पाशजाले।
कुण्डल्याकाररूपे वृष वृषभ ध्वजे ऐन्द्रि मातर्नमस्ते ।।7 ।।

ॐ हुँ हुँ हुंकारनादे विषमवशकरे यक्ष वैताल नाथे।

सुसिद्ध्यर्थे सुसिद्धे: ठठ ठठ ठठठ: सर्वभक्षे प्रचण्डे।।

जूं स: सौं शान्ति कर्मेऽमृत मृतहरे नि:समे सं समुद्रे।

देवि त्वं साधकानां भव भव वरदे भद्रकाली नमस्ते ।।8।।

ब्रह्माणी वैष्णवी त्वं त्वमासि बहुचरा त्वं वराहस्वरूपा।

त्वं ऐन्द्री त्वं कुबेरी त्वमसि च जननी त्वं कुमारी महेन्द्री।।

ऐं ह्रीं क्लींङ्कार भूते वितलतल तले भूतले स्वर्गमार्गे।

पाताले शैलशृंगे हरि हरि भुवने सिद्धचण्डी नमस्ते ।।9।।

हं लं क्षं शौण्डिरूपे शमित भव भये सर्वविघ्नान्त विघ्ने।

गां गीं गूं गैं षडंगे गगन गति गते सिद्धिदे सिद्धसाध्ये।।

वं क्रं मुद्रा हिमांशोर्प्रहसतिवदने त्र्यक्षरे ह्सैं निनादे।

हां हूं गां गीं गणेशी राजमुखजननी त्वां महेशीं नमामि ।। 10 ।।

## ।। सर्व कामना मंत्र ।।

**विनियोग-** ॐ अस्य श्री 'देवि प्रपन्नार्तिहरे' मंत्रस्य वह्नि पुरोगमा ब्रम्हादयो सेन्द्रा सुरा ऋषय: उपजाति छन्द: श्री महालक्ष्मी देवता श्रीं बीजं श्री अपरा शक्ति: छिन्नादि दश महाविद्या: रजोगुण: घ्राण ज्ञानेन्द्रियं अद्भुत रस: लिंग कर्मेन्द्रियं सौम्य स्वर: जल तत्वं प्रतिष्ठा कला श्रीं उत्कीलनं प्रार्थना मुद्रा ममक्षेमस्थैर्य आयुरारोग्याभि वृद्ध्यर्थम् श्री जगदम्बा योगमाया भगवती दुर्गा प्रसाद सिद्धय्र्थम् च नमो युत प्रणव वाग्बीज स्वबीज लोम विलोम पुटितोक्त मन्त्र जपे विनियोग:।।

**करन्यास:-** ॐ ऐं श्रीं अंगुष्ठाभ्यां नम:। नमो नम: तर्जनीभ्यां स्वाहा।

देवि प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद मध्यमाभ्यां वषट्। प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य

अनामिकाभ्यां हुं। प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।

त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य करतल करपृष्ठाभ्यां फट्।।

**षडंगन्यासः-** ॐ ऐं श्रीं हृदयाय नमः। नमो नमः शिरसे स्वाहा। देवि प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद शिखायै वषट्। प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य कवचाय हुं। प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं नेत्रत्रयाय वौषट्। त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य अस्त्राय फट्।।

**ध्यानम्-** संरक्ताम्बुज पादयुग्म विलसन्, मंजु क्वणन् नूपुरा।
संसारार्णव तारणैक तरणिः, लावण्य वारां निधिः।।
लीला लाल तमं शुकं मधुरमा, संलालयन्ती गिरा।
श्री शैलराज तनया प्रभजे, दुष्ट दल प्रभंजिनी।।

**मंत्र-** ॐ ऐं श्रीं नमः देवि प्रपन्नार्ति हरे प्रसीद, प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य। प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं, त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य नमो श्रीं ऐं ॐ।।

**सहस्त्र जपात् सिद्धिः, दूर्वाकुंर, पुष्प, फल, तिल घृतादि हव्येन होमः।**

## ।। मृतसंजीवनी महामृत्युंजय महामंत्र ।।

**विनियोगः-** ॐ अस्य श्री मृतसंजीवनी महामृत्युंजय मंत्रस्य महर्षि भृगु ऋ षिः पंक्ति गायत्री अनुष्टुप् छन्दः सदाशिव महामृत्युंजय रुद्रो देवता श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

**अंगन्यासः-** ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूल पाणये स्वाहा हृदयाय नमः। ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः यजामहे। ॐ नमो भगवते रुद्राय अमृत मूर्तये मां जीवय जीवय शिरसे स्वाहा। ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टि वर्द्धनम् ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्र शिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट्। ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः उर्वारुक मिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते त्रिपुरान्तकाय ॐह्रां ह्रीं कवचाय हुम्। ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग् यजुः साम मंत्राय नेत्रत्रयाय बौषट्। ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय ॐ अग्नित्रयाय ज्वल ज्वालाय मां रक्ष रक्ष अघोराय अस्त्राय फट्।।

**ध्यानम्**- ॐ चन्द्रोद् भाषित मूर्धजं सुरपतिं पीयूष पात्रं वहत्,
हस्ताब्जे न दधत्सु दिव्य ममलैः हास्यास्य पंकेरुहम्।
सूर्येन्द्वग्नि विलोचनं करतले पाशाक्ष सूत्रां कुशाम्,
भोजं विभ्रत मक्षयं पशुपतिं मृत्युंजयं संस्मरे।।

**मंत्रः**- ॐ ह्रौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं ॐ सुगन्धिं पुष्टि वर्द्धनम् ॐ भर्गो देवस्य धीमहि ॐ उर्वारुकमिव बन्धनान् ॐ धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॐ स्वः भुवः भूः सः जूँ ह्रौं ॐ।।

**जपार्पण**- ॐ मृत्युंजय महारुद्र, त्राहि मां शरणागतम्।
जन्म मृत्यु जरा व्याधिः, पीडितं कर्म बन्धनैः।।

## ।। श्री कनकधारा स्तोत्रम् ।।

ॐ अंगं हरेः पुलक भूषणमाश्रयंती, भृंगांनेव मुकुलाभरणं तमालम्।
अंगीकृताखिल विभूतिरपांग लीला, मांगल्यदाऽस्तु मम मंगल देवतायाः।। 1 ।।
मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः, प्रेमत्रपा प्रणिहितानि गतागतानि।
माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या, सा मे श्रियं दिशतु सागर सम्भवायाः।। 2 ।।
विश्वामरेन्द्र पद विभ्रम दान दक्षम्, आनन्द हेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि।
ईषन्निषीदतु मयि क्षण मीक्षणार्ध, मिन्दी वरोदर सहोदर मिन्दिरायाः।। 3 ।।
आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्दं, आनंदकंद मनिमेष मनंग तंत्रम्।
आके करस्थित कनीनिक पक्ष्मनेत्रं, भूत्यै भवेन्मम भुजंग शयांगनायाः।। 4 ।।
बाह्वांतरे मधुजितः श्रित कौस्तुभे या, हारा वलीव हरि नीलमयी विभाति।
कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला, कल्याणमावहतु मे कमला लयायाः।। 5 ।।
कालाम्बुदालि ललितोरसि कैटभारेः, धाराधरे स्फुरतिया तडिदंगनेव।
मातुः समस्त जगतां महनीय मूर्तिः, भद्राणि मे दिशतु भार्गव नंदनायाः।। 6 ।।

प्राप्तं पदं प्रथमतः किल यत्प्रभावान्, मांगल्य भाजि मधु माथिनि मन्मथेन।
मय्यापतेत्तदिह मन्थर मीक्षणार्धम्, मंदालसं च मकरालय कन्यकायाः।। 7 ।।
दद्याद् दयानु पवनो द्रविणाम्बु धाराम्, अस्मिन्न किंचन विहंग शिशौ विषण्ये।
दुष्कर्म घर्म मपनीय चिराय दूरम्, नारायण प्रणयिनी नयनाम्बु वाहः।। 8 ।।
इष्टा विशिष्ट मतयोऽपि यया दयार्द्र, दृष्ट्या त्रिविष्ट पपदं सुलभं लभन्ते।
दृष्टिः प्रहृष्ट कमलोदर दीप्ति रिष्टां, पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्कर विष्टरायाः।। 9 ।।
गीर्देवतेति गरुणध्वज सुन्दरीति, शाकम्भरीति शशि शेखर वल्लभेति।
सृष्टि स्थिति प्रलय केलिषु संस्थितायै, तस्यै नमस्त्रि भुवनैक गुरोस्तरुण्यै।। 10 ।।
श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभ कर्म फल प्रसूत्यै, रत्यै नमोऽस्तु रमणीय गुणार्ण वायै।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्र निकेतनायै, पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तम वल्लभायै।। 11 ।।
नमोऽस्तु नालीक निभाननायै, नमोऽस्तु दुग्धोदधि जन्म भूत्यै।
नमोऽस्तु सोमामृत सोदरायै, नमोऽस्तु नारायण वल्लभायै।। 12 ।।
सम्पत्कराणि सकलेन्द्रिय नंदनानि, साम्राज्य दान विभवानि सरोरुहाक्षि।
त्वद् वन्दनानि दुरिता हरणोद्यतानि, मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये।। 13 ।।
यत् कटाक्ष समुपासना विधिः, सेवकस्य सकलार्थ सम्पदः।
संतनोति वचनांग मानसैस्त्वाम्, मुरारि हृदयेश्वरीं भजे।। 14 ।।
सरसिज निलये सरोज हस्ते, धवलतरां शुक गन्ध माल्यशोभे,
भगवति हरि वल्लभे मनोज्ञे, त्रिभुवन भूतिकरि प्रसीद मह्यम्।। 15 ।।
दिग् घस्तिभिः कनक कुम्भ मुखा वसृष्ट, स्वर्वाहिनी विमल चारु जल प्लुतांगीम्।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष, लोकाधि नाथ गृहिणी ममृताब्धि पुत्रीम्।। 16 ।।
कमले कमलाक्ष वल्लभे त्वम्, करुणा पूर तरंगि तैर पांगैः।
अवलोकय माम किन्चनानाम्, प्रथमं पात्रं कृत्रिमं दयायाः।। 17 ।।
स्तुवन्ति ये स्तुतिभि रमूभिरन्वहं, त्रयीमयीं त्रिभुवन मातरं रमाम्।
गुणाधिका गुरुतर भाग्य भागिनो, भवन्ति ते भुवि बुध भाविताशयाः।। 18 ।।



# ।। चाक्षुषोपनिषद् ।।

**विनियोगः**

ॐ अस्याः चाक्षुषी विद्यायाः अहिर्बुध्न्य ऋषिः गायत्री छंदः सूर्योदेवता चक्षुरोगनिवृत्तये विनियोगः

**पाठ :**

ॐ चक्षुः चक्षुः चक्षुः तेजस्थिरोभव । माम् पाहि पाहि त्वरितम् चक्षुरोगान् शमय शमय। मामजातरूपं तेजो दर्शय दर्शय । यथाहम् अधोनस्यां तथा कल्पय कल्पय । कल्याणम् कुरू कुरू । यानि मम पूर्वजन्मो उपार्जितानि चक्षुः प्रतिरोधक दुष्कृतानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय । ॐ नमः चक्षुः तेजोदात्रे दिव्याय भास्कराय । ॐ नमः कल्याणकराय अमृताय । ॐ नमः सूर्याय । ॐ नमो भगवते सूर्याय अक्षितेजसे नमः । खेचराय नमः । महते नमः । रजसे नमः । तमसे नमः । असतो मा सद्गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय । मृत्योर्मा अमृतम् गमय । उष्णो भगवान शुचिरूपः । हंसो भगवान शुचिप्रतिरूपः । य इमाम् चाक्षुष्मतीम् विद्याम् ब्राह्मणो नित्यम् अधियते न तस्य अक्षिरोगो भवति । न तस्य कुले अंधो भवति। अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा विद्यासिद्धिर्भवति । विश्वरूपम् घृणिनम् जातवेदसम् हिरण्मयम् पुरुषम् ज्योतीरूपम् तपंतम् सहस्ररशिमः शतधा वर्तमानः पुरः प्रजानाम् उदय इति ऐष सूर्यः । ॐ नमो भगवते आदित्याय ।।

## प्रार्थना

देव तुम्हारे कई उपासक, कई ढंग से आते हैं।
सेवा में बहुमूल्य वस्तुएँ लाकर तुम्हें चढ़ाते हैं।।
मैं ही हूँ गरीब एक ऐसा, जो कुछ साथ नहीं लाया।
फिर भी साहस कर मन्दिर में, पूजा करने को आया।।
धूप दीप नैवेद्य नहीं है, झाँकी का श्रृंगार नहीं।
पास गले में पहनाने को, फूलों का भी हार नहीं।।
नहीं दान है, नहीं दक्षिणा, खाली हाथ चला आया।
पूजा की विधि नहीं जानता, फिर भी नाथ चला आया।।

पूजा और पुजापा प्रभुवर, इसी पुजारी को समझो।
दान दक्षिणा और निछावर, इसी भिखारी को समझो।।
मैं उन्मत प्रेम का प्यासा, हृदय दिखाने आया हूँ।
जो कुछ है बस यही पास में, इसे चढ़ाने आया हूँ।।
चरणों में अर्पित हूँ तेरे, चाहो तो स्वीकार करो।
यह तो वस्तु तुम्हारी ही है, ठुकरा दो या प्यार करो।।

## यज्ञ नारायण प्रार्थना

यज्ञ रूप प्रभु हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिये।
छोड़ देवें छल कपट को, मानसिक बल दीजिये।।
वेद की बोलें रिचायें, सत्य को धारण करें।
हर्ष में हों मगन सारे, शोक सागर से तरें।।
विष्णु रुद्रादिक यज्ञ से, विश्व का उपकार हो।
धर्म मर्यादा चलाकर, लाभ दें संसार को।।
नित्य श्रद्धा भक्ति से, यज्ञादि हम करते रहें।
रोग पीड़ित विश्व के, संताप सब हरते रहें।।
कामना मिट जाये मन से, पाप अत्याचार की।
भावनायें पूर्ण होवें, यज्ञ से नर नार की।।
लाभकारी हो हवन, हर जीवधारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हों शुभ, गन्ध को धारण किए।।
स्वार्थ भाव मिटे हमारा, प्रेम पथ विस्तार हो।
इदं न मम का सार्थक, प्रत्येक में व्यवहार हो।।
हाथ जोड़ झुकायें मस्तक, वंदना हम कर रहे।
हे नाथ करुणा रूप करुणा, आपकी सब पर रहे।।



# आरती (श्री सिद्धि विनायक जी)



श्री सिद्धिविनायक गणनायक, दीन दयाल।
आरती उतारें हम सब, परम कृपाल।।
माता तेरी पार्वती, पिता त्रिपुरारी हैं।
ऋद्धि सिद्धि पत्नी तेरी, लीला प्रभु न्यारी है।।
लक्ष लाभ सुत हैं दोनों, करते मालामाल।। 1 ।। आरती0 ....
वैरिच्य लम्बोदर, शूर्पकर्ण नाम हैं।
विघन विनाशक तेरी, लीला महान है।।
मूसे की सवारी तेरी, चंद्रमा है भाल।। 2 ।। आरती0 .....
ब्रम्हा विष्णु रुद्रदेव से, पहले पूजा तेरी है।
पान सुपारी फूल दूर्वा, यही भेंट जरूरी है।।
संत भक्त भर–भर लायें, लड्डुओं के थाल।। 3 ।। आरती0 .....
तिथी चतुर्थी के दिन जो जन, व्रत पूजा करते हैं।
भोग लगा सिंदूर चढ़ाये, नीराजन भी करते हैं।।
नाम लेते काट देते, संकटों के जाल।। 4 ।। आरती0 .....
गणपति गजानन की, जो जन आरति गाते हैं।
वक्रतुण्ड महाकाय, पाप मिटाते हैं।।
एकदंत दयावंत, परम कृपाल।। 5 ।। आरती0 .....



# आरती (श्री राधारमण जी)



**आरति राधा राधावर की।**

**महाभाव रसराज प्रवर की।।**

श्याम वरण पीताम्बर धारी,
हेम वरण तन नीली सारी।
सदा परस्पर सुख संचारी,
नीलकमल कर मुरलीधर की।। 1 ।। आरति0 ....

चारु चंद्रिका तन मन हारी,
मोर पिच्छ सुन्दर सिर धारी।
कुँज कुँवर नित कुँजविहारी,
अधरनि मृदु मुस्कान मधुर की।। 2 ।। आरति0 ....

प्रेम दिनेश काम तन हारी,
रहित सुखेच्छा निज अविकारी।
उर पावन रस संग्रहकारी,
भक्तकमल हित हिम सरवर की।। 3 ।। आरति0 ....



# आरती (श्री भोले नाथ जी)



गौरीशंकर भगवान की है आरती। भक्तजनों को भवसागर से तारती।।
यह वरदानी, अवढ़रदानी, पर्वत में डेरा डाले। हैं नाग गले में डाले।
शिव भंडारी, हे करतारी, श्री विश्वनाथ की आरती।। भक्तजनों का.......
यह महाकाल, कालों के काल, यह मानसरोवर वाले। हैं पियें भंग के प्याले।
यह मह ादेव, देवों के देव, श्री महाकाल की आरती।। भक्तजनों का.......
यह कैलासी, घट–घटवासी, मरघट में डेरा डाले। हैं भस्म रमाने वाले।
हे भूतनाथ, अनाथों नाथ, औढ़रदानी की आरती।। भक्तजनों का.......



# आरती (श्री पराम्बा भगवती जी)

मैया ऋद्धी दे सिद्धी दे, अष्ट नव निद्धी दे, वंश में वृद्धी दे, श्री भवानी।।
चरणों में प्रीत दे, संत संग रीत दे, जग में जीत दे, श्री भवानी।। 1 ।। मैया0 ...
करे शेर की सवारी, जाके चरणों की बलिहारी।
जिसके लोकड़िया अगवाड़ी, मेरे दुश्मन को ललकारती।। 2 ।। मैया0 ...
ध्यावे शक्ति को संसार, सभी नर और नार।
बेड़ा हो भव सागर से पार, वेद पढ़ें विद्यार्थी।। 3 ।। मैया0 ...
दुःखों को दूर कर, सुखों से भरपूर कर।
दुष्टों को चूर कर, जागती है ज्योत मैया राजरानी।। 4 ।। मैया0 ...
मैया ज्ञान दे ध्यान दे, महा वरदान दे।
सर्व भूमी राज दे, श्री राज रानी।। 5 ।। मैया0 ...
जिस पर होती है प्रसन्न, उसके काटे सारे फंद।
हो सकल आनन्द, कीजो मैया जी की आरती।। 6 ।। मैया0 ....

# आरती (पितर देवता जी)



मैं हाथ जोड़कर द्वार खड़ा, मेरे संकट काटो पितरो जी।

मैं जल की गगरिया लाया हूँ, तुम प्रेम से नहा लो पितरों जी।। 1 ।। मैं0...

मैं पाँचो वस्त्र लाया हूँ, तुम प्रेम से पहनो पितरों जी।। 2 ।। मैं0...

मैं चंदन घिसकर लाया हूँ, तुम तिलक लगा लो पितरों जी।। 3 ।। मैं0...

मैं माला गूँथकर लाया हूँ, तुम प्रेम से पहनो पितरों जी।। 4 ।। मैं0...

मैं लड्डू बर्फी लाया हूँ, तुम भोग लगा लो पितरों जी।। 5 ।। मैं0...

मैं दूध कटोरा लाया हूँ, तुम प्रेम से पी लो पितरों जी।। 6 ।। मैं0...

मैं खाली झोली लाया हूँ, तुम प्रेम से भर दो पितरों जी।। 7 ।। मैं0...

मैं जोगी बनकर आया हूँ, तुम दर्श दिखाओ पितरों जी।। 8 ।। मैं0...

मैं अपना मनोरथ लाया हूँ, तुम पूरण कर दो पितरों जी।। 9 ।। मैं0...



# आरती (श्री क्षेत्रपाल जी)



ॐ जय क्षेत्रपाल हरे, हरि जय क्षेत्रपाल हरे।
उनन्चस नाम हैं, तेरे नाना रूप धरे।।
ॐ जय क्षेत्रपाल हरे

यज्ञ पाठ पूजन में तुझको सब ध्यावें।
ऐरावत घंटेश्वर नाम तेरे गावें।।
ॐ जय क्षेत्रपाल हरे

भूमिया खेड़ा नाम से तेरे, ग्राम नगर साजे।
तेरे नाम का घण्टा, जगह जगह बाजे।।
ॐ जय क्षेत्रपाल हरे

उड़द, दही, चावल की बलि तुझको प्यारी।
भूत प्रेत डरते हैं, छवि तेरी न्यारी।।
ॐ जय क्षेत्रपाल हरे

चून दीप रख बलि पर, बलि पर चौराहे जावें।
भूत प्रेत बाधा से सब मुक्ति पावें।।
ॐ जय क्षेत्रपाल हरे

तुम्हीं नगर के स्वामी, तुम्हीं अन्नदाता।
तेरी पूजा कर नित, सुख सम्पत्ति पाता।।
ॐ जय क्षेत्रपाल हरे

क्षेत्रपाल की आरती, जो जन नित गावें।
'ओंकार' सब जन के संकट टल जावें।।
ॐ जय क्षेत्रपाल हरे



# आरती (श्री वास्तु पुरुष जी)



हे वास्तुपुरुष भूधारी, आरती मेरी स्वीकार करो ।
तुम्हें पूजें सब नर–नारि, आरती मेरी स्वीकार करो ।।

1. ब्रह्माजी मण्डल के स्वामी, कल्याण करो अन्तर्यामी ।
प्रभु विनती सुनो हमारी, आरती मेरी स्वीकार करो ।।

2. गृह वस्तु तू ही कहलाया है, भू–मण्डल शीश उठाया है ।
पातालवासी विषधारी, आरती मेरी स्कीकार करो ।।

3. सारी पृथ्वी डगमग डोले, जब वास्तु देव लेवें झोले ।
जन जन हैं तेरे आभारी, आरती मेरी स्वीकार करो ।।

4. कान्हा के शीश की छैया हो, विष्णु के शयन की शैया हो ।
मंथन में नेति तुम्हारी, आरती मेरी स्वीकार करो ।।

5. बिन पैर चले बिन कान सुने, 'ओंकार' आदि तुझे नमन करें ।
तेरी माल कण्ठ शिवधारी, आरती मेरी स्वीकार करो ।।

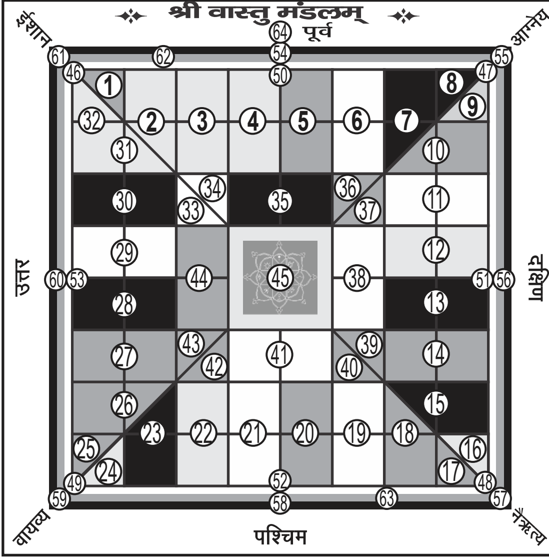


# प्रसादम्

## श्री देवी-देवता गायत्री मंत्र

**श्री गणेश**- ॐ एकदन्ताय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि, तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ।
**श्री दुर्गा**- ॐ देव्यै ब्रह्माण्यै विद्महे, कन्याकुमार्यै धीमहि, तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्।
**श्री हनुमान**- ॐ आंजनेयाय विद्महे, वायुपुत्राय धीमहि, तन्नो हनुमतः प्रचोदयात।
**श्री नर्मदा**- ॐ नर्मदायै विद्महे, रेवादेव्यै धीमहि, तन्नो नर्मदा प्रचोदयात् ।
**श्री दत्तात्रेय**- ॐ दिगम्बराय विद्महे, अवधूताय धीमहि, तन्नो दत्तः प्रचोदयात्।
**श्री विष्णु**- ॐ नारायणाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि, तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।
**श्री राम**- ॐ दाशरथाय विद्महे, सीतावराय धीमहि, तन्नो रामः प्रचोदयात् ।
**श्री सीता**- ॐ जनकात्मजायै विद्महे, रामप्रियायै धीमहि, तन्नो सीताः प्रचोदयात् ।
**श्री लक्ष्मण** - ॐ दाशरथाय विद्महे, ऊर्मिलेशाय धीमहि, तन्नो लक्ष्मणः प्रचोदयात् ।
**श्री सूर्य**- ॐ भास्कराय विद्महे, सहस्त्रकराय धीमहि, तन्नो सूर्यः प्रचोदयात् ।
**श्री लक्ष्मी**- ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे, विष्णुपत्न्यै च धीमहि, तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ।
**श्री कृष्ण**- ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि, तन्नो कृष्णः प्रचोदयात् ।
**श्री राधा**- ॐ वृषभानुजायै विद्महे, कृष्णवल्लभायै धीमहि, तन्नो राधा प्रचोदयात् ।
**श्री सर्प**- ॐ भुजंगेशाय विद्महे, सर्पराजाय धीमहि, तन्नो सर्पः प्रचोदयात् ।
**श्री शिव**- ॐ तत्पुरुषाय विद्महे, महादेवाय धीमहि, तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।
**श्री गरुण**- ॐ वैनतेयाय विद्महे, स्वर्णपक्षाय धीमहि, तन्नो गरुडः प्रचोदयात्।
**श्री गुरू**- ॐ परब्रह्मणे विद्महे, गुरुदेवाय धीमहि, तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ।
**श्री कुबेर** - ॐ वैश्रवणाय विद्महे, धनाध्यक्षाय धीमहि, तन्नो कुवेरः प्रचोदयात् ।
**श्री नृसिंह**- ॐ नृसिंहाय विद्महे, वज्रदन्ताय धीमहि, तन्नो नृसिंहः प्रचोदयातृ।
**श्री सरस्वती**- ॐ ऐं वाग्देव्यै विद्महे कामराजाय धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।
**श्री नारायण**- ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो नारायणयः प्रचोदयात्।
**श्री परशुराम**- ॐ जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि। तन्नो परशुरामः प्रचोदयात्।
**अग्नि**- ॐ महाज्वालाय विद्महे अग्निमध्न्याय धीमहि। तन्नोऽग्निः प्रचोदयात्।
**श्री तुलसी**- ॐ श्रीत्रिपुराय हृदयाय तुलसीपत्राय धीमहि। तन्नो तुलसी प्रचोदयात्।
**श्री अन्नपूर्णा**- ॐ भगवत्यै च विद्महे माहेश्वय्यै च धीमहि। तन्नोऽन्नपूर्णा प्रचोदयात्।
**श्री बगलामुखी**- ॐ बगलामुख्यै च विद्महे स्तम्भिन्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

# मंडल चक्रम्



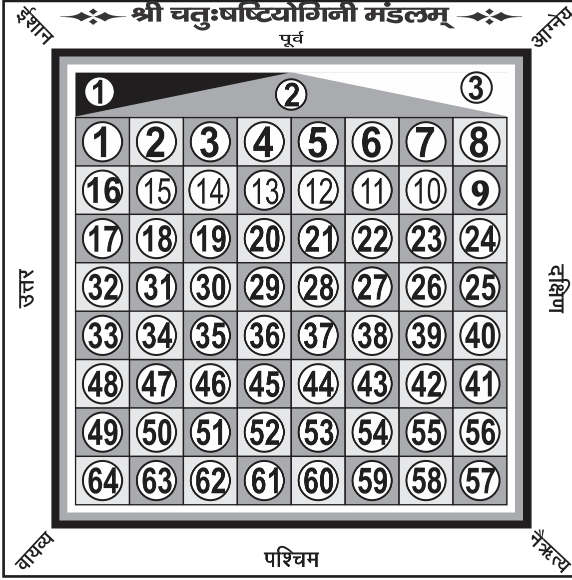


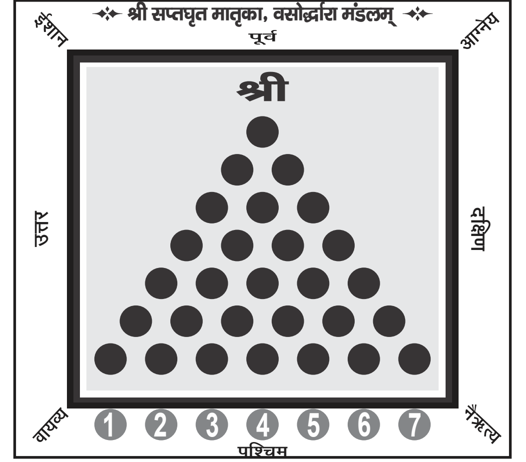


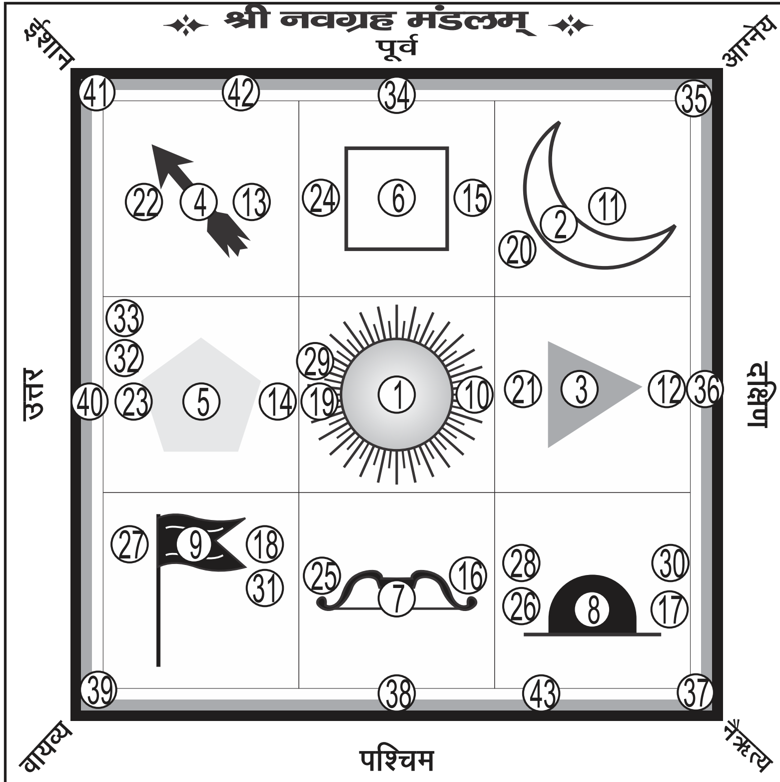
## रंग संकेत

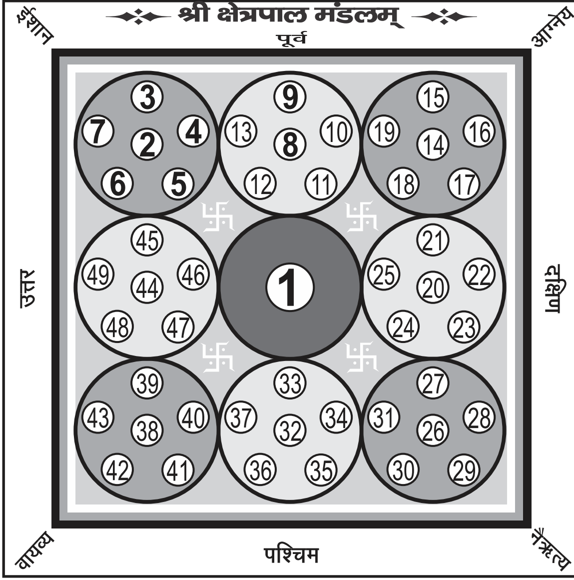
| | |
|---|---|
| ■ | काला |
| ■ | पीला |
| ■ | हरा |
| ■ | लाल |
| □ | सफेद |

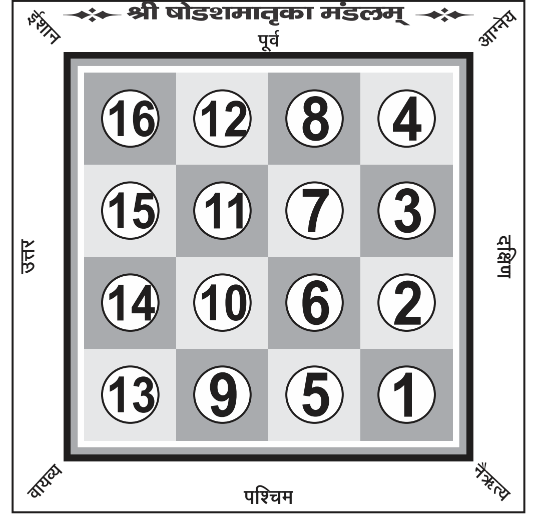


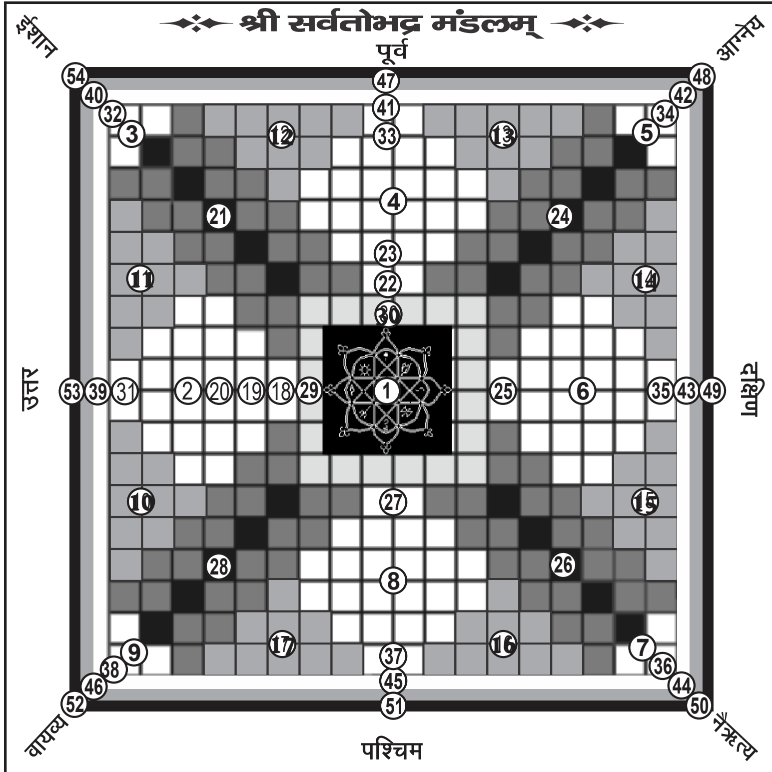

श्री चतुःषष्टियोगिनी मंडलम्
पूर्व
ईशान
आग्नेय
उत्तर
दक्षिण
वायव्य
नैर्ऋत्य
पश्चिम


श्री सप्तघृत मातृका, वसोर्द्धारा मंडलम्
पूर्व
ईशान
आग्नेय
श्री
उत्तर
दक्षिण
वायव्य
नैर्ऋत्य
पश्चिम

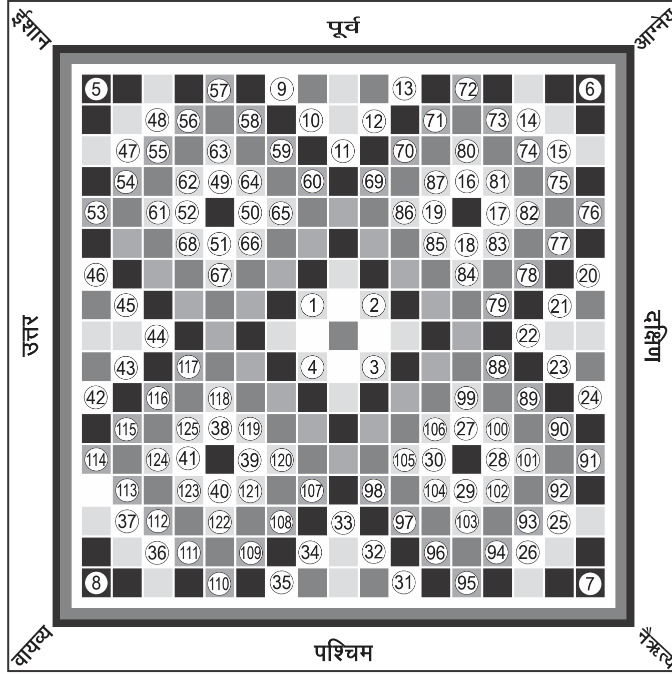

श्री नवग्रह मंडलम्
पूर्व
ईशान
आग्नेय
उत्तर
दक्षिण
वायव्य
नैर्ऋत्य
पश्चिम


श्री क्षेत्रपाल मंडलम्
पूर्व
ईशान
आग्नेय
उत्तर
दक्षिण
वायव्य
पश्चिम
नैऋत्य


श्री षोडशमातृका मंडलम्
पूर्व
ईशान
आग्नेय
उत्तर
दक्षिण
वायव्य
पश्चिम
नैऋत्य


श्री सर्वतोभद्र मंडलम्
पूर्व
ईशान
आग्नेय
उत्तर
दक्षिण
वायव्य
पश्चिम
नैऋत्य

## ✧ श्री गौरीतिलक मंडलम् ✧




## ✧ श्री रामभद्र मंडलम् ✧

